अन्वारुल कुरआन



मुअल्लिफ
खलीफए शैखुल इस्लाम
हाजी इब्राहीम भाई वडीयावाला

शाएकर्दा :
मोहसिने आजम मिशन

किताब : अन्वारुल कुरआन

टाइप व सेटींग : जनाब तौफीक अहमद अशरफी (बडौदा)

M : 9033168086, 7383761217

प्रुफ रीडींग व जेरे निगरां : खलीफए शैखुल इस्लाम

हाजी इब्राहीम भाई वडीयावाला (अहमदाबाद)

सदर मोहसिने आजम मिशन सेन्ट्रल मेनेजिंग कमिटी

ता'दाद : 10000

हदिया : 150

सिने इशाअत : एप्रिल–2019

–: नाशिर :–

मोहसिने आजम मिशन हेड ओफिस 2/B कीर्तिकुंज सोसायटी

शाहे आ'लम टोलनाका अहमदाबाद–380028

–: मिलने का पता :–

मक्तबए शैखुल इस्लाम, अलिफ किराना के सामने,

रसूलाबाद, शाहे आलम अहमदाबाद–380028

और मोहसिने आजम मिशन की तमाम ब्रान्चें

कोन्टेकट : +91-96242 21212

मोहद्दिसे आजम मिशन का तआरुफ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फज्ल से और प्यारे आका صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के करम से और गौसे पाक, ख्वाजा गरीब नवाज, हुजूर मख्दूमे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالى عَلَيْهِم اَجْمَعِيْن के सदके तुफैल 1980 में हुजूर शैखुल इस्लाम वल मुस्लिमीन ने हुजूर मोहद्दिसे आ'जमे हिन्द رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के नाम की बरकत हासिल करने के लिये मोहद्दिसे आ'जम मिशन को काइम किया, पिछले 39 साल से मोहद्दिसे आ'जम मिशन दीनो सुन्नियत की खिदमत करते हुए आर्थिक, सामाजिक, दीनी व दुन्यवी ता'लीम, कौमे मुस्लिम की दीनी व दुन्यवी बेहतरी के लिये हर मुम्किन कोशिश व खिदमात अन्जाम दे रहा है।

हुजूर शैखुल इस्लाम वल मुस्लिमीन के फैजान और हुजूर फाजिले बगदाद सय्यिद हसन अस्करी अशरफियुल जीलानी की सरपरस्ती में मोहद्दिसे आ'जम मिशन के जरीए होने वाली आज तक की कारगुजारियां।

मोहद्दिसे आ'जम मिशन ने तकरीबन 93 इज्तिमाई निकाह (समुह शादी) के प्रोग्राम किये जिस में...तकरीबन 2965 निकाह हुए।

मोहद्दिसे आजम मिशन और हुजूर फाजिले बगदाद की सरपरस्ती में 6 स्कूल चल रहे हैं जिस में तकरीबन 3800 बच्चे ता'लीम हासिल कर रहे हैं।

दीनी ता'लीम के लिये तकरीबन 60 मद्रसे चल रहे हैं जिस में 4500 बच्चे इल्मे दीन हासिल कर रहे हैं।

मिशन के इदारों में तकरीबन 8000 से ज्यादा बच्चे दीनी व दुन्यवी ता'लीम हासिल कर रहे हैं।

2018 में सभी मिशन की ब्रांचों के जरीए 10 मुहर्रम को तकरीबन 4000 मरीजों को 4000 फ्रुट पैकेट तक्सीम किये गए।

ईदे मीलाद पर 130 स्कूल और मद्रसों में मीठाई, चोकलेट,

किट वगैरा तक्सीम किये गए और बच्चों को अच्छे अख्लाक का दर्स देते हुए सीरते नबी पर स्कूलों में बयान हुए।

16 रजब उर्से मोहद्दिसे आजमे हिन्द पे तकरीबन 1000 जोडी कपडे जरूरत मन्दों को तक्सीम किये गएं।

माहे रमजान में 2500 राशन किट तक्सीम की गई और 184 इफ्तारी के प्रोग्राम और 100 इफ्तारी किट भी तक्सीम की गई।

एज्युकेशन के लिये स्टूडन्टस को 1 लाख नोटबुक फ्री में दी गई और 1.50 लाख नोटबुक कमदाम में दी गई और एज्यूकेशन किट तक्सीम की गई।

15 अगस्ट को तकरीबन 3300 पेड पौदें लगाए गएं।

इस के इलावा मिशन के जरीए कार गुजारियां भी की जा रही है।

शैक्षनिक विभाग में ट्युशन क्लास, जरूरत मन्दों को स्कूल की इम्दाद, एज्युकेशन किट इम्दाद, कैरियर गाइड और एज्युकेशन सेमिनार और जोब व स्कोलरशिप के लिये ओनलाइन एप्लिकेशन करना वगैरा खिदमात की जाती है।

मदनी हेल्थ सेन्टर दवाखाना, एम्बुलन्स सेवा मेडिकल केम्प वगैरा मेडिकल और स्वास्थ्य के मुतअल्लिक खिदमात अन्जाम दी जाती है।

चश्मा शिबिर, जरूरत मन्द लडकियों के निकाह के लिये सामान वगैरा दिया जाता है।

बेवाओ और जरूरत मन्दों को राशन और इलाज के लिये इम्दाद की जाती है और औरतों के रोजगार के लये सिलाई क्लास चलाया जाता है।

मिशन के जरीए मसाजिद और मद्रसे ता'मीर करना, मस्जिद या मद्रसे की मेन्टेनन्स में इम्दाद की जाती है मद्रसों में किताबें व जरूरी सामान भी मुहय्या कराया जाता है।

दर्से तफ्सीरे अशरफी, लेडीज तरबियत केम्प, औरतों के इजतिमाअ, जिक्र की महफिल, बुजुर्गाने दीन के उर्स के मौकअ पर बयान व तकरीर मुन्अकिद की जाती है।

तफ्सीरे अशरफी, शैखुल इस्लाम मदनी केलेन्डर, अल अशरफ मन्थली, दीनी किताबें और मुबारक रातों के पर्चे वगैरा शाएअ कर के मोमिनों के घर तक पहुंचाए जाते हैं।

मिशन के जरीए मुस्तक्बिल में जिला लेवल पर बेहतरीन क्वोलिटी एज्युकेशन के लिये इन्टरनेशनल स्कूल मेजर सेन्टर पर शुरूअ करने की कवी उम्मीद है।

मोहद्दिसे आजम मिशन का नया कारनामा

A.T.S या'नी अशरफी टिफिन सर्विस

मोहद्दिसे आजम मिशन संचालित अशरफी टिफिन सर्विस A.T.S को आज एक महीना पुरा हुवा اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ

इस महीने में A.T.S ने मोडासा में 972 टिफिन जरूरत मन्दों तक पहुंचाएं।

मोडासा के बा'द गुजरात में अन्करीब छोटा उदेपूर, सूरत, नागलपूर, डभोई में बहुत जल्द A.T.S काइम होने जा रही है।

❁ कर्नाटक बेल्लारी में येह सर्विस शुरूअ हो चुकी है।

❁ हुजूर फाजिले बगदाद के फरमान पर के मिशन हो और कोई गरीब भूका सो जाए...तो मिशन का मक्सद हासिल नहीं। ...मिशन की तमाम ब्रांचे इस पर जल्द से जल्द कोई तरकीब बनाए।

मिशन आगे क्या करने जा रहा है !

❁ मोहद्दिसे आजम चेरीटेबल ट्रस्ट के तहत बोरसद में मोहद्दिसे आजम इन्टरनेशनल स्कूल और शैखुल इस्लाम मल्टी स्पेश्यालीटी होस्पीटल के लिये जमीन खरीद कर ली गई हैं।

❁ आने वाले वक्त में إِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ मोहद्दिसे आजम एन्जीनियरींग कोलेज शुरूअ होने जा रही है ।

❁ अशरफी पंज सूरह के बा'द अन्करीब आपके हाथों में इतनी किताबें होगी। (1) **शाने नुजूले आयाते कुरआनी हिन्दी में** (2) तफ्सीरे अशरफी गुजराती पारह 13 तक छप चुका है إِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ जल्द 30 पारे प्रिन्टींग होंगे। (3) तफ्सीरे अशरफी हिन्दी के 5 पारे मुकम्मल हो चुके हैं और पारह 6-7 का काम जारी हैं। إِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ 30 पारे जल्द पूरे होंगे।

मोहद्दिसे आजम मिशन की जानिब से येह किताबें शाएअ हो चुकी हैं

- ❁ मा'रेफुल कुरआन अरबी मतन उर्दू तर्जमा
- ❁ मा'रेफुल कुरआन गुजराती लीपियांतर
- ❁ मा'रेफुल कुरआन गुजराती तर्जमा (काम चालू है)
- ❁ तफ्सीरे अशरफी अरबी मतन उर्दू तर्जमा (6 जिल्दों में)
- ❁ तफ्सीरे अशरफी गुजराती लीपियांतर 13 पारेह
- ❁ तफ्सीरे अशरफी हिन्दी लीपियांतर पांच पारेह
- ❁ अल अरबइन अल अशरफी (40 हदीसों की शर्ह) उर्दू
- ❁ शजरए कादिरिया चिश्तिया अशरफिया (उर्दू)
- ❁ शजरए कादिरिया चिश्तिया अशरफिया (हिन्दी)
- ❁ शजरए कादिरिया चिश्तिया अशरफिया (गुजराती)
- ❁ अल्लाह मेरी तौबा (हिन्दी)
- ❁ गुलदस्ता हजरते शैखुल इस्लाम का कलाम (उर्दू)
- ❁ बाराने रहमत शैखुल इस्लाम का कलाम (उर्दू)
- ❁ जन्नत की कुंजी दुरूद शरीफ की किताब (गुजराती)
- ❁ बागे इरम दुरूद शरीफ की किताब (गुजराती)

❀ तोहफए दुरूद व दुआ, दुरूद शरीफ की किताब (गुजराती)
❀ दीने कामिल (उर्दू)
❀ दीने कामिल (गुजराती)
❀ आसान काइदा (उर्दू, अरबी, हिन्दी, इंग्लिश)
❀ हमारा इस्लाम (हिन्दी, उर्दू, इंग्लिश)
❀ महब्बते रसूल (उर्दू)
❀ इल्मे गैब (उर्दू)
❀ खुत्बाते शैखुल इस्लाम पार्ट–1 तकरीर 1 से 10 (उर्दू)
❀ खुत्बाते शैखुल इस्लाम पार्ट–2 तकरीर 11 से 20 (उर्दू)
❀ खुत्बाते शैखुल इस्लाम पार्ट–3 तकरीर 21 से 30 (उर्दू)
❀ मुनाजरए किछौछा अज : हजरते मोहद्दिसे आजमे हिन्द (उर्दू)
❀ कहरे कह्हार अज : हजरते मोहद्दिसे आजमे हिन्द (उर्दू)
❀ हक्का के बिनाए लाइलाह अस्त हुसैन (उर्दू)
❀ नौके तीर (उर्दू)
❀ पोकेट साइज पंज सूरह (अरबी)
❀ किताब निकाह (गुजराती)
❀ नूरानी रातें

अभी तक में मिशन की जानिब से 5 साल में करीब 2 लाख से भी ज्यादा किताबे फ्री तक्सीम हुई है।

मिशन का मक्सद कौम की खिदमत

सदर मोहद्दिसे आजम मिशन

सेन्ट्रल मेनेजिंग कमिटी

हाजी इब्राहीम भाई वडीयावाला

अहमदाबाद

❀❀❀❀

फेहरिस्त	आयत नम्बर	सफहा नम्बर
पारह 1 : सूरतुल फातिहा		
अल्लाह की हम्द और उसी से मदद	1-7	26
पारह 1 : सूरतुल बकरह		
सिर्फ जबानी कलिमा पढ लेना ईमान के लिये काफी नहीं	8	26
क्या कुरआन में शक है ?	23	26
अल्लाह ने बनी इसराईल से क्या अहद लिया ?	83	27
पारह नम्बर 2 : सूरतुल बकरह		
रसूल इल्मो हिक्मत सिखाता है। और पाक करता है।	151	27
सब्र और नमाज से मदद चाहो। तुम्हारी आजमाइश होगी	152	27
अल्लाह तआला की बडी निशानी	163	27
बेशक ! शैतान इन्सान का दुश्मन है	168	28
अस्ल नेकी क्या है ?	177	28
दूसरों का माल ना हक न खाओ	188	29
राहे मौला में खर्च करो और कन्जूसी न करो	195	29
अल्लाह से दुन्या व आखिरत दोनो मांगो	199	29
शराब और जुए के बारे में हुक्म	219	29
काफिरा औरतों से शादी बियाह न करो	221	29
हैज के अय्याम में हम बिस्तरी न करो	222	30
सब नमाजों की निगहबानी करो	238	30
अल्लाह की राह में खर्च करो	245	30
पारह नम्बर 3 : सूरतुल बकरह		
आयतुल कुर्सी	285	31
राहे मौला में खर्च करने से माल बढता है	261	31
अल्लाह की राह में खराब माल न दो	267	32
सूद मत खाओ	275	33
कर्जदार को मोहलत दो	280	34

अर्जे नाशिर

कुरआन इब्ने आदम के लिये जिन्दगी जीने के लिये पूरा संविघान हैं। कुरआन जिन्दगी सहीह तरीके से जीने कि लिये रहनुमा या'नी मार्गदर्शन है। येह हमारे लिये "लो एन्ड ओर्डर" और "रुल्स एन्ड रेग्युलेशन" हैं। येह हिदायत का सर चश्मा हैं। लेकिन अफ्सोस है कि गैर तो गैर बल्कि खुद इस पर ईमान लाने वाले भी इस के मक्सद से कोसो दूर नजर आते है और येह इस लिये कि हम कुरआन पढते जरूर है लेकिन समझते नहीं है। कुरआन शरीफ को समझ कर पढना चाहिये और आहिस्ता आहिस्ता रुक रुक कर पढना चाहिये और इस के मा'नों में गौरो फिक्र करना चाहिये।

खुद रब तबारक व तआला भी हम को येही हुक्म देता है और कुरआने करीम में जगह जगह पर येह हिदायत फरमाता है कि इस में गौरो फिक्र करो, तफक्कुर करो, मनन और मंथन करो, जैसा कि अल्लाह तबारक व तआला फरमाता है :

सूरए ص आयत नम्बर 29 : येह एक बरकत वाली किताब हम ने तुम्हारी तरफ उतारी ताकि लोग इस की आयतों में सोचे और अक्लमन्द नसीहत माने और फरमाता है। सूरए मुहम्मद आयत नम्बर 24 : तो क्या कुरआन में सोचते नहीं ?

येह भी एक हकीकत है कि इस को सिर्फ पढ लेने में भी बहुत बहुत ज्यादा सवाब है। जैसा कि हदीस शरीफ में आया। जिस ने कुरआने करीम का एक हर्फ पढा तो उस को एक नेकी मिलेगी जो दूसरे आ'माल की दस नेकियों के बराबर होगी (तिरमिजी)

इमाम अहमद व तिरमिजी व इब्ने माजा व दारिमी ने मौलाए काएनात मौला अली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत की है कि जिस ने कुरआन पढा और उस को याद किया और उस के हलाल को हलाल और

उस के हराम को हराम समझा तो उस के घर वालो में से दस इन्सानों के बारे में अल्लाह तआला उस की शफाअत कुबूल फरमाएगा। जिस पर जहन्नम वाजिब हो चुकी होगी, कुरआन इस लिये पढना चाहिये कि वोह दुन्या के पैदा करने वाले रब का कलाम है।

इस को बस जबानी रट लेना भी सवाब से खाली नहीं है लेकिन इस को रट लेना हिदायत के लिये काफी नहीं है। क्यूं कि इस तरह बिगैर सोचे बिगैर समझे पढ लेने वालों में से तो बहुत ज्यादा लोग गुमराह हो चुके, येह जितने बद अकीदा गुमराह लोग हैं वोह भी तो कुरआन पढते हैं।

ऐ लोगो ! कुरआन जब पढो तो समझ कर पढो, इस के मा'ना में गौरो फिक्र करो और येही समझाने के लिये येह किताब तय्यार की गई हैं कि बन्दा येह सोचे के उस का रब उस से क्या चाहता है ? कैसी जिन्दगी चाहता है ? मौत कैसी हो ? अकीदे कैसे होने चाहिये ? और इसी मतलब के लिये कुरआने करीम से कुछ आयते चुन ली गई के अल्लाह का पैगाम बन्दों तक पहुंचाया जाए, क्यूं कि अल्लाह तआला का मक्सद भी कुरआन नाजिल करने से येही है।

इस किताब में अस्ल अरबी आयात इस लिये न डाली गई कि अगर कोई अपने नोन मुस्लिम दोस्तों को भी देना चाहे तो उसे दे सके, ताकि जब गैर मुस्लिम कुरआन के तर्जमे पर नजर डालेगा तो कम से कम इतना तो समझ लेगा कि रब तबारक व तआला कितना बडा रहीम है ? उस की करीमी की क्या शान है ? और हमारे नबी कितने आ'ला अख्लाक के मालिक है वैसे भी जब नुजूले कुरआन शुरूअ हुवा तो मुसलमान कहां थे ? येही कुरआन है कि उन में से बा'ज के दिलों पर असर कर गया और लोग ईमान ले आए।

या कम से कम मोमिन तो अपनी जिन्दगी शरीअते मुहम्मदी के ढांचे में ढाल कर सहीह तरीके से गुजारने का अन्दाज सिख लेगा।

और जबान हिन्दी इस लिये रखी गई कि हमारी कुछ किताबें गुजराती में इस से पहले छप चुकी है। मगर इस का फाइदा सिर्फ एक सूबे तक ही महदूद रह गया और इस में खास कर कि इतने मजमून चुने गए (1) एक तो इन्सान खुद अपनी और दीगर मख़्लूकात की पैदाइश में गौरो फिक्र करें और इस से शाने हकीकी की तौहीद पर दलील पकडें (2) अच्छे और बुरे आ'माल को पहचाने की कौन सा अमल जन्नत की तरफ ले जाने वाला है और कौन सा अमल जहन्नम की तरफ। तो इस के नतीजे में वोह नेकियां अपनाए और गुनाह छोडें (3) अल्लाह की निशानियों को पहचाने। उस में गौरो फिक्र करे कि तफक्कुर में बडा सवाब है **एक पल का तफक्कुर रात भर की और एक कौल के मुताबिक साल भर की इबादत से अफ्जल है।** जमीन का जर्रा जर्रा, बारीश का कतरा कतरा, पेड के पत्ते, तारे सितारे येह सब अल्लाह तआला की मा'रिफत की किताब है। येह सब अल्लाह की निशानी है और (4) जान ले कि कियामत जरूर आनी है, अल्लाह की तरफ लौट कर जाना है, हिसाब होना है, सजा और जजा हक है, तो ऐसा अमल अन्जाम दे कि अल्लाह व रसूल को कियामत के दिन मुंह दिखा सके।

अल्लाह तबारक व तआला अपने हबीब रहमतुल्लिल आलमीन, के सदके तुफैल हमारी इस छोटी सी कोशिश को शरफे कुबूलियत अता फरमाए। اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

फकत

हाजी इब्राहीम भाई वडीयावाला

अहमदाबाद

सदर मोहद्दिसे आजम मिशन

सेन्ट्रल मेनेजिंग कमिटी

पारह नम्बर 1 : सूरए फातिहा

आयत नम्बर 1 से 7 : अल्लाह की हम्द और उसी से मदद।

तर्जमा : तमाम ता'रीफ, सारी खूबियां, हम्द सिर्फ अल्लाह ही के लिये जो सारे जहानों का मालिक है, बहुत बडा महेरबान, रहम वाला वोही रोजे जजा (कियामत के दिन) का मालिक है। हम तुझ ही को पूजे और तेरी ही मदद चाहे, हम को सीधा रास्ता चला, रास्ता उन लोगों का कि जिन पर तूने इन्आम किया और न उन लोगों का रास्ता कि जिन पर तूने गजब किया है।

खुलासा : इस में हमें औलियाए कामिलीन के रास्तों पर चलने की हिदायत की गई है और बद अकीदा, गुमराह बे दीन कुफ्फारो मुश्रिक, वगैरा से दूर रहने की हिदायत दी गई इस से तक्लीद (To Follow) का सहीह होना साबित हुवा।

पारह नम्बर 1 : सूरए अल बकरह

आयत नम्बर 8 : सिर्फ जबानी कलिमा पढ लेना,
ईमान के लिये काफी नहीं।

तर्जमा : लोगों में कुछ ऐसे भी हैं, जो कहते हैं, हम ईमान ले आए अल्लाह और पीछले दीन पर, हालांकि वोह ईमान वाले नहीं।

खुलासा : ईमान लाना, मानना दिल का काम है। सिर्फ जबानी इकरार काफी नहीं है, जबान से इकरार और दिल में बुग्जो कीना येह मुनाफकत कि अलामत हैं।

आयत नम्बर 23 : क्या कुरआन में शक है ?

तर्जमा : अगर तुम्हें इस (कुरआन) में कुछ शक हो जो उतारा हम ने अपने खास बन्दे (मुहम्मद रसूलुल्लाह) पर तो उस जैसी एक सूरत तो ला कर दिखाओ ! और अल्लाह के सिवा जितने भी तुम्हारे मददगार हैं। उस को मदद के लिये बुलालो, अगर तुम सच्चे हों।

और अगर तुम येह न कर सको। और हम फरमा देते है कि हरगिज न कर सकोगे, तो उस आग से डरो जिस का इन्धन आदमी और पथ्थर (मुर्तियां) हैं। जो तय्यार कर रखी हैं काफिरों के लिये।

आयत नम्बर 83 : अल्लाह ने बनी इसराईल से क्या अहद लिया ?

तर्जमा : जब हम ने बनी इसराईल से अहद लिया कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप और रिश्तेदारों और मोहताजों के साथ भलाई करो और लोगों से अच्छी बात कहो और नमाज अदा करते रहो और जकात दो।

पारह नम्बर 2 : सूरए अल बकरह

आयत नम्बर 151 : रसूल इल्मो हिक्मत सिखाता और पाक करता है।

तर्जमा : हम ने तुम में तुम्ही से एक रसूल भेजा कि वोह तुम पर हमारी आयतें पढता है और तुम्हें पाक करता हैं और तुम्हें किताब और पुख्ता इल्म सिखाता है और तुम को वोह इल्म सिखाता है। जो तुम न जानते थे।

आयत नम्बर 152, 157 : सब्र और नमाज से मदद चाहो।

तर्जमा : तुम मेरा जिक्र करो, मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा और मेरा शुक्र करो और मेरी नाशुक्री न करो, ऐ वोह लोग जो ईमान ला चुके! सब्र और नमाज से मदद तलब करो, बेशक! अल्लाह सब्र करने वालों के साथ हैं और जो अल्लाह की राह में शहीद हुए उन को मुर्दा न कहो, बल्कि वोह जिन्दा हैं लेकिन तुम नहीं जानते।

और जरूर हम तुम्हें आजमाएंगे कुछ डर और भूक से और कुछ माल और जान और फलों के नुक्सान से और खुश खबरी सुना दो सब्र करने वालों को, जब उन पर कोई मुसीबत आए तो कहे "**इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन**" येह वोह लोग हैं जिन पर उन के परवर दिगार की तरफ से दुरूद हैं और रहमत हैं और वोही लोग राह पर हैं।

आयत नम्बर 163, 164, 165 : अल्लाह तआला की बडी निशानी।

तर्जमा : और तुम्हारा मा'बूद बस एक मा'बूद है, उस के सिवा दूसरा मा'बूद नहीं, बडी रहमत वाला और बडा महेरबान, बेशक! आस्मानो जमीन की पैदाइश और रात और दिन का बदलते रहना और कश्ती वगैरा का दरिया में लोगों के फाइदे के लिये चलना और वोह जो अल्लाह की तरफ से बारिश की शक्ल में पानी उतार कर (वीरान, बन्जर) मुर्दा जमीन में हयात डाल देना और जमीन पर हर तरह के जानवर फैलाए। और हवाओं की मुख्तलिफ गर्दिश और बादलों का (इतने पानी के साथ) आस्मान और जमीन के बीच मुअल्लक रहना, इस में अक्लमन्दों के लिये जरूर बडी निशानी हैं और कुछ लोग हैं कि अल्लाह के सिवा (फर्जी बनावटी) मा'बूद बना लेते हैं और उन (मुर्तियों) को अल्लाह की तरह महबूब रखते हैं और ईमान वाले वोह हैं जिन को अल्लाह के बराबर किसी से महब्बत नहीं।

खुलासा : इस में अल्लाह की तरफ से गौरो फिक्र की दा'वत है कि इन्सान अल्लाह की निशानियों में सोचें और अल्लाह की कुदरत की दलीलों से अल्लाह की वहदानियत पर यकीन करें और अल्लाह ही से महब्बत करें और गैर को छोड दें।

आयत नम्बर 168 : बेशक! शैतान इन्सान का दुश्मन है।

तर्जमा : ऐ लोगो! खाओ उसे जो कुछ जमीन में हलाल व पाकीजा और शैतान के नक्शे कदम पर न चलो, बेशक! वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

आयत नम्बर 177 : अस्ल नेकी क्या हैं?

तर्जमा : अस्ल नेकी येह नहीं है कि अपना मुंह पूरब या पच्छीम की तरफ कर लो, बल्कि अस्ल नेकी येह हैं कि अल्लाह और कियामत और फिरिश्तें और किताब और उस के रसूलों पर ईमान लाया जाए और अल्लाह की महब्बत में अपना पसन्दीदा माल रिश्तेदारो और

यतीमों और मोहताजों और मुसाफिरों और साइलों को और कैदी गुलामों को छुडाने में खर्च किया जाए और काइम रखो नमाज को और देते रहो जकात और जब वा'दे करों तो वफा करों और तंगी और मुसीबत और जिहाद के वक्त सब्र करो, बस येही वोह लोग हैं जिन्हों ने अपनी बात सच्ची कर दिखाई और येही लोग परहेजगार हैं।

आयत नम्बर 188 : दूसरों का माल नाहक न खाओ।

तर्जमा : आपस में एक दूसरे का माल नाहक न खाओ और न हाकिमों के पास (झूटे) मुकद्दमे इस निय्यत से पहुंचाओ कि लोगों का कुछ माल नाहक खाजाओ।

आयत नम्बर 195 : राहे मौला में खर्च करो और कन्जूसी न करो।

तर्जमा : और राहे खुदा में (खुश दिली से) खर्च करो और (कन्जूसी कर के) अपने हाथों हलाकत में न पडो और एहसान करो कि बेशक! नेक लोग अल्लाह के महबूब हैं।

आयत नम्बर 199, 200 : अल्लाह से दुन्या व आखिरत दोनों मांगो।

तर्जमा : और कोई है जो कहता हैं ऐ हमारे रब! हमें दुन्या ही में दे दे और आखिरत में उन के लिये कुछ हिस्सा नहीं हैं और कोई यूं कहता है, ऐ हमारे रब! हमें दुन्या में भी भलाई अता कर और हमें आखिरत में भी भलाई अता कर और हमें जहन्नम की आग से बचा ले।

आयत नम्बर 219 : शराब और जूए के बारे में हुक्म

तर्जमा : ऐ महबूब! तुम से शराब और जूए के बारे में जानना चाहते हैं, तो तुम उन से फरमा दो कि इन दोनों में बहुत बडा गुनाह है और लोगों के कुछ दुन्यवी फाइदे भी है लेकिन उन का गुनाह उस के नफ्अ से बडा है।

आयत नम्बर 221 : काफिरा औरतों से शादी बियाह न करो।

तर्जमा : और मुश्रिक औरतों से निकाह न करो जब तक वोह ईमान ला कर इस्लाम में दाखिल न हो जाए और बेशक! मुसलमान

कनीज (दासी लोंडी) काफिर आजाद औरतों से अच्छी हैं, चाहे तुम्हें वोह पसन्द आए और अपनी लडकियों को काफिर मुश्रिक मर्दों के निकाह में न दो जब तक वोह ईमान न ले आए और बेशक! मुसलमान गुलाम काफिरों से अच्छा है, वोह तुम्हें दोजख की तरफ बुलाते है और अल्लाह अपने हुक्म से तुम्हें जन्नत की तरफ बुलाता है और अपनी आयतें लोगों के लिये बयान करता हैं कि वोह नसीहत माने।

खुलासा : आज एक ट्रेन्ड बन गया हैं कि मुसलमान लडके काफिरा औरतों से और मुसलमान लडकियां काफिर मर्दों से शादिया रचाती है और अपने आप को मोर्डन समझते है, लेकिन येह अमल जहन्नम की तरफ ले जाने वाला है, लिहाजा इस से बचना चाहिये।

आयत नम्बर 222 : हैज के अय्याम में हम बिस्तरी न करो।

तर्जमा : ऐ महबूब! तुम से हैज (माहवारी, पीरियड) के बारे में पूछते हैं। तो तुम उन से फरमाओ कि वोह नापाकी हैं, तो उन दिनों में औरतों से दूरी बनाए रखो और उन से सोहबत न करो, जब तक वोह पाक न हो जाए और जब वोह पाक हो जाए तो उन से कुर्बत करो जहां से अल्लाह ने तुम को हुक्म दिया है, बेशक! अल्लाह दोस्त रखता है बहुत तौबा करने वालों को और दोस्त रखता है पाक साफ रहने वालों को।

आयत नम्बर 238 : सब नमाजों की निगहबानी करो।

तर्जमा : सब नमाजों की निगहबानी करो और खास कर के बीच की नमाज की और अल्लाह के हुजूर में अदब से खडे हो।

आयत नम्बर 245 : अल्लाह की राह में खर्च करो

तर्जमा : अल्लाह फरमाता है कि "है कोई जो अल्लाह को कर्जे हस्ना दे" तो अल्लाह उसे बहुत ज्यादा बढा दे और अल्लाह ही तंगी करता है और वोही फराखी करता है और ऐ लोगो! तुम सब को उसी की तरफ पटलना है।

पारह नम्बर 3 : सूरए बकरह

आयत नम्बर 285 : आयतुल कुर्सी

तर्जमा : अल्लाह, नहीं कोई मा'बूद उस के सिवा, खुद जिन्दा और सब को काइम रखने वाला, न आए उस को ऊंघ न नींद, जो कुछ आस्मान में हैं और जो कुछ जमीन में है, सब उसी का हैं, कौन हैं ऐसा जो उस के पास उस के हुक्म के बिना सिफारिश करे ? वोह जानता है जो कुछ उन के आगे हैं और जो कुछ उन के पीछे हैं, कोई नहीं पाता उस के इल्म से, सिवाए इतना जितना वोह चाहे, उस की कुर्सी ने आस्मान व जमीन को घेरे में ले रखा है और उस की निगहबानी उस पर कोई मुश्किल काम नहीं है, वोही बुलन्दी वाला बडाई वाला है।

आयत नम्बर 261 से 265 : राहे मौला में खर्च करने से माल बढता है।

तर्जमा : जो लोग अपना माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं उन की मिसाल उस दाने जैसी हैं, जिस ने उगाई सात बाली और हर एक बाली में सो दाने हो और अल्लाह जिस के लिये चाहे इस से भी ज्यादा बढाए बेशक ! अल्लाह वुस्अत वाला, इल्म वाला है।

वोह लोग जो अपना माल राहे मौला में बखुशी खर्च करते हैं और देने के बा'द न एहसान जताए और न तक्लीफ दे, उन का अज्र उन के रब के पास है और न उन को कोई रन्ज न गम।

अच्छी बात बोलना और लोगों को मुआफ कर देना येह उस खैरात से बेहतर है, जिस के बा'द सताना हो और अल्लाह बे परवाह हिल्म वाला है।

ऐ ईमान वालो ! एहसान जता कर, या लोगों को ईजा दे कर, [सता कर] अपने सदके और सवाब बातिल न कर दो, उन लोगों की तरह जो अपना माल रियाकारी से लोगों को दिखाने के लिये खर्च करें और अल्लाह पर और कियामत के दिन पर ईमान न लाए, तो उन की मिसाल ऐसी है जैसे एक पथ्थर के उस पर मिट्टी हो अब जब जोर से

पानी गिरा तो उसे बिल्कुल पथ्थर कर छोडा, वोह अपनी कमाई से किसी भी चीज पर काबू न पाएंगे।

मिसाल उन लोगों की, जो अपना माल अल्लाह तआला की रिजा चाहने के लिये खर्च करते है और अपना दिल जमाने को खर्च करते है, उस बगीचे जैसी है, जो बुलन्दी पर हो और अगर उस पर जोर का पानी गिरे तो डबल मेवे लाए और अगर जोर का पानी न गिरे तो औज (शबनम) काफी है और अल्लाह तुम्हारा काम देख रहा है।

आयत नम्बर 267 से 275 : अल्लाह की राह में खराब माल न दो

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अपनी पाक कमाई में से कुछ अल्लाह की राह में दो, उस में से जो हम ने जमीन में उगाया और खास नाकिस (बिगडी हुई खराब चीजों) का इरादा न करो कि अगर उस में से तुम को मिले तो तुम भी न लो, जब तक चश्म पोशी न करो और जान लो कि अल्लाह बे परवाह हिल्म वाला है।

शैतान तुम्हें मोहताजी से डराता है और बेहयाई का हुक्म देता है। और अल्लाह तुम से बख्शिश और अपने फज्ल का वा'दा देता है और अल्लाह वुस्अत वाला इल्म वाला है। अल्लाह जिसे चाहे उसे हिक्मत देता है और जिसे हिक्मत दी गई उसे खैरे कसीर दिया गया और नसीहत तो सिर्फ अक्ल वाले मानते हैं।

तुम जो भी खर्च करो या मन्नत मानो, अल्लाह को उस की खबर है और (याद रखो कि) जालिमों का कोई मददगार नहीं अगर तुम खैरात ए'लानिया दो तो बहुत अच्छी बात है और अगर छुपा कर साइलों को दो तो वोह तुम्हारे लिये ज्यादा बेहतर हैं और उस से तुम्हारे कुछ गुनाह घटेंगे और अल्लाह को तुम्हारे कामों की खबर है।

तुम्हारे जिम्मे लोगों की हिदायत नहीं है, हां अल्लाह हिदायत देता है जिसे चाहे। अगर तुम अच्छी चीज देते हो, तो तुम्हारा ही भला है

और तुम्हें अल्लाह की रिजा चाहने के सिवा खर्च करना मुनासिब नहीं हैं और जो माल तुम राहे मौला में दोगे तो तुम्हें पूरा पूरा मिलेगा और तुम नुक्सान न दिये जाओगे।

येह सदके उन फकीरों के लिये है, जो अल्लाह की राह में (जिहाद के लिये) रोके गए, या उन जैसे जो जमीन में कहीं आ-जा नहीं सकते, तो सवाल से बचने के सबब लोग उन्हें मालदार समझे, वोह लोगों से गिड गिडा कर सवाल नहीं करते, तुम उन को उन की सूरत से पहचान लोगे और तुम जो भी खर्च खैरात करो अल्लाह उसे जानता है।

जो लोग अपना माल खर्च खैरात करे दिन में या रात में, ए'लानिया और छुपा कर, उन के लिये उन के रब के पास अज्र हैं और न उन को कोई खौफ, न कोई गम।

आयत नम्बर 275 से 278 : सूद मत खाओ

तर्जमा : जो लोग सूद खाते है (सूदी कारोबार करते है) वोह कियामत के दिन खडे न हो सकेंगे सिवाए ऐसे जैसे कोई आसेब जदा हो।

और ऐसा इस लिये कि वोह कहते हैं कि सूद भी बिज्नेस के जैसा ही हैं, हालांकि अल्लाह ने कारोबार हलाल किया और सूद को हराम फरमा दिया।

तो अगर जिस के पास उस के रब की तरफ से येह पैगामे नसीहत आ गया और वोह अगर अब से सूद लेना छोड दे, तो जो वोह पहले ले चुका था वोह मुआफ है अल्लाह की तरफ से।

और जो अब भी वैसा ही काम जारी रखे तो वोह जहन्नम वाला है, उस में वोह मुद्दतों रहेगा।

अल्लाह तआला सूद को मिटाता है और सदकात व खैरात को बढाता है और अल्लाह किसी नाशुक्रे गुनहगार को पसन्द नहीं करता।

बेशक ! जो लोग ईमान ले आए और अच्छे काम किये और नमाज काइम की और जकात दी उन के लिये उन के रब के पास अज्र है और न उन को कोई खौफ न कोई गम ।

ऐ वोह लोग जो ईमान ला चुके ! अल्लाह से डरते रहो अगर तुम मुसलमान हो तो जो सूद बाकी रह गया उसे छोड दो और अगर तुम ने ऐसा न किया, तो अब अल्लाह और उस के रसूल के साथ लडाई के लिये तय्यार हो जाओ और अगर तुम तौबा करो तो अपनी अस्ल रकम ले लो, न तुम किसी को नुक्सान पहुंचाओ और न तुम्हारा नुक्सान हो ।

आयत नम्बर 280 : कर्जदार को मोहलत दो ।

तर्जमा : अगर कर्जदार तंगदस्त हो तो उसे आसानी तक मोहलत दो और अगर तुम जानो तो बिल्कुल छोड देना तुम्हारे लिये ज्यादा बेहतर है और उस दिन से डरो जिस में अल्लाह की तरफ लौटाए जाओगे और हर एक को उस की कमाई पूरे पूरी दी जाएगी और उन पर जुल्म न होगा ।

आयत नम्बर 284 : जो कुछ आस्मानो जमीन में है सब कुछ खुदा का हैं ।

तर्जमा : अल्लाह ही का है, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ जमीनों में है और अगर तुम जाहिर करो जो तुम्हारे दिल ने छुपा लिया या छुपाओ, अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा, तो वोह जिसे चाहे बख्शेगा और जिसे चाहे सजा देगा ।

आयत नम्बर 285, 286 : आमनर्रसूलु और तरीकए दुआ ।

तर्जमा : रसूल ईमान लाया उस पर जो कुछ उस के रब की तरफ से उस पर उतारा गया और ईमान वालों ने हर एक अल्लाह पर और उस के फिरिश्ते और उस की किताब और उस के सारे रसूलों पर ईमान ले आए, येह कहते हुए कि हम किसी रसूल पर ईमान लाने में फर्क नहीं करते और अर्ज की, ऐ हमारे परवर दिगार ! हम ने सुना और हम ने माना हमारी बख्शिश हो, या रब ! हमें तेरी ही तरफ फिरना है ।

अल्लाह किसी जान पर उस की ताकत से ज्यादा बोझ नहीं डालता, उसी का फाइदा है जिस ने नेकी कमाई और उसी पर वबाल है, जिस ने गुनाह कमाया।

परवर दिगारा ! हमारी पकड मत कर अगर हम भुल गए या चुक गए, परवर दिगारा ! हम पर बोझ न रख जिस तरह तूने हम से अगलों पर रखा था, परवर दिगारा ! हम पर वोह बोझ न रख जिस को उठा ने की हम में ताकत नहीं हैं और हम को मुआफ कर और हम पर रहम कर तू हमारा मौला हैं, तू कौमे कुफ्फार पर हमारी मदद कर।

पारह नम्बर 3 : सूरए आले इमरान

आयत नम्बर 8-9 : ऐ हमारे रब ! हमारे दिल टेढे न कर।

तर्जमा : ऐ हमारे रब ! हमारे दिल टेढे मत कर जब कि तू हमें हिदायत दे चुका और हमें अपने पास से रहमत अता कर के बेशक ! तू ही बडा देने वाला है, ऐ हमारे रब ! बेशक ! तू सब लोगों को कियामत के दिन जम्अ करने वाला है इस में कोई शक नहीं, बेशक ! अल्लाह का वा'दा नहीं बदलता।

आयत नम्बर 14 : दुन्या धोका है।

तर्जमा : लोगों के लिये दुन्या में उन की ख्वाहिशों की महब्बत आरास्ता की गई, औरतें और बेटे और घोडे और मवेशी और खेती बाडी (बाग बगीचे) और येह सब इस दुन्या की पुंजी है और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है।

आयत नम्बर 16 से 18 : मोमिन कौन ?

तर्जमा : वोह जो कहते हैं, ऐ हमारे रब ! हम ईमान ले आए तू हमारे गुनाह मुआफ कर दे और हमें अजाबे दोजख से बचा ले। येही है सब्र वाले और सच्चे और अदब वाले और राहे खुदा में खर्च करने वाले और बख्शिश मांगने वाले पिछली रात में।

अल्लाह गवाह है कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं है और फिरिश्तों ने और आलिमों ने इन्साफ पर काइम रहते हुए गवाही दी कि उस के सिवा किसी की इबादत नहीं, वोही इज्जत वाला हिक्मत वाला है।

आयत नम्बर 26–27 : इज्जत व जिल्लत सिर्फ अल्लाह के हाथ है।

तर्जमा : यूं अर्ज कर ऐ अल्लाह ! मुल्क के मालिक ! तू जिसे चाहे सल्तनत दे और जिस से चाहे सल्तनत छीन ले और तू जिसे चाहे इज्जत दे और जिसे चाहे जिल्लत दे, सारी भलाई तेरे ही हाथ है, बेशक ! तू सब कुछ कर सकता है।

तू दिन का हिस्सा रात में डाले और रात का हिस्सा दिन में डाले और मुर्दा से जिन्दा निकाले और जिन्दा से मुर्दा निकाले और जिसे चाहे अन–गिनत, बे हिसाब अता फरमाए।

आयत नम्बर 28 : कोई मुसलमान काफिरों को अपना दोस्त न बनाए।

तर्जमा : मुसलमान, मुसलमान को छोड कर, काफिरों को अपना दोस्त न बनाए और जो ऐसा करे वोह अल्लाह के इलाके से निकल गया, सिवाए इस के कि तुम को उन से कोई खौफ हो और अल्लाह तुम को (काफिरों से दोस्ती रखने पर) अपने गजब से डराता है। और तुम्हें अल्लाह ही की तरफ फिरना हैं।

खुलासा : काफिरों से दिली दोस्ती, या मेल जोल महब्बत रखना मनाई हैं, हां उन से बात चीत, कारोबार मनाई नहीं है, उन को नौकर बनाया जा सकता है, उन के वहां नौकरी कर सकते है, उन के कुफ्र के सबब दिल में उन से दूरी जरूरी है और कोई काफिरों से दिली दोस्ती रखेगा, तो वोह अल्लाह से दूर हो गया।

आयत नम्बर 31 : हुजूर का हुक्म मानो, अल्लाह तुम्हें अपना दोस्त बना लेगा।

तर्जमा : ऐ महबूब ! ए'लान कर दो कि ऐ लोगो ! अगर तुम अल्लाह को महबूब रखते हो, तो मेरे पीछे चलो, अल्लाह तुम्हें महबूब बना लेगा और तुम्हारे सारे गुनाह बख्श देगा और अल्लाह बख्शने वाला महेरबान है।

खुलासा : सारी भलाई और बेहतरी इसी में हैं कि रसूलुल्लाह का हुक्म माने, उन की पैरवी करे, हुजूर की इताअत अल्लाह की इताअत है और हुजूर की नाफरमानी अल्लाह की नाफरमानी है हुजूर की गुस्ताखी अल्लाह की नाराजी का सबब है, पस जो इन्सान दुन्या व आखिरत की भलाई चाहे, वोह हुजूर नबिये रहमत को फोलो [*follow*] करे।

पारह नम्बर 4 : सूरए आले इमरान

आयत नम्बर 92 : राहे मौला में अच्छी चीजें खर्च करो

तर्जमा : तुम उस वक्त तक भलाई तक न पहुंच पाओगे जब तक राहे खुदा में अपनी पसन्दीदा चीज खर्च न करोगे और जो तुम खर्च खैरात करो अल्लाह उसे जानता है।

आयत नम्बर 102-103 : अल्लाह से डरो और आपस में न लडो।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो जैसा कि उस से डरने का हक है और हरगिज न मरना सिवा इस के कि तुम मुसलमान हो और अल्लाह की रस्सी मज्बूत पकड लो और आपस में इख्तिलाफ न करो।

खुलासा : आपसी और अन्दरूनी मतभेद से वकार जाता रहता है, दुश्मन कौम के दिल से तुम्हारा खौफ निकल जाता है इस लिये सब मिल कर रहना चाहिये और इत्तिफाक व इत्तिहाद बनाए रखना चाहिये, याद रहे जमाअत पर अल्लाह का हाथ है, अल्लाह समझ अता फरमाए।

आयत नम्बर 104 : नेकी की दा'वत दो और बुराई से मन्अ करो।

तर्जमा : तुम में एक गिरोह ऐसा होना चाहिये कि भलाई की तरफ बुलाए और अच्छी बात का हुक्म दे और गुनाह के कामों से रोके और येही लोग मुराद को पहुंच कर कामयाब होंगे।

आयत नम्बर 130 : बियाज (सूद) मत खाओ।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! दूना दून (चक्रवर्ती) बियाज मत खाओ और अल्लाह से डरो, इस उम्मीद पर के तुम्हें फलाह मिले और उस आग से बचो, जो काफिरों के लिये तय्यार की गई है।

खुलासा : सूद दूना दून मत खाओ, इस का येह मतलब नहीं हो सकता कि ज्यादा सूद न खाओ थोडा खाओ, सूद बिल्कुल हराम है। और गुनाहे कबीरा है। सूदी कारोबार करना हराम है। सूद को हराम समझ कर लेने वाला गुनाहे कबीरा करता है और सख्त बडा गुनाह करता है और जो सूद को हराम न जाने वोह काफिर है, हां अगर सूद खोर तौबा करे तो अल्लाह मुआफ करने वाला महेरबान है।

आयत नम्बर 133 : अपने रब की बख्शिश और जन्नत की तरफ दौडो।

तर्जमा : और दौडो और जल्दी चलो अपने रब की बख्शिश और ऐसी जन्नत की तरफ जिस की चौडाई में तमाम आस्मान व जमीन समा जाए। जो डरने वालों के लिये तय्यार रखी गई है।

आयत नम्बर 134-135 : कामिल मोमिन कैसे होते है ?

तर्जमा : वोह जो अल्लाह की राह में खुशी और रन्ज दोनों हालत में खर्च करते रहते है और जब गुस्सा आए तो मुआफ कर देते है और लोगों से दर गुजर करते है ऐसे नेक लोग अल्लाह के महबूब है।

और जब कोई बेहयाई या गुनाह कर बैठे तो तुरंत अल्लाह को याद कर के अपने गुनाहों की मुआफी चाहे और गुनाह कौन बख्शे अल्लाह के सिवा ?

और जो अपनी गलती पर जान बूझ कर अड न जाए तो ऐसों का बदला उन के रब की तरफ से बख्शिश है और ऐसी जन्नतें जिन के नीचे नहरे बह रही हैं, येह हमेशा उस में रहेंगे नेक अमल करने वालों का कितना अच्छा अज्र है।

आयत नम्बर 147–148 : गाजियों की दुआ।

तर्जमा : और वोह इस के सिवा कुछ न कहते थे, कि ऐ हमारे रब ! हमारे गुनाह बख्श दे और जो जियादतियां हम से हमारे काम में हुई, वोह मुआफ फरमा दे और हम को साबित कदम रख और हमें इन

काफिर कौमों के मुकाबले में मदद कर, तो अल्लाह ने उन को दुन्या का इन्आम दिया और आखिरत के सवाब की खूबी अता फरमाई और नेकियां करने वाले अल्लाह के महबूब हैं।

आयत नम्बर 160 : अल्लाह पर तवक्कुल करो।

तर्जमा : अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो कोई तुम पर गालिब नहीं हो सकता और अगर वोह तुम्हें छोड दे तो ऐसा कौन है, जो तुम्हारी मदद करे ? और मुसलमानों को तो अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये।

खुलासा : इन्सान के हक में बेहतर येही हैं कि जब कोई किसी काम का इरादा कर ले तो सिर्फ अल्लाह ही पर भरोसा करे और अपनी ताकत, मेहनत, समझ, अक्ल, जवानी या दोस्ती, या कोई भी दुन्यवी अस्बाब की तरफ न झुके, याद रहे येह सब मजाज हैं।

अगर अल्लाह मदद करना चाहे तो सब आसान है मगर अल्लाह मदद न करे, तो पूरी दुन्या मिल कर भी जर्रा बराबर फाइदा नहीं पहुंचा सकती और वैसे ही अगर तमाम दुन्या दुश्मन बन जाए तो भी तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड सकती, फाइले हकीकी और मुअस्सीरे हकीकी बस एक जात है वहदहू लाशरीक अल्लाह रब्बुल आलमीन।

मोमिन हमेशा अपने रब से ही उम्मीद रखता है और सिर्फ उसी से डरता है।

आयत नम्बर 161 : रसूल का तशरीफ लाना उम्मत पर अल्लाह का बडा एहसान है।

तर्जमा : बेशक ! मुसलमानों पर अल्लाह का बडा एहसान हुवा कि उन पर उन्हीं में से एक अजीम रसूल (मुहम्मद रसूलुल्लाह) को भेजा, जो उन पर उस की आयतें पढता हैं और उन को पाक करता है और उन्हें किताब (कुरआन) सिखाता है और हिक्मत ता'लीम फरमाता है और बेशक! वोह इस (रसूल के आने) से पहले जरूर गुमराही में थे।

आयत नम्बर 169 से 171 : शहीद जिन्दा है।

तर्जमा : जो अल्लाह की राह में मारे जाए उसे मुर्दा न समझो बल्कि वोह अपने रब के पास जिन्दा है, रोजी पाते है और खुश खुश है उस पर जो अल्लाह ने अपने फज्ल से उन्हें दिया और वोह खुशी मना रहे है अपने पिछलों की। जो अभी तक उन्हें नहीं मिले कि न उन पर कोई डर हैं न कोई गम।

वोह लोग अल्लाह की ने'मत और उस के फज्ल की खुशियां मना रहे हैं और बात तो बस येहीं हैं कि अल्लाह मुसलमानों के अज्र को जाए नहीं करता।

आयत नम्बर 190 से 194 : अल्लाह की निशानियों में गौरो फिक्र करो

तर्जमा : बेशक! रात और दिन की पैदाइश और रात और दिन की अदला बदली में अक्ल वालों के लिये निशानियां है।

वोह लोग जो खडे और बैठे और करवटों पर लैटे अल्लाह का जिक्र (उस को याद) करते रहते हैं।

और आस्मानो जमीन की पैदाइश में गौरो फिक्र करते रहते है येह कहते हुए कि ऐ हमारे रब ! तूने इसे बेकार नहीं बनाया पाक है तेरी जात, तू हमें अजाबे दोजख से बचाले।

ऐ हमारे परवर दिगार ! बेशक ! तू जिसे दोजख में पहुंचाए जरूर तूने उसे रुस्वा किया और जालिमों का कोई मददगार नहीं हैं।

ऐ हमारे रब ! हम ने एक मुनादी को सुना कि वोह ईमान के लिये ए'लान करता है, कि ईमान ले आओ, तो हम ईमान ले आए, ऐ हमारे रब तू हमारे गुनाह बख्श दे और हमारी बुराइयां उतार दे और हमें नेक लोगों के साथ मौत दे और हमें वोह अता कर जिस का तूने अपने रसूलों के वास्ते से हम को वा'दा फरमाया है और हमें तू कियामत के दिन रुस्वा न कर, बेशक! तू वा'दा खिलाफी नहीं करता।

पारह नम्बर 4 : सुरए निसा

आयत नम्बर 1 : ऐ लोगो ! अपने रब से डरो ।

तर्जमा : ऐ लोगो ! अपने रब से डरो जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा फरमाया और उसी से उस का जोडा बनाया और उन दोनों से बहुत से मर्द, औरतें फैला दिए और डरो अल्लाह से कि उस के नाम से मांगते रहते हो और रिश्तों का लिहाज रखो, बेशक ! वोह अल्लाह तुम्हें हर वक्त देख रहा है ।

आयत नम्बर 17 : तौबा किस की कुबूल ? किस की ना कुबूल ?

तर्जमा : वोह तौबा जिस का कुबूल करना अल्लाह तआला ने अपने फज्लो करम से अपने जिम्मए करम में लिख लिया है, वोह उन की है, जो नादानी से गुनाह कर बैठे और थोडी देर में तौबा कर ले, ऐसे लोगों पर अल्लाह अपनी रहमत से रुजूअ फरमाता है और अल्लाह इल्म और हिक्मत वाला है ।

और वोह तौबा उन की नहीं है जो गुनाहों में लगे रहे यहां तक कि उन में से किसी को जब मौत आए तो कहे कि अब मैं ने तौबा की और न उन की तौबा कुबूल है जो काफिर मरे, उन के लिये हम ने दर्दनाक अजाब तय्यार कर रखा है ।

पारह नम्बर 5 : सुरए निसा

आयत नम्बर 29 : न हराम खाओ न खुद कुशी करो

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! आपस में एक दूसरे का माल नाहक न खाओ, लेकिन येह कि तुम्हारा कोई सौदा तुम्हारी आपसी रिजामन्दी का हो (तो हरज नहीं) और अपनी जाने कत्ल न करो बेशक ! अल्लाह तुम पर महेरबान है ।

आयत नम्बर 31 : गुनाहे कबीरा से बचो और हसद न करो ।

तर्जमा : अगर तुम गुनाहे कबीरा से बचते रहे, जिन की मनाई की गई है, तो तुम्हारे दूसरे गुनाह अल्लाह मुआफ कर देगा और तुम्हें जन्नत में

दाखिल करेगा और तुम लोग उस की तमन्ना न करो जिस में अल्लाह ने तुम में से एक को दूसरे पर बडाई दी है।

मर्दों के लिये उन की कमाई का हिस्सा है और औरतों के लिये उन की कमाई में से हिस्सा है और अल्लाह से उस का फज्ल तलब करो, बेशक ! अल्लाह सब कुछ जानता हैं।

आयत नम्बर 36 से 38 : अल्लाह मोमिनों से क्या चाहता हैं ?

तर्जमा : अल्लाह की बन्दगी करो और उस का किसी को शरीक न ठहराओ और मां बाप से और रिश्तेदारों से और यतीमों और मोहताजों, मिस्कीनों से और नज्दीक के पडोसी और दूर के पडोसी और सफर के साथी, मुसाफिर और अपने बांदी गुलाम (येह जमाने के लिहाज से, नौकर चाकर खुद्दाम) येह सब के साथ नेकी करो और अल्लाह कोई इतराने वाले, बडाई मारने वाले को पसन्द नहीं करता।

जो खुद कन्जूसी करे और दूसरे को भी कन्जूसी करने को कहे और अल्लाह ने अपने फज्ल से जो उस को दे रखा है उसे छुपाए, उन के और काफिरों के लिये हम ने जिल्लत का अजाब तय्यार कर रखा है।

और वोह लोग जो अपना माल रियाकारी से लोगों को दिखाने के लिये खर्च करे और न अल्लाह पर ईमान लाने वाले न कियामत पर तो उन का दोस्त व साथी शैतान हुवा, तो वोह कितना बुरा साथी है।

आयत नम्बर 42 : रसूलुल्लाह सब पर गवाह हैं।

तर्जमा : तो वोह (घडी) कैसी होगी, जब ऐ महबूब ! हम हर उम्मत से एक गवाह निकालेंगे और ऐ महबूब ! हम तुम्हें उन सब पर गवाह व निगहबान बना कर लाएगे।

आयत नम्बर 48 : अल्लाह कुफ्र और शिर्क मुआफ नहीं करता।

तर्जमा : अल्लाह उसे नहीं बख्शता कि उस के साथ कुफ्र किया जाए और कुफ्र के नीचे जो कुछ है, वोह जिसे चाहे मुआफ कर देता

हैं और जिस ने गैरुल्लाह को खुदा का शरीक ठहराया, उस ने गुनाह का बडा तूफान उठाया।

आयत नम्बर 58 : अमानत में खियानत न करो और इन्साफ से फैसला करो।

तर्जमा : बेशक! अल्लाह तुम्हें हुक्म देता हैं कि अमानतें जिन की है उन्हें सोंप दो और येह हुक्म के जब तुम लोगों में फैसला करो तो इन्साफ के साथ (हक) फैसला करो बेशक ! अल्लाह तुम्हें कितनी अच्छी नसीहत फरमाता है, बेशक! अल्लाह सुनता जानता है।

आयत नम्बर 64 : रसूल के वसीले से तौबा कुबूल होती है।

तर्जमा : अल्लाह फरमाता है ऐ महबूब ! जब वोह लोग गुनाह कर के अपने पर जुल्म कर बैठे तो वोह तुम्हारे पास हाजिर आए फिर अल्लाह से अपने गुनाहों की मुआफी चाहे और अगर रसूल उन की शफाअत फरमाए, तो जरूर वोह अल्लाह को तौबा कुबूल करने वाला महेरबान पा लेंगे।

आयत नम्बर 65 : जो रसूल का हुक्म न माने वोह मुसलमान नहीं है।

तर्जमा : ऐ रसूल ! तुम्हारे रब की कसम ! वोह मुसलमान नहीं है जब तक अपने आपसी झगडे में तुम्हें हाकिम (या'नी फैसला कुनिन्दा) न माने और फिर तुम जो हुक्म फरमाए उसे दिल से मान ले।

आयत नम्बर 69 : जो रसूल का हुक्म माने उन को क्या मिलेगा ?

तर्जमा : और जो अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म माने तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर अल्लाह ने अपना खास फज्ल फरमाया, या'नी अम्बिया और सिद्दीक और शहीद और नेक लोग और येह अल्लाह का फज्ल है और अल्लाह काफी है, जानने वाला।

आयत नम्बर 79 : मुसीबत या बुराई के लिये आदमी खुद जिम्मेदार है।

तर्जमा : जो भलाई तुझे पहुंचे वोह अल्लाह की तरफ से है और जो बुराई पहुंची वोह तेरी अपनी तरफ से है।

खुलासा : बन्दे पर जो आफत बला या मुसीबत आती है तो येह उस की गलती या गुनाह का नतीजा है, आदमी खुद इस के लिये जिम्मेदार है, **याद रहे अल्लाह किसी पर जुल्म नहीं करता, वोह जुल्म और जहल से पाक है ।**

इन्सान को चाहिये कि वोह हमेशा हर हाल में तौबा करता रहे और इस बात को समझ ले कि वोह अल्लाह की पकड से दूर नहीं, तो तौबा गुनाहों को मिटा भी देती है और आदमी को नागहानी आफात से बचाती हैं ।

आयत नम्बर 86 : सलाम का बेहतर जवाब दो ।

तर्जमा : जब कोई तुम्हें किसी लफ्ज से सलाम करे तो तुम उस से बेहतर लफ्ज से जवाब दो या कम से कम वोह दोहरा दो और बेशक ! अल्लाह हर चीज का हिसाब लेने वाला है ।

आयत नम्बर 93 : मुसलमान को कत्ल न करो ।

तर्जमा : जो कोई मुसलमान को जान बूझ कर कत्ल करे तो उस का बदला जहन्नम है, मुद्दतो उस में रहेगा और अल्लाह ने उस पर गजब किया और उस पर ला'नत की और उस के लिये बडा अजाब तय्यार कर रखा है ।

आयत नम्बर 115 : जो मुसलमानों के रास्ते से अलग हट कर चला ।

तर्जमा : जो रसूल के खिलाफ करे बा'द इस के कि हक का रास्ता उस पर जाहिर हो चुका और मुसलमानों के रास्ते से हट कर चला, हम उस को उस के हाल पर छोड देंगे और उसे जहन्नम में दाखिल करेंगे और वोह पलटने की बहुत बुरी जगह है ।

खुलासा : इस्लाम में जो नए नए फिर्के बने या जो बनते जा रहे हैं और वोह जो अहले सुन्नत व जमाअत के जो सवादे आ'जम है, इस से हट कर नया तरीका अपनाए, वोह सब इस में शामिल हैं और येह बहुत बडी वईद है, आज जैसा कि अहले सुन्नत वल जमाअत छोड कर

वहाबी, देवबन्दी, अहले हदीस, कादियानी वगैरा जो येह सब नया दीन लाए और इस्लाम छोड चुके।

आयत नम्बर 135 : हर हाल में इन्साफ करो।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! इन्साफ पर खूब काइम हो जाओ, अल्लाह के लिये गवाही देते, चाहे इस में तुम्हारा अपना नुक्सान हो चाहे तुम्हारे मां बाप का, चाहे रिश्तेदारों का, जिस पर गवाही देते हो वोह चाहे मालदार हो चाहे गरीब, फकीर हो हर हाल में इन्साफ करो, अल्लाह को इस का सब से ज्यादा इख्तियार है तो ख्वाहिशों के पीछे न चलो के हक से अलग हो जाओ और अगर तुम हेरा फेरी करो, या मुंह फेरो तो अल्लाह को तुम्हारे कामों की खबर है।

आयत नम्बर 139 : काफिरों को दोस्त न बनाओ उन के पास इज्जत नहीं है।

तर्जमा : वोह जो मुसलमानों को छोड कर काफिरों को दोस्त बनाते हैं वोह क्या उन के पास इज्जत ढूंढते हैं ? तो इज्जत तो सारी अल्लाह के पास है।

पारह नम्बर 6 : सूरए निसा

आयत नम्बर 148-149 : गीबत, चुगली अल्लाह को पसन्द नहीं है।

तर्जमा : अल्लाह पसन्द नहीं करता, बुरी बात (गीबत, चुगली) का ए'लान करना, सिवाए वोह जिस पर जुल्म किया गया हो। (वोह कर सकता है) और अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

और अगर तुम कोई नेकी ए'लानिया करो या छुपा कर करो या कोई तुम्हारे साथ बुराई करे उस को दरगुजर करो, तो बेशक ! अल्लाह मुआफ करने वाला कुदरत वाला है।

खुलासा : अगर बन्दा बदला लेने की कुव्वत के बावुजूद बन्दे को मुआफ कर देता है, तो येह बडी हिम्मत का काम है, येह बडी नेकी है और मुआफ करना सुन्नते इलाहिया है, अल्लाह बडा अज्र देता है।

“करो महेरबानी तुम अहले जमीं पर”

खुदा महेरबान होगा अर्शे बरीं पर

पारह नम्बर 6 : सूरए अल माइदह

आयत नम्बर 2 : नेक कामों में एक दूसरे की मदद करो।

तर्जमा : नेकी और परहेजगारी में एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और हद से बढने में आपस में मदद न करो और अल्लाह से डरते रहो, कि बेशक ! अल्लाह का अजाब सख्त है।

आयत नम्बर 6 : वुजू और तयम्मुम का बयान

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! जब तुम नमाज पढना चाहो तो अपना मुंह धो लो और कोहनियों तक अपना हाथ धो लो और सरों का मस्ह करो और गट्टो तक पाऊं धो लो और अगर तुम्हें नहाने की हाजत हो, तो खूब पाक हो जाओ और अगर तुम बीमार हो, या सफर में हो, या तुम से कोई इस्तिन्जा कर के आए, या औरत से सोहबत करो और इस हालत में कि पानी न मिले, तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो, अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी रखे, वोह तो चाहता है कि तुम को खूब खूब पाक कर दे और अपनी ने'मतें तुम पर पूरी करे, कि तुम शुक्र गुजार बनो।

आयत नम्बर 8 : इन्साफ करो।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह के हुक्म पर खूब काइम हो जाओ, इन्साफ के साथ गवाही देते हुए और तुम को किसी कौम की दुश्मनी इस बात पर आमादा न करे कि तुम इन्साफ न करो, इन्साफ करो कि वोह परहेजगारी से ज्यादा करीब है और अल्लाह से डरो, कि बेशक ! अल्लाह को तुम्हारे कामों की खबर है।

आयत नम्बर 15, 16 : नबी अल्लाह की तरफ से नूर है।

तर्जमा : बेशक ! अल्लाह की तरफ नूर आया और रौशन किताब आई, अल्लाह उस से हिदायत देता है उस को जो अल्लाह की

मर्जी पर चला और सलामती के साथ उन को (गुनाह की) तारीकियों से निकाल कर नूर की तरफ ले जाता है और उन्हें सीधी राह दिखाता है।

आयत नम्बर 35 : वसीला जरूरी है

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और उस की तरफ वसीला तलाश करो और उस की राह में जिहाद करो, इस उम्मीद पर कि कामयाब हो सको।

आयत नम्बर 51 : यहूदो नसारा को दोस्त न बाओ।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! यहूद व नसारा को अपना दोस्त न बनाओ वोह आपस में एक दूसरे के दोस्त है और तुम में जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो वोह उन्हीं से हैं, बेशक ! अल्लाह बे इन्साफों को राह नहीं देता।

खुलासा : चाहे यहूद हो चाहे नसारा या फिर मुश्रिक, इन सभी से दोस्ती करने की मनाई की गई है और इस आयत में तो बहुत बडी वईद है कि जो कोई उन से दोस्ती करेगा वोह उन्हीं में से है।

सरकार ने फरमाया, "**अल कुफ्रू मिल्लतुन वाहिदतून**" तमाम काफिर एक ही मिल्लत है और उन के आपस में चाहे कितने भी इख्तिलाफ हो। या दुश्मनी भी हो तब भी मुसलमानों की और इस्लाम की दुश्मनी में सब एक है।

और अफ्सोस तो येह हैं कि मुसलमान मुल्क के हुक्मरान और अफ्सर लोग उन की गोद में बैठे हुए है और उन के गहरे दोस्त है, उन के इशारों पर और उन के तरीके पर है, यहां तक कि कुछ की तो हालत ऐसी है कि यहूद उन से अच्छे नजर आ रहे है।

"वोह मुसलमां जिसे देख कर शर्माए यहूद"

पारह नम्बर 7 : सूरए अल माइदह

आयत नम्बर 87 : तुम्हारे कहने से कोई चीज हराम नहीं हो जाती।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! हराम न ठहराओ वोह पाकीजा चीजें जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल की और हद से न बढो, बेशक ! हद से बढ जाने वाले अल्लाह को नापसन्द है।

आयत नम्बर 90-91 : शराब और जुआ और मुर्ती पूजा हराम है।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! शराब और जुआ और बुत और पांसे नापाक ही है, शैतानी काम, तो उन से बचते रहो कि तुम फलाह पाओ शैतान तो येही चाहता है कि शराब और जूए से तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे और तुम्हें अल्लाह की याद से रोके, तो क्या तुम बाज आए ?

आयत नम्बर 114 : ईदे मिलादुन्नबी मनाना जाईज होने की दलील।

तर्जमा : ईसा इब्ने मरयम ने अर्ज की ऐ रब ! ऐ अल्लाह ! हम पर आस्मान से एक थाल उतार कि ईद हो हमारे अगले पिछलों की और तेरी तरफ से निशानी हो और हमें रिज्क दे और तू सब से बेहतर रोजी देने वाला है।

खुलासा : हजरते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का येह अर्ज करना कि हमारे पर आस्मान से थाल उतार कि वोह दिन हमारे लिये ईद हो तो जो एक थाल का उतरना, ईद बन सके तो जिस दिन महबूबे खुदा, रहमतुल्लिल आलमीन तश्रीफ ले आए तो अगर उस रोज कोई ईद मनाए तो क्या हरज ?

निसार तेरी चहल पहल पर हजारों ईदे रबीउल अव्वल
सिवाए इब्लीस के जहां में सभी तो खुशिया मना रहे है

पारह नम्बर 7 : सूरए अल अन्आम

आयत नम्बर 17 : अल्लाह सब कुछ कर सकता है।

तर्जमा : और अगर तुझे अल्लाह कोई बुराई पहुंचाए तो उस के सिवा कोई उस का दूर करने वाला नहीं और अगर तुझे भलाई पहुंचाए तो वोह सब कुछ कर सकता है।

आयत नम्बर 59 से 62 : अल्लाह सब कुछ जानता है।

तर्जमा : गैब की कुन्जिया अल्लाह ही के पास है, वोही उसे

जानता है और वोह जानता है, जो कुछ जमीन और पानी में है और जो पत्ता गिरता है वोह उसे भी जानता है और कोई दाना, जो जमीन की अन्धेरी जगह में है वोह उसे भी जानता है और कोई खुश्क या तर ऐसा नहीं जो एक रौशन किताब (लौहे महफूज या कुरआने करीम) में न लिखा हो।

और वोही रब है, जो रात को तुम्हारी रूहें कब्ज करता हैं और वोह जानता है जो कुछ (नेकी या बदी) तुम दिन में कमाई करो, फिर तुम्हें दिन में उठाता है कि तुम्हारी जिन्दगी की लिखी हुई मुद्दत पूरी हो। फिर तुम्हें उसी की तरफ लौटना है, तब वोह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम ने किया था।

और वोही गालिब है, अपने बन्दों पर और वोह तुम पर निगहबान भेजता है, यहां तक कि जब तुम में से किसी को मौत आए तो अल्लाह के फिरिश्ते उस के हुक्म से उस की रूह कब्ज करते हैं और वोह भूल या कुसूर नहीं करते, फिर ले जाते हैं अपने सच्चे मौला अल्लाह की तरफ, सुनो उसी का हुक्म है और वोह सब से जल्द हिसाब करने वाला है।

आयत नम्बर 68 : बुरे लोगों के पास न बैठ।

तर्जमा : और जब तू उन्हें देखे, जो अल्लाह की आयतों में (मजाक उडाने के लिये) बकवास करते हैं, तो तू उन से मुंह फेर ले, जब तक वोह कोई दूसरी बात में पडे और कहीं अगर तुझ को शैतान भूला दे तो याद आने पर जालिमों से अलग हो जा।

खुलासा : इस आयत में हम को नसीहत की गई कि बद अकीदा गुमराह बे दीन लोगों की सोहबत से दूरी अपनाए जो लोग अल्लाह की निशानियों को ठठ्ठा [मजाक] करते है, उस के रसूल, अहले बैत और बुजुर्गाने दिन से बुग्जो अदावत रखते है उन से दूरी रखी जाए।

आयत नम्बर 95 से 99 : अल्लाह की निशानियों में गौरो फिक्र।

तर्जमा : बेशक! अल्लाह दाने और गुठली का चीरने वाला है

और जिन्दा को मुर्दा से और मुर्दा को जिन्दा से निकाल ने वाला है येह है अल्लाह, तो तुम कहां औंधे जाते हो ?

रात की अन्धेरी दूर कर के सुब्ह को निकालने वाला और उस ने रात को चैन बनाया और सूरज और चांद को हिसाब बनाए येह किया हुवा है जबरदस्त जानने वाले का और वोही अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिये तारे बनाए कि उस से खुश्की और तरी में राह पाओ, हम ने निशानियां मुफस्सल बयान कर दी इल्म वालों के लिये।

और वोही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया, फिर तुम्हें कहीं ठहरना है और कहीं अमानत रहना है, हम ने आयात मुफस्सल बयान कर दी समझ वालों के लिये।

और वोही है जिस ने आस्मान से पानी उतारा। तो हम ने उस से हर उगने वाली चीज पैदा की, तो हम ने उस से सब्जी निकाली, जिस में से दाने निकालते है, एक दूसरे पर चडे हुए और खजूर के गाभे के पास पास गुच्छे और अंगूर के बाग और जैतून और अनार वगैरा, किसी बात में मिलते झुलते और किसी बात में अलग अलग, उस का फल देखो जब वोह फले और उस का पकना, बेशक ! इस में निशानियां है ईमान वालों के लिये।

खुलासा : अल्लाह तबारक व तआला अपनी निशानियां जाहिर करता है कि इन्सान सोचें और इस निशानियों में गौरो फिक्र कर के उस से अल्लाह तआला सानए हकीकी की कुदरत पर दलील पकडे।

क्या वोह बेजान बुत येह सब कुछ कर सकते हैं ? जमीन का जर्रा जर्रा बारिश का कतरा कतरा, पेड पौदों के पत्ते हर चीज में अल्लाह तआला की कुदरते कामिला की निशानियां है, येह अल्लाह तआला की मआरिफत की किताबे हैं अल्लाह तआला हमें दा'वत देता है कि गौरो फिक्र करो, येह उस की वहदानियत की दलीलें हैं।

पारह नम्बर 8 : सूरए अल अन्आम

आयत नम्बर 125 : अल्लाह जिसे राह दिखाना चाहे।

तर्जमा : और जिसे अल्लाह राह दिखाना चाहे उस का सीना इस्लाम के लिये खोल देता हैं और जिसे गुमराह करना चाहे उस का सीना तंग और खूब रुका हुवा कर देता है।

खुलासा : अल्लाह तआला जिस को सिराते मुस्तकीम पर चलाना चाहे उस को ईमान की तौफीक देता है। उस के दिल में नूर पैदा करता है। जिस की वज्ह से वोह हक व बातिल में फर्क महसूस कर लेता है।

आयत नम्बर 141 : जकात और उश्र का हुक्म।

तर्जमा : और वोही अल्लाह है। जिस ने तुम्हारे लिये बाग बनाए कुछ जमीन पर छाए हुए (बेल, बूटे) और कुछ बे छाए (जाड, पौदे, पेड) और खजूर और खेती जिस में रंग रंग के खाने फल जैतून और अनार, किसी बात में मिलते जुल्ते और किसी बात में अलग अलग, तो जब उस पर फल आए तो खाओ और उस का हक (उश्र) दो और बेजा (फालतू) न खर्चे कि बेजा खर्च करने वाले उसे पसन्द नहीं।

आयत नम्बर 151-152 : अल्लाह ने क्या हराम किया ?

तर्जमा : ऐ महबूब ! तुम फरमा दो आओ मैं तुम्हें बताऊं जो तुम्हारे रब ने तुम पर हराम किया, वोह येह कि उस का किसी को शरीक न करो और मां बाप के साथ भलाई करो और मुफ्लिसी, तंगदस्ती के बाइस अपनी औलाद को कत्ल न करो हम तुम्हें भी और उन को भी सब को रोजी देंगे और बेहयाई से दूर रहो, चाहे वोह खुली हो चाहे ढकी और जिस जान की अल्लाह ने हुरमत रखी, उसे न मारो येह हुक्म तुम पर इस लिये हैं कि तुम अक्ल से काम लो।

और यतीमों के माल का ऐसा इन्तिजाम करो कि उन को फाइदा पहुंचे, जब तक वोह जवान हो जाए और माप और तोल में इन्साफ करो,

हम किसी जान पर उस की ताकत से ज्यादा बोझ नहीं डालते। और जब बात कहो तो इन्साफ की कहो, चाहे मुआमला तुम्हारे रिश्तेदार का हो और अल्लाह का अहद पूरा करो, येह तुम्हें नसीहत फरमाई कि तुम नसीहत मानो।

आयत नम्बर 162 : सब कुछ खुदा ही के लिये।

तर्जमा : तुम फरमाओ, बेशक ! मेरी नमाज, मेरी कुरबानियां मेरा जीना मेरा मरना सब अल्लाह के लिये है, जो परवर दिगार है, सारे जहांनों का, उस का कोई शरीक नहीं मुझे येही हुक्म हुवा है और मैं सब से पहले मुसलमान हूं।

पारह नम्बर 8 : सूरए अल आ'राफ

आयत नम्बर 26 : तक्वा, परहेजगारी का लिबास सब से अच्छा लिबास।

तर्जमा : ऐ बनी आदम ! बेशक ! हम ने तुम्हारी तरफ एक लिबास तो वोह उतारा, जो तुम्हारी शर्म की चीजें छुपाएं और एक लिबास तो वोह जिस से तुम्हारी आराइश हो और परहेजगारी का लिबास वोह सब से बेहतर लिबास है।

खुलासा : कपडे से बदन की खूब सूरती है मगर परहेजगारी का लिबास वोह लिबास है जिस से रूह खूब सीरत और आदमी नेक बनता है। इस लिये तक्वे का लिबास सब से बेहतर है।

आयत नम्बर 27 : शैतान इन्सान का दुश्मन है।

तर्जमा : ऐ आदम की औलाद ! खबरदार ! तुम्हें शैतान फित्ने में न डाले, जैसे तुम्हारे मां बाप को जन्नत से निकाला, उन के लिबास उतरवा दिये, कि उन की शर्मगाह उन को नजर पडे, बेशक ! वोह और उस का कुम्बा तुम्हें वहीं से देखता है और तुम उन्हें नहीं देखते।

बेशक ! हम ने शैतान को उन का दोस्त किया है जो ईमान नहीं लाते।

आयत नम्बर 31 : अच्छा लिबास, अच्छा खाना अल्लाह ने हराम नहीं किया।

तर्जमा : ऐ आदम की औलाद ! जब तुम मस्जिद में जाओ तो बन संवर कर जाओ (अच्छे कपडे, पाकिजगी, खुश्बू लगा कर) और खाओ और पीओ और हद से न बढो (लिमिट में रहो) क्यूं कि हद से बढने वाले उस को पसन्द नहीं।

ऐ महबूब ! तुम फरमाओ वोह जीनत जो अल्लाह ने अपने बन्दों के लिये निकाली वोह किस ने हराम की ? और पाक रिज्क किस ने हराम किया ?

तुम फरमाओ, वोह दुन्या में ईमान वालों के लिये है और कियामत में तो सिर्फ खास उन्हीं के लिये ही हैं हम यूंही आयतें बयान करते है, ईमान वालों के लिये।

आयत नम्बर 33 : अल्लाह ने क्या हराम किया ?

तर्जमा : तुम फरमाओ, मेरे रब ने बेहयाइयां हराम की हैं चाहे वोह खुली हो चाहे छुपी ढकी हो और गुनाह और जियादती हराम की है और येह कि अल्लाह का किसी को शरीक करो जिस की कोई सनद नहीं और येह कि अल्लाह के बारे में कोई ऐसी बात कहो जिस का तुम्हें इल्म नहीं।

आयत नम्बर 55-56 : दुआ करने का तरीका।

तर्जमा : अपने रब से दुआ करो, आहिस्ता धीमी आवाज से और गिड गिडाते, बेशक! हद से बढने वाले (चीखने, चिल्लाने वाले) उस को पसन्द नहीं और जमीन में फसाद न फेलाओ उस के संवरने के बा'द और अपने रब से दुआ करो उस से डरते और उस से उम्मीद रखते, बेशक! अल्लाह की रहमत नेकों के करीब है।

आयत नम्बर 85 : माप और वज्न में चोरी न करो

तर्जमा : हजरते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी कौम से फरमाया, ऐ मेरी कौम ! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा कोई तुम्हारा मा'बूद नहीं, बेशक ! तुम्हारी तरफ तुम्हारे रब की तरफ से रौशन दलील आई, तो नाप और तोल पूरी करो और लोगों की चीजें घटा कर न दो और जमीन में इन्तिजाम के बा'द फसाद न फैलाओ, येह तुम्हारा ही भला है, अगर तुम ईमान वाले हो ।

पारह नम्बर 9 : सूरए अल आ'राफ

आयत नम्बर 199 : लोगों को मुआफ करो ।

तर्जमा : ऐ महबूब ! मुआफ करना इख्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो ।

आयत नम्बर 200-201 : शैतान के वस्वसों से अल्लाह की पनाह मांगो

तर्जमा : ऐ सुनने वाले ! अगर शैतान तुझे कोई कौंचा देवे तो अल्लाह की पनाह मांग, बेशक ! वोही सुनता जानता है और बेशक ! जो डर वाले है, जब उन्हें शैतानी खयाल की ठेस लगती है, तो वोह होशियार हो जाते हैं, उसी वक्त उन की आंखें खुल जाती हैं ।

आयत नम्बर 204 : जब कुरआन की तिलावत की जाए, तो खामोश रहो

तर्जमा : जब कुरआन पढा जाए, तो उसे कान लगा कर सुनो और खामोश रहो कि तुम पर रहम किया जाए और अपने रब को दिल में याद करो, गिड गिडा कर और डरते डरते बिगैर आवाज निकाले, सुब्ह और शाम और गाफिलों से न बनों ।

पारह नम्बर 9 : सूरए अल अन्फाल

आयत नम्बर 2 : ईमान वाले अल्लाह से डरते हैं ।

तर्जमा : ईमान वाले वोही है, जब अल्लाह याद किया जाए तो उन के दिल डर जाए और जब उन पर उस की आयतें पढी जाए तो उन का ईमान तरक्की पाए और अपने रब पर ही भरोसा करे ।

आयत नम्बर 24 : बिगैर खुदा के चाहे, आदमी कुछ नहीं कर सकता है।

तर्जमा : और जान लो कि अल्लाह का हुक्म आदमी और उस के दिली इरादो के बीच में हाइल हो जाता है।

खुलासा : आदमी कुछ भी करना चाहे, वोह अपनी नियत तक तो ठीक है, मगर उस काम को अन्जाम नहीं दे सकता जब तक अल्लाह तआला इरादा न करे।

आयत नम्बर 25 : बुरो की दोस्ती करोंगे तो तुम पर भी अजाब आएगा

तर्जमा : और उस फित्ने से डरते रहो, जो तुम में से सिर्फ जालिमों तक ही न पहुंचेगा और जान लो कि अल्लाह का अजाब सख्त है।

खुलासा : हजरते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फरमाया कि अल्लाह तबारक व तआला ने मोमिनीन को हुक्म फरमाया कि वोह अपने दरमियान बुराइयों को रोके और गुनाह करने वालों को गुनाह से मन्अ करे, अगर ऐसा न किया तो अजाब उन पर आम होगा, खताकार और गैर खताकार सब को पहुंचेगा।

अगर आदमी बुरों की सोहबत न छोडे और मनाई किये हुए आ'माल करता रहे, या बुरों का साथ देता रहे और अगर फित्ना नाजिल हुवा। तो उस में सिर्फ जालिम हलाक न हों, बल्कि सारे के सारे हलाक हो जाएगे।

आयत नम्बर 27 से 29 : तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद सब फित्ना है

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह और रसूल से दगा न करो और अपनी अमानतों में खियानत न करो और जान लो कि तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद सब फित्ना (आजमाइश, कसोटी) है और अल्लाह के पास बडा सवाब है।

ऐ ईमान वालो ! अगर अल्लाह से डरोगे तो अल्लाह तुम्हें वोह (समझ और नूर) देगा जिस से तुम हक व बातिल को जुदा कर लोगे

और वोह तुम्हारी बुराइयां उतार देगा और तुम्हें मुआफ कर देगा और अल्लाह बडे फज्ल वाला है।

पारह नम्बर 10 : सूरए अल अन्फाल

आयत नम्बर 46 : आपस में न लडो और सब्र करो।

तर्जमा : और अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म मानो और आपस में न लडो, कि फिर बुजदिली करोगे और तुम्हारी बन्धी हुई हवा जाती रहेगी और सब्र करो कि बेशक! अल्लाह सब्र वालों के साथ है।

आयत नम्बर 53 : आदमी नाफरमानियां कर के ने'मतें खो देता हैं।

तर्जमा : अल्लाह किसी कौम से जो ने'मत उस ने दे रखी है वोह वापस नहीं लेता। जब तक वोह खुद न बदल जाए और बेशक! अल्लाह सब कुछ जानता है।

आयत नम्बर 60 : काफिरों के दिल में धाक बिठाओ।

तर्जमा : उन के लिये तय्यार रखो, जो कुव्वत तुम से बन पडे और जितने घोडे बान्ध सको और जो अल्लाह के दुश्मन है और जो तुम्हारे दुश्मन है उन के दिलों में धाक बिठाओ।

पारह नम्बर 10 : सूरए तौबा

आयत नम्बर 18 : मस्जिदे कौन आबाद करता है ?

तर्जमा : अल्लाह की मस्जिदें वोही आबाद करते हैं जो अल्लाह और कियामत पर ईमान रखते है और नमाज काइम करते है और जकात देते हैं और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते, तो करीब हैं कि वोह हिदायत वालों से हों।

आयत नम्बर 23 : काफिरों और गुमराहों से दोस्ती न करो।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अपने बाप और अपने भाइयों को दोस्त न समझो, अगर वोह ईमान पर कुफ्र पसन्द करे और जो तुम में से उस से दोस्ती करेगा तो वोही जालिम है, तुम फरमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुम्बा

और तुम्हारी कमाई का माल और वोह सौदा जिस के नुक्सान का तुम्हें डर हैं और तुम्हारी पसन्द के मकान, येह चीजें तुम्हें अल्लाह और उस के रसूल और उस की राह में लडने से प्यारी हो तो इन्तिजार करो, यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म ले आए और अल्लाह फासिकों को राह नहीं देता।

पारह नम्बर 11 : सूरए तौबा

आयत नम्बर 111 : मुसलमानों का माल और जान।

तर्जमा : बेशक ! अल्लाह ने मुसलमानों का माल और जान खरीद लिया है इस बदले पर की उन के लिये जन्नत है।

आयत नम्बर 119 : सच्चों के साथ हो जाओ।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ रहो।

आयत नम्बर 128-129 : रसूल मुसलमानों पर कमाल महेरबान हैं।

तर्जमा : बेशक ! तुम्हारे पास तुम्ही में से एक रसूल तशरीफ लाए तुम्हारा तक्लीफ में पडना उन पर बहुत गिरां है, तुम्हारी भलाई के बेहद चाहने वाले, मुसलमानों पर कमाल महेरबान और फिर अगर लोग मुंह फेरे तो तुम फरमा दो, कि मुझे अल्लाह काफी है। उस के सिवा किसी की इबादत नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया और वोह बडे अर्श का मालिक है।

खुलासा : नबी मुसलमानों पर बहुत महेरबान है, अल्लाह के नूर से तमाम उम्मतियों के आ'माल पर शाहिद, या'नी गवाह है, देख रहे हैं। इस के इलावा हर सोमवार और जुमे'रात को उम्मतियों के आ'माल नबी की बारगाह में पेश किये जाते है, हमारे गुनाह करने से आप को रन्ज होता है और अगर हम नेक काम करे तो सरकार खुश होते है।

आप हमेशा उम्मतियों के गुनाह की अल्लाह से मुआफी मांगते रहते है, आप अपनी कब्र मुबारक में जिन्दा है। तमाम मरने वालों की कब्र में तशरीफ ले जाते है, हमारे सलाम का जवाब देते है।

पारह नम्बर 11 : सूरए यूनुस

आयत नम्बर 5-6 : अल्लाह की निशानियां।

तर्जमा : वोही है जिस ने सूरज को जगमगाता बनाया और चांद को चमकता और उस के लिये मन्जिलें ठहराई कि तुम बरसों की गिनती और हिसाब जानो, अल्लाह ने उसे बिल्कुल हक बनाया, अल्लाह निशानियां बयान करता है इल्म वालों के लिये, बेशक! रात और दिन का बदलते आना और जो कुछ अल्लाह ने आस्मानों और जमीन में पैदा फरमाया उस में निशानियां है डरने वालों के लिये।

आयत नम्बर 23 : सजा तो मिलेगी ही।

तर्जमा : ऐ लोगो ! तुम्हारी जियादती (गुनाह में हद से बढ जाना) या दूसरों पर जुल्म करना तुम्हारे ही जानों पर वबाल है दुन्या के जीते जी बरत लो, फिर तुम्हें हमारी ही तरफ लौट कर आना है, उस वक्त हम तुम्हें बता देंगे जो तुम्हारे बुरे आ'माल थे।

आयत नम्बर 37-38 : कुरआने करीम जैसी एक सूरत भी न ला सकोंगे

तर्जमा : इस कुरआन की येह शान नहीं कि इसे कोई अपनी तरफ से बना ले, अल्लाह के उतारे सिवा, हां वोह अगली किताबों की तस्दीक हैं और लौहे महफूज में जो कुछ लिखा है सब की तफ्सील है इस में कुछ शक नहीं कि येह परवर दिगारे आलम की तरफ से है।

क्या येह बक्वास करते है कि उन्हों ने (नबी ने) इसे बना लिया है, तुम फरमाओ, तो इस जैसी कोई एक सूरत तो लाके दिखाओ और (अगर अकेले न कर सको तो) अल्लाह को छोड कर जितने मिल सके सब को मदद में बुला लो, अगर तुम सच्चे हों।

आयत नम्बर 57 : कुरआने करीम रहमत व नसीहत व शिफा हैं।

तर्जमा : ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से नसीहत आई और दिलों की सेहत और हिदायत और रहमत ईमान वालों के लिये।

खुलासा : येह किताब अजीम फवाइद को जामेए हैं येह नेकी की तरफ बुलाने वाली और बुराई से रोकने वाली किताब है इस के पढने से दिल में नूर दाखिल होता हैं दिल नर्म बनता है येह दिलों की सेहत है, येह गुमराही से बचाती है, इस को समझ कर धीमे धीमे रुक रुक कर पढा जाए इस के मा'नों में गौरो फिक्र किया जाए।

आयत नम्बर 58 : ईदे मिलादुन्नबी मनाना जाईज है।

तर्जमा : तुम फरमाओ, अल्लाह ही के फज्ल और उस की रहमत और उसी पर चाहिये कि खुशी करे, येह उन के सब धन दौलत से बेहतर हैं।

खुलासा : अल्लाह फरमाता है कि अल्लाह का फज्ल और रहमत पर खुशी मनाओ और येह एक सच्चाई है कि अल्लाह की सब से बडी रहमत का नाम है, मुहम्मदुर रसूलुल्लाह।

जिस दिन बनी इसराईल को फिरऔनियों के जुल्म से नजात मिली और दुश्मन कौम दरिया में डूब गई, तो जब येह इन्आम उन को मिला, तो सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने शुक्राने में रोजा रखा और आज तक उन की कौम खुशियां मना रही हैं, या'नी 10 मोहर्रम को ईद मना रही हैं।

जिस दिन ईसाइयों पर आस्मान से ख्वान नाजिल हुवा वोह दिन सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और उन की कौम ईसाइयों का ईद का दिन बना।

जिस दिन, या'नी अर्फा के दिन, आयत अलयौम अक्मलतु लकुम, नाजिल हुई तो उस दिन के बारे में सय्यिदुना फारूके आ'जम ने कहा कि वोह दिन हमारे लिये ईद का दिन है।

खुद हुजूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर सोमवार को रोजा रखते थे और कहते थे कि येह मेरा यौमे विलादत है, हुजूर की तशरीफ आवरी के बारे में खुद रब्बे काएनात येह फरमाता है कि अल्लाह का बडा एहसान हुवा मुसलमानों पर कि उन्हीं में से उन पर एक रसूल मब्ऊस फरमाया।

तो अल्लाह के इस अजीम एहसान पर हम खुशिया क्यूं न मनाए ?

आयत नम्बर 59-60 : अपनी तरफ से किसी चीज को हराम या हलाल न कहो।

तर्जमा : तुम फरमाओ कि भला बताओ तो वोह जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये रिज्क उतारा, उस में तुम ने अपनी तरफ से हराम और हलाल ठहरा लिया। तुम फरमाओ क्या अल्लाह ने तुम को इस की इजाजत दी ? या तुम अल्लाह पर झूट बान्धते हो ? क्या गुमान है उन का जो अल्लाह पर झूट बान्धते है ? कियामत में उन का क्या हाल होगा ? बेशक ! अल्लाह लोगों पर फज्ल फरमाता है लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।

खुलासा : इस आयत से मा'लूम हुवा कि किसी चीज को अपनी तरफ से हलाल या हराम कर लेना खुदा पर इफ्तिरा है। आज कल बहुत लोग इस में फंसे हुए है, मन्अ की गई चीज जो जाइज व हलाल कहते है और मुबाह या जाइज हलाल चीज को हराम कहते है।

कुछ लोग ईदे मिलादुन्नबी मनाने से रोकते है नियाज फातिहा शीरीनी सबील वगैरा जिस की शरीअत में मनाई नहीं उस को अपनी तरफ से हराम कहते है यहां तक कि बुजुर्गों के वसीले से दुआ मांगने को शिर्क कहते है, कियामत के दिन उन का क्या हाल होगा ?

आयत नम्बर 61 : कोई चीज भी अल्लाह से छुपी नहीं।

तर्जमा : तुम किसी भी काम में हो और उस की तरफ से कुरआन पढो और तुम लोग कोई भी काम करो, हम तुम पर गवाह है, कि जब तुम उस को शुरूअ करते हो और तुम्हारे रब से जर्रा बराबर कोई चीज छुपी नहीं, न जमीन में न आस्मान में न कोई छोटी न कोई बडी कोई भी चीज ऐसी नहीं है, जो एक रौशन किताब में न हो।

खुलासा : आदमी अगर येह तसव्वुर जमा ले कि मैं कहीं भी रहूं या कुछ भी करूं हर हाल में अल्लाह मुझे देख रहा हैं, मेरी बातें सुन रहा है, अगर इतना ही समझ ले तो दुन्या में से गुनाह खत्म हो जाए, अल्लाह तआला अपनी कुदरते कामिला और अपने इल्म के हिसाब से सब कुछ देखता सुनता जानता है।

वोह फरमाता है हम तुम्हारी रगे जां से भी ज्यादा करीब है। बस बात येह है कि इन्सान को शुऊर नहीं।

आयत नम्बर 62 से 64 : अल्लाह के वली को न कोई खौफ न रन्ज।

तर्जमा : सुन लो और खबरदार हो जाओ कि बेशक ! जो अल्लाह के वली होते है न उन पर कोई खौफ न कुछ रन्ज।

वोह लोग जो ईमान ले आए और तक्वा परहेजगारी अपनाई उन को दुन्या की जिन्दगी और आखिरत दोनों में खुश खबरी है बेशक ! अल्लाह की बातें बदल नहीं सकती और येह बहुत बडी कामयाबी है।

आयत नम्बर 106-107 : तक्लीफ व राहत सब अल्लाह के पास से है

तर्जमा : अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न कर जो न तेरा कुछ भला कर सके न बुरा और फिर भी अगर तू ऐसा करे तो उस वक्त तू जालिम गुनहगार होगा।

और अगर तुझे अल्लाह कोई तक्लीफ पहुंचाए तो उस के सिवा कोई उस का दूर करने वाला नहीं है और अगर वोह तेरा भला चाहे, तो कोई उस के फज्ल को रद करने वाला नहीं।

पारह नम्बर 11 : सूरए हूद

आयत नम्बर 3 : तौबा करो अल्लाह बहुत बडा इन्आम देगा।

तर्जमा : और येह कि अपने रब से तौबा करो, मुआफी मांगो वोह तुम्हें बहुत अच्छा सिला "मताए हसन" अता करेगा एक मुकर्रर वा'दे तक हर फज्ल वाले को उस का फज्ल पहुंचेगा।

खुलासा : तौबा की बहुत बडी फजीलत है, तौबा करने वाले को अल्लाह बडी बडी ने'मतें और बडा मर्तबा अता फरमााता है, फिरिश्ते तौबा करने वालों के हक में दुआएं करते रहते हैं, तौबा करने वाले को अल्लाह तआला लम्बी उम्र, ऐशो राहत ज्यादा रिज्क और दुन्या में आसान जिन्दगी अता फरमाता है और आखिरत में हमेशा की जन्नत का वा'दा करता है।

आयत नम्बर 5 : अल्लाह से कुछ भी छुपा नहीं है।

तर्जमा : सुनो कुछ लोग अपना सीना दोहरा करते हैं कि अल्लाह से छुप जाए, सुनो जिस वक्त वोह अपने कपडों से सारा बदन ढांप लेते हैं तब भी अल्लाह तआला उस का छुपा व जाहिर सब कुछ जानता है बेशक! वोह दिलों की बात जानने वाला है।

पारह नम्बर 12 : सूरए हूद

आयत नम्बर 6 : तमाम मख्लूक का रिज्क व मौत व हयात अल्लाह के जिम्मे है।

तर्जमा : और रूए जमीन पर चलने वाला कोई जानदार ऐसा नहीं जिस का रिज्क अल्लाह के जिम्मए करम पर न हो और वोह जानता हैं कहां रहेगा और कहां दफ्न होगा।

खुलासा : चाहे जमीन पर चलने वाला हो, चाहे पानी में रहने वाला हो, चाहे हवा में उडने वाला हो, चाहे इन्सान चाहे जिन्नात, चाहे दरिन्दे, चरिन्दे, चाहे नेक हो चाहे गुनहगार, चाहे मोमिन हो चाहे काफिर सब के रिज्क का इन्तिजाम करने वाला एक वोही एक अल्लाह है और वोह कहां पर रहता है ? और कहां मरेगा ? कहां दफ्न होगा ? सब अल्लाह जानता है।

आयत नम्बर 9-10 : इन्सान बडा नाशुक्रा और बडा शैखी बाज है।

तर्जमा : अल्लाह तआला फरमाता है, अगर हम आदमी को अपनी किसी रहमत का मजा दे, फिर अगर वोह उस से छीन ले तो वोह जरूर बडा ना उम्मीद और नाशुक्रा है।

और अगर जो मुसीबत उसे पहुंची उस के बा'द उस को ने'मत दी गई तो जरूर कहेगा, बुराइयां मुझ से दूर हुई बेशक! वोह बडा खुश होने वाला बडाई मारने वाला है।

खुलासा : ने'मत भी आजमाइश है और मुसीबत भी आजमाइश है जब कोई ने'मत मिले तो डींग मारना बडाई का बोल बोलना सहीह नहीं है।

वैसे ही मुसीबतो बला के वक्त नाशुक्री ना उम्मीदी सहीह नहीं है। मोमिन की शान तो येह होनी चाहिये कि हर हाल में शुक्र करे। और सब्र का दामन हाथ से न छुटने दे, बेशक! जो सब्र करते है, वोही कामयाब है।

आयत नम्बर 15-16 : दुन्या को चाहने वाला आखिरत के घाटे में है।

तर्जमा : जो कोई दुन्या की जिन्दगी और उस की सजावट चाहे तो हम उस को उस का पूरा पूरा फल देंगे और उस में कमी न करेंगे, येह वोह लोग है जिन के लिये आखिरत में आग के सिवाए कुछ नहीं और दुन्या में जो कुछ काम किये वोह सब बरबाद हो गए।

आयत नम्बर 52 : तौबा करो अल्लाह ने'मतों से नवाजेगा।

तर्जमा : फरमाया हजरते हूद عَلَیْہِ السَّلَام ने ऐ मेरी कौम! अपने रब से मुआफी चाहो फिर उस की तरफ रुजूअ लाओ तुम पर जोर का पानी भेजेगा और तुम में जितनी ताकतो कुव्वत है उस से और ज्यादा देगा।

आयत नम्बर 56 : जमीन पर चलने वाले सब की चोटी अल्लाह तआला के कब्जए कुदरत में है।

तर्जमा : कहो कि मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा रब हैं और तुम्हारा रब है और जमीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं, जिस की चोटी अल्लाह के कब्जए कुदरत में न हो बेशक! मेरा रब सीधे रास्ते पर मिलता है।

खुलासा : या'नी कि बन्दे के चाहने से कुछ भी नहीं होता जब तक अल्लाह न चाहे, न कोई नेकी कर सकता है न बुराई न दूसरे को फाइदा पहुंचा सकता है न नुक्सान न अपने को फाइदा पहुंचा सकता है, बन्दा बस सिर्फ अच्छी या बुरी निय्यत तक ही है, होता वोही है जो रब चाहे बन्दा मजाज है।

और वोह जो चाहता है वोह हो कर ही रहता है उसे रोकने वाला, रोक सकने वाला कोई नहीं है तो बन्दे को चाहिये कि उसी से मांगे, उसी से डरे, उसी से उम्मीद रखे और उस का हुक्म माने।

आयत नम्बर 84-85 : माप और तोल में चोरी न करो।

तर्जमा : ऐ मेरी कौम ! अल्लाह को पूजो कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं है और माप और तोल में कमी न करो मैं देखता हूं कि तुम लोग आसूदा हाल (सुखी मालदार) हो और मुझे तुम पर कियामत के दिन के अजाब का डर है।

ऐ मेरी कौम ! माप और वज्न इन्साफ के साथ पूरा करो और लोगों को उन की चीजें घटा कर न दो और जमीन में फसाद न फैलाओ अल्लाह का दिया हुवा जो बच रहे वोह तुम्हारे लिये बेहतर है। अगर तुम मोमिन हो हजरते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने मजीद फरमाया।

आयत नम्बर 90 : **तर्जमा :** अपने रब से मुआफी मांगो और उस की तरफ झुक जाओ, बेशक ! मेरा परवर दिगार बडा महेरबान महब्बत करने वाला है।

आयत नम्बर 115 : बेशक ! नेकियां गुनाहों को मिटा देती है

तर्जमा : नमाज काइम रखो, दिन के दोनों किनारे और रात के कुछ हिस्से में बेशक ! नेकियां गुनाहों को खत्म कर देती है नसीहत मानो और सब्र करो कि अल्लाह नेकियों का अज्र जाएअ नहीं करता।

खुलासा : आयत से पता चला के नेकियां सगीरा गुनाहों का कफ्फारा बन जाती है, चाहे वोह नेकियां नमाज हो या सदकात या जिक्रो अस्तगफार या और कुछ।

मुस्लिम शरीफ की हदीस में है कि पांचों नमाजों और एक जुमुआ से दूसरा जुमुआ तक। एक रिवायत है कि रमजान से रमजान तक येह सब कफ्फारा है उन गुनाहों के लिये जो इस के दरमियान में हुवे हो।

पारह नम्बर 13 : सूरए यूसुफ

आयत नम्बर 67 : एहतियात और हीला अपनाना।

तर्जमा : हजरते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने बेटों से फरमाया ऐ मेरे बेटो ! एक दरवाजे से मत दाखिल होना और जुदा जुदा दरवाजे से जाना मैं तुम्हें अल्लाह से नहीं बचा सकता हुक्म तो सब अल्लाह ही का है। मैं ने उसी पर भरोसा किया और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा चाहिये।

खुलासा : हजरते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام ने येह हुक्म अपने बेटों को नजरे बद से बचाने के लिये किया और साथ में येह भी कहा के भरोसा तो सिर्फ अल्लाह ही पर चाहिये।

चाहिये कि हम तदबीर करे और तवक्कुल अपने रब पर ही रखे। हजरते शैखुल इस्लाम इस बाब में फरमाते हैं कि तुम जिसे अच्छा समझो उस काम की कोशिश करो दुआ भी करो लेकिन नतीजा जो भी आए उसे अपने हक में बेहतर समझ कर अल्लाह से राजी रहो।

आयत नम्बर 101 : दुआए सय्यिदुना युसूफ عَلَيْهِ السَّلَام

तर्जमा : ऐ आस्मानो जमीन के बनाने वाले ! तू मेरा काम बनाने वाला है दुन्या में और आखिरत में मुझे मुसलमान उठा और मुझे उन से मिला जो तेरे खास कुर्ब के लाइक है।

पारह नम्बर 13 : सूरए रअद

आयत नम्बर 2 से 4 : अल्लाह की निशानियां।

तर्जमा : अल्लाह है जिस ने आस्मानों को बुलन्द किया बिगैर किसी सुतून के कि तुम देखो फिर अर्श पर इस्तवा फरमाया (जैसा कि उस की शान के लाइक है) और सूरज और चांद को मुसख्खर किया हर एक एक ठहराए हुए वा'दे पर चल रहा है अल्लाह काम की तदबीर फरमाता है और मुफस्सल निशानियां बतलाता है कि तुम अपने रब से मिलने का यकीन करो।

और वोही है जिस ने जमीन को फैलाया और उस में (पहाडों के) लंगर और नहरे बनाई और जमीन में हर किस्म के फल दो दो तरह के बनाए, वोह रात से दिन को छुपा लेता है बेशक! इस में निशानियां है ध्यान धरने वालों के लिये।

और जमीन के मुख्तलिफ कत्ए है और है पास पास और अंगूरों के बाग और खेती और खजूर के पेड एक थाले से ऊगे और अलग अलग ऊगे, सब को एक ही पानी दिया जाता है और फलो में हम एक दूसरे से बेहतर करते है, बेशक! इस में निशानियां है अक्लमन्दों के लिये।

आयत नम्बर 9 से 11 : अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई हिमायती नहीं।

तर्जमा : अल्लाह आलिमुल गैब वश्शहादा, हर छुपे और खुले को जानने वाला, सब से बडा बुलन्दी वाला, उस के लिये बराबर है, जो तुम में कोई बात आहिस्ता करे या आवाज से करे और बराबर है जो रात में छुपा हो, या जो दिन में चलता हो।

आदमी के लिये बदली वाले फिरिश्ते है उस के आगे और पीछे, कि खुदा के हुक्म से उस की हिफाजत करते है।

बेशक! अल्लाह किसी से भी अपनी दी हुई ने'मत वापस नहीं लेता जब तक आदमी (गुनाह कर के या गलती कर के) अपनी हालत न बदल दे और जब अल्लाह किसी कौम की बुराई चाहे तो वोह फिर नहीं सकती और उस के सिवा उन का कोई (हिमायती, मददगार) नहीं।

आयत नम्बर 20 से 24 : शाने मोमिन, निस्बतों की बरकत।

तर्जमा : वोह जो अल्लाह का अहद पूरा करते हैं और वा'दा कर के फिरते नहीं और वोह (रिश्तेदारों से) जोडते है जिस को जोड ने का अल्लाह ने हुक्म दिया और वोह अपने रब से डरते है और हिसाब की बुराई का अन्देशा रखते है।

और वोह जिन्हों ने अपने रब की रिजा के लिये सब्र किया और नमाज काइम रखी और हमारे दिये में से हमारी राह में छुपे और जाहिर खर्च किया।

और बुराई के बदले में भलाई कर के टालता रहा उन्हीं के लिये है आखिरत का नफ्अ रहने के लिये जन्नत के बागात, जिन में वोह दाखिल होंगे और उन के बाप दादा और बीवियां और औलाद में जो लाइक होंगे।

और फिरिश्ते हर दरवाजे से उन पर येह कहते हुए आएंगे कि तुम पर सलामती हो, तुम्हारे सब्र का बदला पिछला घर क्या ही अच्छा मिला।

आयत नम्बर 28-29 : जिक्र करने वालों का अच्छा अन्जाम।

तर्जमा : वोह लोग जो ईमान ले आए उन के दिल अल्लाह की याद से चैन पाते हैं, सुन लो अल्लाह की याद ही में दिलों का चैन है, वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन के लिये खुशी है और अच्छा अन्जाम है।

पारह नम्बर 13 : सूरए इब्राहीम

आयत नम्बर 7 : शुक्र करोंगे तो ने'मतें बढेगी।

तर्जमा : और याद करो, जब तुम्हारे रब ने सुना दिया था कि अगर शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें ज्यादा दूंगा और अगर नाशुक्री करी तो मेरा अजाब सख्त है।

आयत नम्बर 24–25 : पाकीजा बात की मिसाल।

तर्जमा : क्या तुम ने न देखा कि अल्लाह ने पाकीजा बात की कैसी मिसाल बयान फरमाई ? जैसे पाकीजा दरख्त, उस की जडे मज्बूत और शाखें आस्मान में, अपने रब के फज्ल से हर वक्त अपना फल देता है और अल्लाह लोगों के लिये मिसालें बयान करता है कि शायद वोह समझे।

आयत नम्बर 32 से 34 : अल्लाह की ने'मतें बेशुमार है।

तर्जमा : अल्लाह है जिस ने आस्मान और जमीन बनाए और आस्मान से पानी उतार कर तुम्हारे खाने के लिये कुछ फल पैदा फरमाए और तुम्हारे लिये किश्ती को मुसख्खर किया कि उस के हुक्म से दरिया में चले और तुम्हारे लिये नदियां बना दी और तुम्हारे लिये सूरज और चांद को मुसख्खर किये।

और तुम्हें बहुत कुछ मुंह मांगा दिया और **अगर तुम अल्लाह की ने'मत गिनो तो शुमार न कर सकों,** बेशक ! इन्सान बडा जालिम बडा नाशुक्रा है।

आयत नम्बर 48 : कियामत की हौलनाकियां।

तर्जमा : जिस दिन बदल दी जाएगी जमीन इस जमीन के सिवा और आस्मान और सब लोग एक अल्लाह के सामने निकल पडेंगे, जो सब पर गालिब है।

और उस दिन तुम मुजरिमों को देखोंगे कि एक दूसरे के साथ बेडियों में जकडे होंगे और उन के कुर्ते राल के होंगे और उन के चेहरों को आग ढांप लेगी और येह इस लिये कि अल्लाह हर जान को उस की कमाई का बदला दे और अल्लाह को हिसाब करते देर नहीं लगती।

पारह नम्बर 14 : सूरए हिज्र

आयत नम्बर 9 : कुरआन का निगहबान खुद अल्लाह तआला है।

तर्जमा : बेशक ! हम ने उतारा है येह कुरआन और बेशक ! हम खुद इस के निगहबान है।

खुलासा : सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام से लेकर आखिरी नबी हमारे आका व मौला सय्यिदुना मुहम्मद रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक वही के जरीए नसीहत आती रही, कानून आते रहे, किताबे नाजिल हुई लेकिन उम्मतों ने अपने नबी की तालिम को भुला दिया और अल्लाह के कलाम में तहरीफ कर डाली, रद्दो बदल करते रहे आयतें बदल दी।

बस येही एक कुरआने करीम है, जो बिल्कुल सहीह व सलामत है, येह इस लिये कि इस की हिफाजत की जिम्मेदारी खुद उस के नाजिल करने वाले रब्बे काइनात ने ली है, अब कियामत तक कोई इस में बिल्कुल रद्दो बदल नहीं कर सकता पूरी दुन्या मिल कर भी, न इस की मिसाल ला सकती है, न एक हर्फ बढा सकती है, न कम कर सकती है न बदल सकती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ

आयत नम्बर 85 : अल्लाह ने आस्मानो जमीन या कुछ भी बेकार न बनाया

तर्जमा : और हम ने आस्मान और जमीन और जो कुछ भी उन में है, येह अबस न बनाया बेशक! कियामत आने वाली है, तो तुम अच्छी तरह दरगुजर करो।

खुलासा : अल्लाह ने जिन्नात और इन्सान को अपनी इबादत के लिये पैदा फरमाया और जो कुछ दुन्या में है या कहीं भी है, उस को पैदा फरमाने में कई कई हिक्मतें और मस्लेहतें है और जिन्नो इन्सान को इस लिये कि जांचे के कौन ईमान लाता है और कौन इन्कार करता है और कियामत में हिसाब जरूर होना है।

बेशक! अल्लाह तआला इस बात से पाक है कि कोई चीज अबस या'नी बेकार पैदा करे, येह अलग बात है कि बन्दा उस की हिक्मत को समझ सके, या न समझ सके।

आयत नम्बर 87-88 : तिलावते कुरआन करो और दुन्या से बे रग्बत बने रहो।

तर्जमा : बेशक ! हम ने तुम्हें सबए मसानी (सात आयतें- सूरए फातिहा) अता फरमाई, जो दोहराई जाती है और अजमत वाला कुरआन और अपनी आंख उठा कर उस चीज को न देखो जो हम ने (मुन्किरों, काफिरों) के कुछ जोडों को बरतने को दी है और उन का कुछ गम न खाओ और मुसलमानों को अपनी रहमत के दामन में लो ।

पारह नम्बर 14 : सूरअ नहल

आयत नम्बर 10 से 17 : अल्लाह की निशानियां ।

तर्जमा : वोही है जिस ने आस्मान से पानी उतारा उस को तुम पीते हो और उस से दरख्त है जिन से चराते हो, उसी पानी से तुम्हारे लिये खेतियां उगाता है और जैतून और खजूर और अंगूर और दूसरे हर किस्म के फल पैदा करता है, बेशक ! इस में निशानियां है, ध्यान धरने वालों के लिये ।

और उसी ने तुम्हारे लिये रात और दिन मुसख्खर किये और सूरज और चांद और सितारे उसी के हुक्म के ताबेए है, बेशक ! इस में निशानियां है अक्ल वालों के लिये ।

और वोह जो तुम्हारे लिये जमीन में रंग बिरंग पैदा किये उस में निशानी हैं याद रखने वालों के लिये ।

और वोह वोही है जिस ने तुम्हारे लिये दरिया मुसख्खर किये, कि उस में से ताजा गोश्त खाते हो और उस में से गेहना निकालते हो, जिसे पहनते हो और अगर तू उस में देखे कि किश्तियां पानी चीर कर चलती है, येह इस लिये कि तुम अल्लाह का फज्ल तलाश करो और एहसान मानो ।

और उस ने जमीन में लंगर डाले कि तुम्हें लेकर न कांपे और नदियां और रास्ते बनाए कि तुम राह पाओ और निशानियां और सितारों

से वोह रास्ता पाते है, तो क्या जो सब कुछ बनाए, वोह ऐसा हो जाएगा जो कुछ भी न बनाए ? तो क्यूं तुम नसीहत नहीं मानते ?

आयत नम्बर 18 : अगर अल्लाह की ने'मत गिनो तो शुमार न कर सकोगे।

तर्जमा : और अगर तुम अल्लाह की ने'मत गिनो तो शुमार न कर सकोगे। बेशक ! अल्लाह बख्शने वाला महेरबान है और अल्लाह सब कुछ जानता है।

आयत नम्बर 43 : इल्म वालों से पूछो।

तर्जमा : ऐ लोगो ! इल्म वालों से पूछो अगर तुम नहीं जानते।

आयत नम्बर 58-59 : बेटियां अल्लाह की बहुत बडी ने'मत है।

तर्जमा : और लोगों में कुछ हैं कि जब उन में से किसी को बेटी पैदा होने की खुश खबरी दी जाए तो दिन भर उस का मुंह काला रहता है और वोह लोगों पर गुस्सा करता है और मुंह छुपाता फिरता है, उस बशारत के सबब।

क्या उसे जिल्लत के साथ रखेगा या उसे मिट्टी में दबा देगा ? अरे बहुत ही बुरा हुक्म लगाते है।

आयत नम्बर 61 : अगर अल्लाह लोगों को उन के गुनाह के सबब पकडता।

तर्जमा : और अगर अल्लाह लोगों को उन के जुल्म के सबब पकडता तो जमीन पर चलने वाला कोई न बच पाता, लेकिन उन्हें एक मुकर्रर वा'दे तक की मुद्दत देता है, फिर जब उन का वा'दा आएगा तो न एक घडी पीछे हटे और न आगे बढे।

खुलासा : येह मोहलत देना अल्लाह तआला की तरफ से बहुत बडा एहसान है, कि शायद गुनाह के बा'द आदमी तौबा कर ले, नदामत के चन्द आंसू बहा कर गुनाह की तारीकी को धो डाले और जन्नती बन जाए और जो तौबा नहीं करते वोह अपने अन्जाम को पहुंचे।

आयत नम्बर 65 से 67 : अल्लाह की निशानियां।

तर्जमा : और अल्लाह ने आस्मान से पानी उतार कर मुर्दा (वीरान, बन्जर) जमीन को जिन्दा कर दिया बेशक! इस में निशानियां हैं उन के लिये जो कान रखते है।

और बेशक! तुम्हारे लिये चौपायों में निगाह हासिल करने की जगह हैं हम तुम्हें पिलाते है खालिस दूध, जो उन के पेट में गोबर और खून के बीच में है, दूध गले से सहल उतर जाने वाला पीने वालों के लिये।

और निशानी है, खजूर और अंगूर के फलों में से कि तुम उस से नबीज बनाते हो और अच्छा रिज्क बेशक! इस में निशानी है अक्ल वालों के लिये।

आयत नम्बर 67 से 69 : शहद की मख्खी में और शहद में अल्लाह की निशानी है।

तर्जमा : तुम्हारे रब ने शहद की मख्खी को इल्हाम किया कि पहाडों में और दरख्तों में छतों में अपना घर बना फिर हर किस्म के फल में से खा और अपने रब की राह चल कि तेरे लिये नर्म व आसान है, उस के पेट से एक पीने की चीज रंगीन (शहद) निकलती है, जिस में लोगों की तन्दुरुस्ती है, बेशक! इस में निशानियां है धियान धरने वालों के लिये।

आयत नम्बर 70 : अल्लाह ने तुम को पैदा किया।

तर्जमा : और अल्लाह ने तुम को पैदा किया, फिर तुम्हारी जान कब्ज करेगा और तुम में से कोई सब से नाकिस उम्र की तरफ फेरा जाता है, कि जानने के बा'द कुछ न जाने।

खुलासा : अक्सर बुढ्ढे, बुढापे में बच्चों के मानिन्द बन जाते है उन के हवास सब बेकार निकम्मे हो जाते है।

हजरते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फरमाया कि मुसलमान अल्लाह के फज्ल से इस से महफूज है, लम्बी उम्र और जिन्दगी की

बका से उन्हें अल्लाह तआला की बारगाह में करामत और मआरिफत में जियादती हासिल होती हैं।

येह भी कहा गया, कि जिस ने कुरआने करीम पढा तो वोह इस निकम्मी उम्र की तरफ न पहुंचेगा, कि इल्म के बावजूद बे इल्म हो जाए।

आयत नम्बर 79 : खुद तुम्हारी जात में और परिन्दों में अल्लाह की निशानी

तर्जमा : और अल्लाह ने तुम्हारी मांओं के पेट से तुम्हें पैदा किया कि कुछ न जानते थे और तुम्हें कान और आंख और दिल दिये कि तुम एहसान मानो।

क्या उन्हों ने परिन्दे न देखे कि अल्लाह के हुक्म से आस्मान की फजाओं में मुअल्लक है, उन्हें कोई नहीं रोकता सिवाए अल्लाह के, बेशक! इस में निशानियां है अक्ल वालों के लिये।

आयत नम्बर 89 : हुजूर सब पर गवाह है।

तर्जमा : और जिस दिन (कियामत के दिन) हम हर गिरौह में से एक गवाह उठाएंगे कि उन पर गवाही दे और ऐ महबूब! हम तुम्हें उन सब पर गवाह बना कर लाएंगे।

आयत नम्बर 89 : येह कुरआन हर चीज का रौशन बयान है

तर्जमा : और ऐ महबूब! हम ने तुम पर येह कुरआन उतारा कि उस में हर चीज का रौशन बयान हैं और हिदायत और रहमत और बशारत है मुसलमानों के लिये।

आयत नम्बर 90, 91 : अल्लाह हमें क्या हुक्म फरमाता है?

तर्जमा : बेशक! अल्लाह तुम्हें हुक्म फरमाता है इन्साफ और नेकी और रिश्तेदारों को देने का और मनाई फरमाता है बेहयाई और बुरी बात और सरकशी से, तुम्हें नसीहत फरमाता है कि तुम धियान धरो और अल्लाह का अहद पूरा करो और जब कौल बान्धो (तो अहद शिक्नी, वा'दा खिलाफी न करो)।

आयत नम्बर 97 : अल्लाह "हयातन तय्यिबा" पाकीजा जिन्दगी अता करेगा।

तर्जमा : जो अच्छे आ'माल करे चाहे मर्द हो चाहे औरत और वोह हो मुसलमान, तो हम उसे अच्छी जिन्दगी जिलाएंगे और जरूर उन्हें उन के सब से अच्छे काम के लाइक अज्र देंगे।

खुलासा : सब्र और तक्वा परहेजगारी अपनाने वालों को अल्लाह तआला दुन्या में हलाल रिज्क और कनाअत अता फरमाएगा और आखिरत में जन्नत की ने'मतें अता फरमाएगा और येह "हयाते तय्यिबा" है।

आयत नम्बर 98 से 100 : शैतान मुश्रिकों का दोस्त हैं।

तर्जमा : तो जब तुम कुरआन पढों तो अल्लाह की पनाह मांगो शैतान मर्दूद से, बेशक! उस का कोई काबू उन पर नहीं है जो ईमान लाए और अपने रब ही पर भरोसा करते है, उस का काबू तो सिर्फ उन्हीं पर है जो उस से दोस्ती करता है और उसे शरीक ठहराते है।

आयत नम्बर 127-128 : ऐ महबूब ! सब्र करो।

तर्जमा : ऐ महबूब ! तुम सब्र करो और तुम्हारा सब्र करना अल्लाह ही की तौफीक से है और उन फरेबियों का गम न खाओ और दिल तंग न हो, बेशक! अल्लाह उन के साथ है जो डरते हैं और जो नेकियां करते हैं।

पारह नम्बर 15 : सूरए बनी इसराईल

आयत नम्बर 23 से 32 : अल्लाह तुम्हें क्या हुक्म फरमाता है ?

तर्जमा : अल्लाह के सिवा, अल्लाह के साथ दूसरा खुदा न ठहरा कि तू मजम्मत किया हुवा बेकस (बे सहारा) बैठा रहेगा।

और तुम्हारे रब ने हुक्म फरमाया कि उस के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो, अगर तेरे सामने उन में से एक या दोनों बुढापे तक पहुंच जाए तो उन को उफ तक न कहना, न उन

को जिडकना और उन से ता'जीम की बात कह और उन के लिये आजिजी का बाजू बिछा नर्म दिली से।

और अर्ज कर कि ऐ मेरे रब! तू उन दोनों पर रहम कर जैसा कि उन दोनों ने मुझे बचपन में पाला बेशक! तुम्हारा रब बखूबी जानता है जो तुम्हारे दिलों में हैं अगर तुम लाइक हुए तो बेशक! वोह तौबा करने वालों को बख्शने वाला हैं।

और रिश्तेदारों को उन का हक दे और मिस्कीनों को और मोहताजों को और फुजूल न उडा, बेशक! फुजूल खर्च करने वाले शैतान के भाई है और शैतान अपने रब का बडा नाशुक्रा है और अगर तू सवाल करने वालों को उस वक्त न दे सके, अपने रब की रहमत के इन्तिजार में, तो उन से आसान बात कह और अपना हाथ (कन्जूस की तरह) बिल्कुल बंधा हुवा न रख। और न बिल्कुल खुला छोड दे, कि तू बैठा रहे मलामत किया हुवा थका हुवा।

बेशक! तुम्हारा रब जिसे चाहे बहुत ज्यादा रिज्क अता करे और जिसे चाहे एक अन्दाजे भर कर देता है बेशक! वोह अपने बन्दो का खबरदार है।

और अपनी औलाद को मुफ्लिसी के डर से कत्ल न करो हम उन्हें भी रोजी देंगे और तुम को भी देंगे। और बेशक! उन का कत्ल बहुत बडा गुनाह है और बेशक! बदकारी से दूर रहो बेशक! वोह बेहयाई है और बहुत बुरी राह है।

आयत नम्बर 35 : वज्न और माप में खियानत न करो।

तर्जमा : और नापो तो पूरा नापो और बराबर तराजू से तोलो येह बेहतर है और इस का अन्जाम अच्छा।

आयत नम्बर 36 से 38 : मोमिनीन को अल्लाह की नसीहतें।

तर्जमा : उस बात के पीछे न पड जिस का तुझे इल्म नहीं बेशक! कान और आंख और दिल इन सब से सवाल होने वाला है और

जमीन पर इतराके मत चल, बेशक! तू न जमीन को चीर डालेगा और न तू बुलन्दियों में पहाड जैसा बन जाएगा, येह जो कुछ कहा गया उन में की बुरी बातें तेरे रब को नापसन्द है।

आयत नम्बर 70 : अल्लाह ने बनी आदम को इज्जत दी।

तर्जमा : और बेशक! हम ने औलादे आदम को इज्जत दी और उन को जमीन में और पानी पर सवार किया और पाक चीजों से उस को रोजी दी और उन को अपनी बहुत सी मख्लूक पर अफ्जल किया?

आयत नम्बर 71-72 : रोजे कियामत आ'माल नामा हाथ में दिया जाएगा।

तर्जमा : और जिस दिन हर जमाअत को उस के इमाम के साथ बुलाएंगे, तो जो अपना आ'माल नामा दाहीने हाथ में दिया गया येह लोग अपना आ'माल नामा (खुशी खुशी) पढेंगे और तागे भर उन का हक न दबाया जाएगा।

और जो इस जिन्दगी में अन्धा है, वोह आखिरत में भी अन्धा है और, और भी ज्यादा गुमराह है।

खुलासा : तमाम बन्दों को उस का आ'माल नामा उन के हाथ में दिया जाएगा, जो मोमिन होगा उस को उस का नामए आ'माल सीधे हाथ में दिया जाएगा, वोह खुश खुश अपना आ'माल नामा पढेगा और काफिर बद नसीब, गुनहगार, काफिर का आ'माल नामा उल्टे हाथ में दिया जाएगा, वोह कहेगा, हाए इस किताब को क्या हुवा? इस ने न कोई छोटा गुनाह छोडा, न बडा छोडा।

और येह इस दुन्या की जिन्दगी में अन्धा है, या'नी ईमान न लाने के सबब से अन्धा है, वोह जो रसूल व किताब का इन्कार करता रहा, वोह उस दुन्या या'नी आखिरत में भी अन्धा है।

आयत नम्बर 82 : कुरआन में शिफा है।

तर्जमा : और हम कुरआन में वोह चीज उतारते है, जो ईमान वालों के लिये शिफा और रहमत है और उस से जालिमों को तो नुक्सान ही बढता है।

आयत नम्बर 88-89 : कुरआन की शान येह है कि इस की नक्ल नामुम्किन है

तर्जमा : तुम फरमाओ अगर सारे आदमी और जिन्नात मिल कर, एक हो कर इस कुरआन के मानिन्द लाना चाहे तब भी इस की मिस्ल न ला सकेंगे, चाहे उन में सब एक दूसरे के मददगार हो जाए।

और बेशक! हम ने इस कुरआन में आदमी के लिये हर किस्म की मिसाले बयान फरमाई, पर अक्सर आदमी ईमान न लाए और नाशुक्री करते रहे।

आयत नम्बर 97 : कियामत की हौलनाकियां, (अन्धा उठाया जाएगा)।

तर्जमा : और हम कियामत के दिन आदमी को (नाफरमान काफिरों को) मुंह के बल अन्धा उठाएंगे, अन्धे, बहरे गुंगे उन का ठिकाना जहन्नम है।

जब कभी उस की आग बूझ ने पर आएगी तो हम उसे और भडका देंगे, येह उन की सजाएं है, इस लिये कि उन्हों ने हमारी आयतों से इन्कार किया।

आयत नम्बर 100 : आदमी बडा कन्जूस है।

तर्जमा : ऐ महबूब! तुम फरमाओ, ऐ लोगो! अगर तुम लोग मेरे रब की रहमत के खजानों के मालिक होते तो उन्हें भी रोक लेते, इस डर से कि कहीं खर्च न हो जाए और आदमी बडा कन्जूस है।

आयत नम्बर 104-105 : कुरआन रुक रुक कर पढो।

तर्जमा : और हम ने कुरआन को हक ही के साथ उतारा और हक ही के लिये उतारा है। और ऐ महबूब! हम ने तुम्हें खुशी सुनाता और

डराने वाला बना कर भेजा और कुरआन हम ने थोडा थोडा जुदा जुदा कर के उतारा कि तुम लोगों पर रुक रुक कर पढो और हम ने उसे ब तदरीज रह रह कर उतारा।

खुलासा : अल्लाह येह चाहता है कि कुरआन रुक रुक कर पढा जाए, ताकि लोग समझे, उस के मा'ना व मफ्हूम में गौर करे उस से नसीहत हासिल करे, उस पर अमल करे। سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

पारह नम्बर 15 : सूरए कहफ

आयत नम्बर 28 : दुन्या की तरफ से बे रग्बत बने रहो।

तर्जमा : अपनी जान उन से मानूस कर, जो सुब्ह शाम अपने रब को पुकारते है और उस की रिजा चाहते है और तुम्हारी आंख उन्हें छोड कर, उन पर न पडे। क्या तुम दुन्या की जिन्दगी का सिंगार चाहोगे ? और तुम उस का कहा न मानों जिस का दिल हम ने अपनी याद से गाफिल कर दिया और वोह अपनी ख्वाहिश के पीछे चला और उस का काम हद से बढ गया।

आयत नम्बर 46 : माल और बेटे।

तर्जमा : तुम्हारा माल और तुम्हारे बेटे सिर्फ इस दुन्या का सिंगार है और बाकी रहने वाली अच्छी बातें, या'नी नेक आ'माल, उन का सवाब तुम्हारे रब के यहां अच्छा है और येही वोह चीजें है। जो उम्मीद रखने के लाइक हो।

आयत नम्बर 54 : आदमी बडा झगडा खोर है।

तर्जमा : और हम ने इस कुरआन में हर किस्म की मिसालें तरह तरह से बयान फरमा दी और आदमी हर चीज से बढ कर बडा झगडालू हैं।

पारह नम्बर 16 : सूरए कहफ

आयत नम्बर 103 से 106 : सब से ज्यादा नाकिस अमल किस के ?

तर्जमा : ऐ महबूब ! तुम फरमाओ क्या हम तुम्हें बता दे कि सब से ज्यादा नाकिस अमल किस के है ? उन के है जिन की सारी की

सारी कोशिश दुन्या कमाने में, दुन्या की जिन्दगी में गुम गई और वोह समझ रहे हैं कि वोह अच्छा कर रहे है, वोह लोग जिन्हों ने अपने रब की आयतों का और उस से मुलाकात का यकीन न किया, तो उन का किया धरा सब बेकार हो गया और हम उन के लिये कियामत में कोई तोल (वज्न) न करेंगे, येह उन का बदला हैं जहन्नम, येह इस लिये कि उन्हों ने कुफ्र किया और मेरी निशानियां और मेरे रसूलों से मजाक की, ठठ्ठा किया।

आयत नम्बर 107 से 110 : जिसे अपने रब से मुलाकात का शौक हो

तर्जमा : बेशक ! जो लोग ईमान ले आए और नेक आ'माल किये तो जन्नतुल फिरदौस उन की मेहमानी है, वोह उस में हमेशा रहेंगे और वहां से निकलना न चाहेंगे।

तुम फरमा दो अगर समुन्दर मेरे रब की बातों के लिये सियाही बन जाए, तो जरूर समुन्दर खत्म हो जाएंगे और मेरे रब की बातें खत्म न होगी, अगर्चे हम वैसा ही (और समुन्दर) उस की मदद के लिये ले आए।

तुम फरमाओ, कि जाहिर बशरी शक्लो सूरत में तो मैं तुम जैसा हूं, बस मुझे वही आती है कि तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है तो जिसे अपने रब की मुलाकात की उम्मीद हो, उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे।

पारह नम्बर 16 : सूरए मरयम

आयत नम्बर 71 : पुल सिरात।

तर्जमा : और ऐ लोगो ! तुम में से कोई ऐसा नहीं कि जिन का गुजर दोजख पर न हो, तुम्हारे रब के नज्दीक येह तै शुदा बात है। फिर हम डरने वालों को बचा लेंगे और जालिमों को छोड देंगे कि घुटनों के बल उस में गिरें।

खुलासा : जहन्नम के ऊपर एक पुल है, बाल से ज्यादा बारीक और तल्वार से ज्यादा तेज, तमाम इन्सानों को उस पर से गुजरना

पडेगा, ईमान वाले अल्लाह के फज्ल से बच कर निकल जाएंगे और बद बख्त जालिम जहन्नम के हवाले होंगे। अल्लाह की पनाह।

आयत नम्बर 96 : मोमिनों की वलियों से महब्बत और आपसी महब्बत

तर्जमा : बेशक ! वोह लोग जो ईमान ले आए और अच्छे काम किये अन्करीब अल्लाह उन के लिये महब्बत कर देगा।

पारह नम्बर 16 : सूरए ताहा

आयत नम्बर 25 से 28 : हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ।

तर्जमा : अर्ज की ऐ मेरे रब ! मेरे लिये मेरा सीना खोल दे और मेरे लिये मेरा काम आसान कर और मेरी जबान की गांठ खोल दे, कि वोह मेरी बात समझे।

आयत नम्बर 55 : बन्दे को मिट्टी से बनाया और आखिर मिट्टी में मिलेगा।

तर्जमा : हम ने जमीन ही से तुम्हें बनाया और उसी में फिर ले जाएंगे (मरने के बा'द) और फिर उसी से तुम्हें दोबारा (कियामत के दिन) निकालेंगे।

आयत नम्बर 99 से 111 : कियामत की हौलनाकियां।

तर्जमा : तुम्हारा मा'बूद तो सिर्फ वोही अल्लाह एक है, जिस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं, हर चीज को उस के इल्म ने घेरा हुवा है हम ऐसे ही तुम्हारे सामने अपनी आयतें बयान करते है और हम ने तुम को अपने पास से एक जिक्र (सय्यिदुल अम्बिया हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह, या कुरआने करीम) अता फरमाया तो जो भी उस से मुंह फेरे तो वोह कियामत के दिन एक बोझ उठाएगा, वोह उस में हमेशा रहेगा और वोह कियामत के दिन उन के हक में क्या ही बुरा बोझ होगा।

जिस दिन सूर फूंका जाएगा और हम उस दिन मुजरिमों को उठाएंगे नीली आंखें और आपस में चुपके चुपके कहेंगे "हम दुन्या में सिर्फ दस दिन रहें" हम अच्छी तरह जानते है, जो वोह कहेंगे और उन में का सब से बेहतर राय वाला कहेगा। "तुम सिर्फ एक ही दिन रहे थे।"

और तुम से पहाडों के बारे में पूछते हैं, तुम फरमाओ पहोडों को मेरा रब रेजा रेजा कर के छोडेगा कि तुझे उस में ऊंचा नीचा कुछ भी नजर न आए।

उस दिन पुकारने वाले (फिरिश्तें) पीछे दौडेंगे उस में कजी न होगी और सब आवाज रहमान के हुजूर पस्त हो कर रह जाएंगी, तो तू न सुनेगा लेकिन बहुत आहिस्ता आवाज।

उस दिन किसी की शफाअत काम न आएगी, सिवाए उस की जिस को रहमान ने इज्न दे दिया है और उस की बात को पसन्द फरमाई हो, वोह जानता है जो कुछ आगे होने वाला है और जो कुछ पीछे हो चुका हैं और उन का इल्म उसे नहीं घेर सकता और सब मुंह झुक जाएंगे उस जिन्दा "हय्युल कय्यूम" के हुजूर में।

खुलासा : तो येह है अहवाले कियामत। जिस को जरूर होना है तो अक्लमन्द वोह है जो उस घडी के पेश आने से कब्ल उस के मिलने की तय्यारी करे और नेक बन जाए, परहेजगारी अपना ले और रब की नाफरमानियों से बचे।

आयत नम्बर 125 : जो अल्लाह की याद से मुंह फेरे।

तर्जमा : और जिन्हों ने मेरी याद से मुंह फेरा, तो बेशक! उस के लिये तंग जिन्दगानी है और हम उसे कियामत के दिन अन्धा उठाएंगे।

खुलासा : जिस ने भी अल्लाह से, उस के जिक्र से मुंह फेरा और निडर, बेखौफ बन गया उस के लिये दुन्या में तंग जिन्दगानी है इस तरह के, हिदायत की पैरवी न कर सकने की वज्ह से बुरे आ'माल और हराम कमाई व हिर्स में फंस जाए और कनाअत से किनाराकश हो जाए, दुन्या में कितना भी मिले उस को सुकून न मिले, दिल ज्यादा और ज्यादा और ज्यादा के चक्कर में लगा रहे, शुक्र न कर सके और "**हयाते तय्यिबा**" और "**मताए हसन**" से महरूम रहे।

और कब्र की तंग जिन्दगानी इस तरह कि कब्र उस को सख्ती से दबाए, जिस से एक तरफ की पस्लियां दूसरी तरफ आ जाए, उस की कब्र में सांप, बिच्छू, अज्दहे मुसल्लत किये जाए और उस पर आग का अजाब हो।

और आखिरत की तंग जिन्दगानी इस तरह कि जन्नत से महरूम कर दिया जाए और जहन्नम के हवाले कर दिया जाए जहां खाने को थुहर का बदबू दार दरख्त और पीने को खोलता हुवा पानी और जहन्नमियों के जख्मों से टपकता हुवा पीप दिया जाए।

और दीन में तंग जिन्दगानी येह कि नेकी करने की तौफीक छीन ली जाए, आदमी हराम में फंस जाए, वगैरा।

कियामत के दिन वोह बन्दा जब अन्धा उठेगा, तो कहेगा या रब ! मुझे अन्धा क्यूं उठाया ? दुन्या में तो मैं आंख वाला था तो रब फरमाएगा। तेरे पास हमारे नबी हमारी निशानियां लेकर आए थे, तूने उसे भुला दिया ऐसे ही आज तेरी कोई खबर लेने वाला नहीं।

आयत नम्बर 131 : काफिरों की दुन्यवी खूब सूरती की तरफ न देख।

तर्जमा : अपनी आंखें उस तरफ न फेलाओ, जो हम ने दुन्या की चीज काफिर जोडों को बरतने के लिये दी है, येह इस दुन्या की ताजगी है, कि हम उस के सबब उन को फित्ने में डालें और तेरे रब का रिज्क उस से बहुत अच्छा और देर तक रहने वाला है।

पारह नम्बर 17 : सूरए अल अम्बिया

आयत नम्बर 1 : कियामत नज्दीक ही है।

तर्जमा : लोगों का हिसाब नज्दीक आ गया और लोग हैं कि उस से गफ्लत में मुंह फेरे हुए हैं।

आयत नम्बर 35 : कुल्लु नफ्सीन जाइकतुल मौत।

तर्जमा : हर जान को मौत का मजा चखना है और हम तुम्हारी आजमाइश करते है, भलाई से और बुराई से, ताकि तुम्हारी जांच (कसोटी) हों। और तुम्हें हमारी ही तरफ लौट कर आना है।

पारह नम्बर 17 : सूरतुल हज

आयत नम्बर 5 : पैदाइशे इन्सान।

तर्जमा : ऐ लोगो ! अगर तुम्हें कियामत के दिन जीने में कुछ शक हो, तो गौर करो कि हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा फरमाया, फिर पानी की बूंद (मनी) से, फिर खून की फटक से फिर गोश्त की बोटी बनाया, बनी या बे बनी, ताकि तुम्हारे लिये अपनी निशानियां जाहिर फरमाए। और हम तुम्हें माओं के पेट में ठहराए रखते है एक मुकर्रर वक्त तक, फिर तुम्हें बच्चा बना कर निकालते है, इस लिये कि तुम जवानी को पहुंचो और तुम में से कोई छोटी उम्र में ही मर जाता है और कोई सब से निकम्मी उम्र तक डाला जाता है कि जानने के बा'द भी कुछ न जाने।

आयत नम्बर 38 : अल्लाह मुसलमानों की बलाएं टालता है।

तर्जमा : ऐ महबूब ! मुसलमानों को खुश खबरी सुनाओ और कहो बेशक! अल्लाह बलाएं टालता है मुसलमानों की, बेशक! अल्लाह कोई बडे दगाबाज, नाशुक्रे को दोस्त नहीं रखता।

आयत नम्बर 40 : जो दीने खुदा की मदद करेगा अल्लाह उस की मदद करेगा।

तर्जमा : बेशक ! अल्लाह जरूर मदद फरमाएगा उस की जो उस के दीन की मदद करेगा।

पारह नम्बर 18 : सूरए मुअमिनून

आयत नम्बर 1 से 11 : शाने मोमिन

तर्जमा : बेशक ! कामयाब हुए, वोह ईमान वाले जो अपनी नमाज में गिडगिडाते हैं और वोह जो किसी बेहूदा बात की तरफ नहीं झुकते हैं और वोह जकात देते रहते हैं और वोह जो अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करते है सिवाए अपनी बीबियों और शरई बांदियां, इन दो के सिवाए सोहबत नहीं करते और इन दो के सिवाए जो भी हैं वोह हद से बढ जाना है।

और वोह जो अपनी अमानतें और अपने अहद (वा'दे कौल करार) की हिफाजत करते है और जो अपनी नमाजों की निगहबानी करते हैं येही लोग फिरदौस की मीरास पाएंगे और हमेशा उस में रहेगे।

आयत नम्बर 12 से 16 : पैदाइशे इन्सान।

तर्जमा : हम ने आदमी को चुनी हुई मिट्टी से बनाया फिर उसे पानी की बूंद किया, एक मज्बूत ठहराव में (शिकमे मादर में हमल की सूरत में) रखा, फिर हम ने पानी की बूंद को खून की फटक किया, फिर खून की फटक को गोश्त की बोटी बनाया, फिर गोश्त की बोटी को हड्डियां बनाया और उन हड्डियों पर गोश्त चढाया, फिर उसे और सूरत में उठान दी, तो बडी बरकत वाला है वोह अल्लाह सब से बेहतर बनाने वाला।

फिर उस के बा'द तुम सब लोग जरूर मरने वाले हो फिर तुम सब कियामत के दिन उठाए जाओगे।

खुलासा : आदमी को चाहिये कि अपनी खिल्कत में गौरो फिक्र करे और खुद अपने अन्दर और काएनात में अल्लाह तआला की निशानियां देखे और समझे कि, जरूर मरना है और कियामत में अल्लाह व रसूल को मुंह दिखाना है सो डरे और मरने से पहले अच्छे आ'माल करे।

आयत नम्बर 51 : अपनी खुराक पाक करो।

तर्जमा : ऐ रसूलो ! पाकीजा चीजें खाओ और नेक अमल करो कि मैं तुम्हारे आ'माल को जानता हूं।

आयत नम्बर 57 से 60 : मोमिन अपने रब से बहुत डरता है।

तर्जमा : बेशक ! वोह जो अपने रब के डर से कांपते है, सहमें हुए है और वोह जो अपने रब की आयतों पर ईमान लाते है और वोह जो अपने रब का किसी को शरीक नहीं करते और वोह जो देते है, जो कुछ देते है और उन के दिल डरे हुए है कि उन को अपने रब की तरफ फिरना है येह लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और येही सब से पहले उन्हें पाएंगे।

आयत नम्बर 115 से 118 : अल्लाह ने तुम्हें बेकार नहीं बनाया।

तर्जमा : क्या तुम येह समझ बैठे हो कि अल्लाह ने तुम्हें बेकार बनाया है ? और तुम्हें हमारी तरफ लौट कर आना नहीं हैं।

बहुत बुलन्दी वाला है अल्लाह सच्चा बादशाह कोई मा'बूद नहीं सिवा उस के, वोह इज्जत वाला अर्श का मालिक और जो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे मा'बूद को पूजे, जिस की उस के पास कोई सनद नहीं है तो उस का हिसाब उस के रब के यहां है बेशक ! काफिरों का छुटकारा नहीं।

तुम अर्ज करो, ऐ मेरे रब ! बख्श दे और रहम कर और तू सब से बेहतर रहम फरमाने वाला है।

पारह नम्बर 18 : सूरए नूर

आयत नम्बर 21 : ऐ ईमान वालो ! शैतान के नक्शे कदम पर न चलो।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! शैतान के नक्शे कदम पर न चलो और जो शैतान के पीछे चला तो वोह तो बेहयाई और बुरी बात ही की तरफ बुलाएगा और अगर अल्लाह का फज्ल और उस की रहमत तुम पर न होती तो तुम में से कोई भी कभी भी पाक न होता, हां, अल्लाह पाक बना देता है जिसे चाहे और अल्लाह सुनता और जानता है।

आयत नम्बर 22 : नेकियों से हाथ न रोको।

तर्जमा : और कसम न खाए, वोह लोग जो तुम में गुन्जाइश वाले हैं, (जो साहिबे माल हैं) रिश्तेदारों, मोहताजों, मिस्कीनों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को देने की।

और चाहे कि दूसरों को मुआफ करे और दरगुजर करे क्या तुम्हें येह बात पसन्द नहीं कि अल्लाह तुम्हें मुआफ करे और अल्लाह बख्शने वाला महेरबान है।

आयत नम्बर 30 : मुसलमान मर्द अपनी निगाहें नीचे रखें।

तर्जमा : मुसलमान मर्दों को हुक्म दो कि अपनी निगाहें कुछ

नीची रखे और अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करे येह उन के लिये बहुत पाक हैं।

खुलासा : मुसलमान मर्दों के लिये येह जाइज नहीं है कि ना महरम औरतों को देखे, या उन से मेल जोल रखे और चाहिये कि बदकारी, या'नी जिना से बचता रहे और अपनी पाकिजगी की हिफाजत करे।

आयत नम्बर 31 : मुसलमान औरतें अपनी निगाहे नीची रखें।

तर्जमा : और मुसलमान औरतों को हुक्म दो कि वोह अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी पाकीजगी की हिफाजत करे और गैरों पर अपना बनाव सिंगार जाहिर न करें।

आयत नम्बर 37-38 : शाने मोमिन

तर्जमा : वोह मर्द जिन्हें कोई सौदा या खरीदो फरोख्त अल्लाह की याद से और नमाज बरपा रखने से और जकात देने से गाफिल नहीं करता और वोह डरते है उस (कियामत के) दिन से जिस में उलट जाएंगी दिल और आंखें।

ताकि अल्लाह उन को बदला दे उन के सब से बेहतर काम का और अपने फज्ल से उन्हें ज्यादा इन्आम अता करे और अल्लाह जिसे चाहे उसे बे हिसाब रोजी देता है।

खुलासा : और येह दिल और आंखों का उलट जाना कियामत के दिन की हौल या'नी दहशत की वज्ह से होगा, कि वोह दिन बडा ही सख्त है उस रोज बस वोही बच सकता है, जिन पर अल्लाह रहम फरमाए।

पारह नम्बर 18 : सूरए फुरकान

आयत नम्बर 9 : हुजूर के दुश्मन गुमराह हुए और भटक गए।

तर्जमा : ऐ महबूब ! देखो तुम्हारे लिये कैसी कैसी मिसाले घड रहे है, तो वोह गुमराह हो गए, अब कोई राह नहीं पाने वाले।

खुलासा : रसूलुल्लाह के गुस्ताखों से तौबा की तौफीक छीन ली जाती है येह लाख दलीलें सुने। या निशानियां देखे येह अब राहे रास्त

पर पलट कर नहीं आ सकतें, येह अपनी जिद पर अडे रहते है और आखिर कार वासिले जहन्नम हो जाएंगे। अल्लाह की पनाह।

आयत नम्बर 11 से 14 : कियामत को झूटलाने वालों का अन्जाम।

तर्जमा : बल्कि येह तो कियामत को झूटलाते है और जो कियामत को झूटलाए हम ने उन के लिये भडकती हुई आग तय्यार कर रखी है जब वोह उन्हें दूर जगह से देखेगी, तो उस का जोश मारना और चिंघाडना सुनेंगे और जब किसी तंग जगह में डाले जाएंगे जंजीरों में जकडे हुए। तो वहां मौत मांगेगे, उन से कहा जाएगा आज एक मौत न मांगो और बहुत सी मौत मांगों।

पारह नम्बर 19 : सूरए फुरकान

आयत नम्बर 44 से 50 : अल्लाह की निशानियां

तर्जमा : ऐ महबूब : क्या तुम ने न देखा ! कि कैसा फैलाया साया और अगर चाहता तो उसे रुका हुवा कर देता फिर हम ने सूरज को उस पर दलील किया, फिर हम ने आहिस्ता आहिस्ता उसे अपनी तरफ समेटा और वोही है जिस ने रात को तुम्हारे लिये पर्दा किया और नींद को आराम और दिन बनाया उठने के लिये।

और वोही है जिस ने हवाए भेजी अपनी रहमत के आगे खुश खबर सुनाती और हम ने आस्मान से पाक करने वाला पानी उतारा, ताकि हम उस से किसी मुर्दा शहर को जिन्दा कर दे और उसे बहुत से जानवर और इन्सानों को पीलाया और बेशक ! हम ने पानी के फेरे रखे कि वोह धियान धरे तो बहुत से लोगों ने न माना।

आयत नम्बर 53 : जिस ने दो दरियाओं के बीच में आड रखी।

तर्जमा : अल्लाह वोही है जिस ने मिले हुए रवां किये दो समुन्दर, एक मीठा है एक दम मीठा और दूसरा खारा एक दम कडवा और दोनों के बीच में आड रखी।

खुलासा : येह कितनी बडी निशानी है, अल्लाह तबारक व तआला की कुदरत की, कि आपस में मिले हुए होते भी मिलते नहीं, इन्सान इस को देखता है, फिर भी इन्कार ही करता रहता है।

आयत नम्बर 63 से 76 : रहमान के खास बन्दे कौन ?

तर्जमा : रहमान के वोह बन्दे जो जमीन पर आहिस्ता चलते है और जब जाहिल उन से बात करे तो कहते है बस सलाम (येह सलाम मुतारिकत है, या'नी जुदा होने का सलाम।)

और वोह रात काटते हैं अपने रब के लिये सजदे और कियाम में और वोह अर्ज करते रहते है, ऐ हमारे रब ! हम से दूर रख जहन्नम का अजाब, कि बेशक ! वोह पलटने की बहुत बुरी जगह है

और जब वोह खर्च करते है। तो न हद से ज्यादा खर्च करे, कि न कन्जूसी करे, बल्कि इन दोनों के दरमियान ए'तिदाल पर रहे।

और वोह जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे को शरीक नहीं करते और उस जान को जिस की अल्लाह ने हुरमत रखी, उसे नाहक नहीं मारते और वोह बदकारी नहीं करते।

और जो येह काम करे, वोह सजा पाएगा, कियामत के दिन उस पर अजाब पर अजाब बढाया जाएगा और हमेशा उस में जिल्लत से रहेगा।

सिवाए उन के जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छे काम करे तो ऐसों की बुराइयों को अल्लाह तआला भलाइयों से बदल देगा और अल्लाह बख्श ने वाला महेरबान है।

और जो तौबा करे और अच्छा काम करे तो वोह अल्लाह की तरफ रुजूअ लाया। जैसी जाहिये थी और जो झूटी गवाही नहीं देते और जब बेहूदा पर गुजरते है तो अपनी इज्जत संभाले गुजर जाते है।

और वोह कि जब उन्हें उन के रब की आयतें याद दिलाई जाए तो उन पर बहरे, अन्धे बन कर नहीं गिरते और वोह जो अर्ज करते है, ऐ

हमारे रब ! हमें हमारी बीबियां और औलाद से आंखों की ठंडक अता कर और हमें परहेजगारों का पेशवा बना।

उन को जन्नत का सब से ऊंचा बाला खाना (जरुखे) इन्आम में मिलेगा, उन के सब्र का बदला और वहां मुजरे और सलाम के साथ उन को वेलकम किया जाएगा हमेशा उस में रहेंगे, क्या अच्छी बसने और ठहरने की जगह (जन्नत) है।

पारह नम्बर 19 : सूरए शुअरा

आयत नम्बर 78 से 85 : मुनाजाते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام

तर्जमा : वोह जिस ने मुझे पैदा किया वोही मुझे राह देगा और वोही मुझे खिलाता है और पीलाता है।

और जब मैं बीमार होता हूं तो वोह मुझे शिफा देता है और वोही मुझे वफात देगा, फिर मुझे जिन्दा करेगा और वोह जिस की मुझे आस लगी है, कि वोह मेरी खताएं कियामत के दिन बख्शेगा, ऐ मेरे रब ! मुझे हुक्म अता कर और मुझे उन से मिला दे जो तेरे कुर्बे खास के लाइक हैं और पीछलों में मेरी सच्ची नामवरी रख और मुझे उन में से कर जो चैन के बाग के वारिस हैं।

आयत नम्बर 87 से 89 : कियामत के दिन न माल काम आएगा न औलाद

तर्जमा : ऐ मेरे रब ! मुझे रुस्वा न करना उस दिन जिस दिन न माल काम आएगा न औलाद मगर वोह जो अल्लाह के हुजूर हाजिर हुवा "कल्बे सलीम" ले कर।

आयत नम्बर 181 से 184 : वज्न और माप में चोरी न करो

तर्जमा : नाप पूरा करो और घटाने वालों में न हो और सीधी तराजू से तोलो और लोगों की चीज कम कर के न दो और जमीन में फसाद फेलाते न फिरो और उस से डरो जिस ने तुम्हें पैदा किया।

पारह नम्बर 19 : सूरए नम्ल

आयत नम्बर 19 : दुआए हजरते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام

तर्जमा : अर्ज की ऐ मेरे रब ! तू मुझे तौफीक दे कि मैं तेरे एहसान का शुक्र करूं, जो तूने मुझ पर और मेरे मां बाप पर किये और येह कि मैं वोह नेक काम करूं जो तुझे पसन्द आए और मुझे अपनी रहमत से उन बन्दों में शामिल कर जो तेरे कुर्बे खास के लाइक है।

पारह नम्बर 20 : सूरए कसस

आयत नम्बर 52 : मोमिन कैसे होते हैं ?

तर्जमा : और वोह जो भलाई से बुराई को टालते हैं और हमारे दिये में से हमारी राह में कुछ खर्च करते हैं और जब बेहूदा बात सुनते हैं। तो उस से किनारा कर लेते हैं और कहते है **"हमारे लिये हमारे अमल और तुम्हारे लिये तुम्हारे अमल"** तुम पर सलाम, हम जाहिलों के मुंह नहीं लगते।

पारह नम्बर 20 : सूरए अन्कबूत

आयत नम्बर 2-3 : आजमाइश जरूर होगी।

तर्जमा : क्या लोग येह समझ बैठे है कि, सिर्फ इतना कह लेने पर छोड दिये जाएंगे कि हम ईमान ले आए ? और उन की आजमाइश नहीं होगी, बेशक ! हम ने उन से पहले वालों को जांचा, तो जरूर अल्लाह सच्चों को देखेगा और जरूर झूटों को देखेगा।

आयत नम्बर 8 : अल्लाह ने ताकीद के साथ फरमाया कि मां बाप के साथ भलाई कर

तर्जमा : और हम ने आदमी को ताकीद की, कि अपने मां बाप से भलाई कर और अगर वोह तुझे येह हुक्म दे कि तू किसी को मेरा शरीक ठहराए। जिस का तुझे इल्म नहीं, तो तू उन का कहना न मान, मेरी ही तरफ तुझ को पलट कर आना है तो मैं तुम्हें बता दूंगा। जो तुम करते थे।

पारह नम्बर 21 : सूरए अन्कबूत

आयत नम्बर 45 : नमाज बुरी बातों से रोकती है।

तर्जमा : ऐ महबूब ! पढो वोह किताब जो तुम्हारी तरफ वही की गई है और नमाज कमा हक्कुहू अदा करते रहो, बेशक ! नमाज बुरी बातों से रोकती है और बेशक ! अल्लाह का जिक्र सब से बडा है।

आयत नम्बर 69 : कोशिश करोंगे तो जरूर पा लोगें

तर्जमा : और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की, तो हम जरूर उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे और बेशक ! अल्लाह नेकों के साथ है।

खुलासा : जो बन्दा अल्लाह की रिजा के लिये काम करता है और उस के लिये जिद्दो जहद करता है, तो वोह कभी नाकाम नहीं होता। क्यूं कि अल्लाह का वा'दा है, वोह किसी काम करने वाले की मेहनत के अज्र को बरबाद नहीं करता, वोह बन्दे को अपने तक पहुंचने के रास्ते दिखा देता है और अपनी शान के लाइक अता फरमाता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ

पारह नम्बर 21 : सूरए रूम

आयत नम्बर 6-7 : अल्लाह वा'दा खिलाफ नहीं करता।

तर्जमा : अल्लाह का वा'दा और अल्लाह अपना वा'दा खिलाफ नहीं करता, लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते, लोग सिर्फ जानते है आंखों के सामने की दुन्यवी जिन्दगी और वोह आखिरत से पूरे बे खबर, अन्जान है।

आयत नम्बर 17 से 19 : कियामत के दिन उठना

तर्जमा : उसी की ता'रीफ है, आस्मानों और जमीन में और कुछ देर रहे और जब तुम्हें दोपहर हो और वोह जिन्दा को निकालता है मुर्दे से और मुर्दे को निकालता है जिन्दा से और जमीन को जिन्दगी देता है उस के मरे पीछे, यूंही तुम निकाले जाओगे रोजे कियामत।

आयत नम्बर 20 से 27 : अल्लाह की निशानियों में गौरो फिक्र करो।

तर्जमा : और उस की निशानियों से येह हैं कि तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर जब ही तुम इन्सान हो। दुन्या में फैले हुए।

और उस की निशानियों से हैं कि तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स से जोडे बनाए, कि उन से आराम पाओ और तुम्हारे आपस में महब्बत व रहमत रखी, बेशक! उस में निशानियां हैं उन के लिये जो धियान धरे।

और उस की निशानियों से हैंआस्मानो जमीन की पैदाइश और तुम्हारी जबानों और रंगतो का इख्तिलाफ बेशक! उस में निशानियां है। जानने वालों के लिये।

और उस की निशानियों से हैं रात में तुम्हारा सोना और दिन में तुम्हारा उस का फज्ल तलाश करना, बेशक! उस में निशानियां हैं सुनने वालों के लिये।

और उस की निशानियों से हैं कि बिजली दिखाता हैं डराती और उम्मीद दिलाती और आस्मान से पानी उतारता है कि उस से विरान, बन्जर मरी हुई जमीन को जिन्दा कर दे बेशक! उस में निशानियां हैं अक्ल वालों के लिये।

और उस की निशानियों से हैं कि उस के हुक्म से आस्मान और जमीन काइम है, फिर जब तुम्हें जमीन से एक निदा (सूर) फरमाएगा तो तुम सब (कब्र से) निकल पडोगें और उसी का है जो सब कुछ आस्मानों और जमीन में है, सब कुछ उस के हुक्म के ताबेअ है।

और वोही है कि अव्वल बनाता है और फिर उसे दोबारा बनाएगा और येह तुम्हारी समझ में उस पर ज्यादा आसान होना चाहिये और उसी के लिये है आस्मानों और जमीन में सब से बरतर शान और वोही इज्जत वाला हिक्मत वाला है।

आयत नम्बर 36 से 39 : ना उम्मीद न हो और खालिस खुदा ही के लिये अमल करो।

तर्जमा : और जब हम लोगों को अपनी रहमत का मजा देता हैं तो वोह उस पर खुश हो जाते हैं और अगर उन को कोई तक्लीफ पहुंचे, उस के नतीजे में जो उन्हों ने गल्तियां या गुनाह किये तो जभी वोह नाउम्मीद हो जाते हैं।

और क्या उन्हों ने न देखा कि अल्लाह रिज्क वसीअ फरमाता है, जिस के लिये चाहे और तंगी फरमाता है जिस के लिये चाहे बेशक ! इस में निशानियां है ईमान वालों के लिये।

और रिश्तेदारों को उन का हक दो और मिस्कीन और मुसाफिरों को दो, येह बेहतर हैं उन के लिये जो अल्लाह की रिजा चाहते है और उन्हीं का काम बनेगा और जो चीज तुम दूसरों को इस लिये दो कि देने वाले का माल बढे । तो वोह अल्लाह के यहां न बढेगी और तुम जो खैरात करो अल्लाह की रिजा चाहने के लिये, तो उसी के डबल हैं।

पारह नम्बर 21 : सूरए लुक्मान

आयत नम्बर 12 : अल्लाह की नसीहत हजरते लुक्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को

तर्जमा : बेशक ! हम ने लुक्मान को हिक्मत अता फरमाई कि अल्लाह का शुक्र करे और जो शुक्र करे तो वोह अपने ही भले को शुक्र करता है और जो नाशुक्री करे तो अल्लाह बेशक ! सब खूबियों सराहा बे परवाह है।

आयत नम्बर 13 : लुक्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अपने बेटों को नसीहत।

तर्जमा : और याद करो जब लुक्मान ने अपने बेटों से कहा और वोह नसीहत करता था कि ऐ मेरे बेटे ! अल्लाह का किसी को शरीक न करना बेशक ! शिर्क बहुत बडा जुल्म है।

आयत नम्बर 14 : अल्लाह ने मां बाप के बारे में क्या ताकीद फरमाई ?

तर्जमा : और हम ने आदमी को उस के मां बाप के बारे में ताकीद फरमाई, उस की मां ने उस को पेट में रखा कमजोरी पर कमजोरी झेलती हुई। और उस का दूध छुडाना दो बरस में है। फरमाया येह कि हक मान मेरा और हक मान अपने मां बाप का आखिर मुझी तक तुझ को आना है।

और अगर वोह तुझ से कोशिश करे कि मेरा शरीक ठहराए ऐसी चीज को जिस का तुझे इल्म नहीं तो उन का कहना न मान। और दुन्या में अच्छी तरह उन का साथ दे **और उन के रस्ते पर चल जो मेरी तरफ झूक गया फिर मेरी ही तरफ तुझ को आना है। तो मैं बता दूंगा जो तुम करते थे।**

आयत नम्बर 16 से 19 : हजरते लुक्मान की अपने बेटे से नसीहत।

तर्जमा : ऐ मेरे बेटे ! बुराई अगर राए के दाने के बराबर हो या फिर वोह पथ्थर की चट्टान में हो, या आस्मानों में या जमीन में कहीं भी हो तो अल्लाह उसे ले आएगा, बेशक ! अल्लाह हर बारीकी का जानने वाला है।

ऐ मेरे बेटे ! नमाज बरपा रख और अच्छी बात का हुक्म कर और बुरी बात से मनाई कर और जो मुसीबत तुझ पर आए उस पर सब्र कर कि बेशक ! येह हिम्मत के काम है।

और किसी से बात करने में मुंह मत बिगाड और जमीन में इतरा कर मत चल बेशक ! कोई इतराने वाला फख्र करने वाला अल्लाह को पसन्द नहीं और आहिस्ता दरमियानी चाल चल।

और अपनी आवाज कुछ धीमी रख बेशक सब आवाजों में बुरी आवाज गधे की है।

आयत नम्बर 33 : किमायत की हौलनाकियां

(कोई किसी के काम न आएगा)

तर्जमा : और अपने रब से डरो और उस दिन का खौफ करो जिस में कोई बाप अपने बच्चे को काम नहीं आएगा और न कोई बच्चा अपने बाप को कुछ फाइदा पहुंचाएगा, बेशक ! अल्लाह का वा'दा सच्चा है तो हरगिज तुम्हें दुन्या की जिन्दगी धोखा न दे और हरगिज तुम्हें वोह सब से बडा फरेबी शैतान अल्लाह के इल्म पर धोखा न दे।

पारह नम्बर 21 : सूरए अस्सजदा

आयत नम्बर : 7 से 9 : बन्दों की पैदाइश के मरहले और बन्दे की नाशुक्री

तर्जमा : अल्लाह वोह जिस ने जो चीज भी बनाई बेहतर बनाई और इन्सान की पैदाइश मिट्टी से फरमाई, फिर उस की नस्ल एक बे कद्र पानी (मनी) से रखी, फिर उसे ठीक किया और उस में अपनी तरफ से रूह फूंकी और उस ने तुम्हें कान और आंखें और दिल दिये, तो क्या ही थोडा हक मानते हो।

आयत नम्बर 15 से 17 : शाने मामिन (ईमान लाने वाले कैसे होते हैं ?)

तर्जमा : हमारी आयतों पर वोही ईमान लाते है, कि जब उन्हें हमारी आयतें याद दिलाई जाए तो वोह सजदे में गिर पडते हैं और अपने रब की ता'रीफ करते हुए उस की पाकी बोलते हैं और तकब्बुर नहीं करते और वोह रात को थोडा ही सोते हैं और वोह अपने रब से दुआ करते रहते है, डरते डरते और उम्मीद रखते और वोह हमारे दिये हुए में से उसे कुछ खर्च खैरात करते हैं।

तो किसी जान को येह मा'लूम नहीं हैं कि उस के रब ने उस की आंखों की ठंडक के लिये क्या क्या छुपा रखा है ? येह है उन के कामों का सिला।

आयत नम्बर 26 : अगली कौमों पर हुए अजाब की निशानियां देखो और इब्रत हासिल करो।

तर्जमा : और क्या उन्हें इस पर हिदायत हासिल न हुई कि हम ने उन से पहले कितनी कौम हलाक कर दी ? आज येह उन के घरों में चलते फिरते हैं, बेशक ! इस में जरूर निशानियां हैं।

खुलासा : सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام से ले कर हमारे नबी आखिर्रुज्जमान तक कमो बेश एक लाख चौबीस हजार पैगम्बर तशरीफ लाए, उन में से बा'ज का जिक्र अल्लाह ने फरमाया और बा'ज पर्दए गैब में ही रहे।

येह पैगम्बर आते रहे और अपनी अपनी कौमों को कुफ्र, शिर्क और ना फरमानियों से रोकते रहे बा'ज उम में से ईमान लाए और अक्सर इन्कार करने वाले ही रहे।

जब उन पर हुज्जत काइम हो चुकी, उन्हों ने नबियों को झूटलाया, किताबों को न माना तो ऐसे ना फरमानों को सत्हे जमीन से मिटा दिया गया, किसी को पानी का तूफान, किसी को जलजले, किसी पर तेज हवा, किसी पर पथ्थरों की बारिश, किसी को चिंघाड, अलग अलग अजाब आते रहे, आज उन की निशानियां मौजूद हैं उन के टूटे हुए खंडर मकान जमीन पर और दरिया में नजर आते है।

हमारे यहां लोथल धोला वीरा, मोहन जो डेरो दरिया में डूबी हुई द्वारका और इन का संस्कृती के खंडेर है लोग देखते है, लेकिन इब्रत नहीं लेते और येह तो दुन्यावी सजा है, आखिरत का अजाब अलग है।

अल्लाह तआला ने कुरआने करीम में अलग अलग तरीके से बारहा इस का जिक्र फरमाया और कहा "कुल सिरू फिल अर्दी फन्जुर कैफ कान आकिबतुल मुकज्जिबीन"

या'नी जमीन में सैर करो और देखो झूटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुवा।

पारह नम्बर 21 : सूरए अल अहजाब

आयत नम्बर 21 : रसूलुल्लाह की पैरवी सब से बेहतर है।

तर्जमा : बेशक! तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है उन के लिये जो अल्लाह और पीछले दिन (कियामत) की उम्मीद रखता हो और वोह अल्लाह को बहुत ज्यादा याद करे।

पारह नम्बर 22 : सूरए अल अहजाब

आयत नम्बर 40 से 43 : हुजूर आखिरी नबी है।

तर्जमा : मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं है। और हां वोह अल्लाह के रसूल है और सब नबियों में आखिरी है और अल्लाह सब कुछ जानता है।

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह को बहुत याद करो और सुब्ह व शाम उस की पाकी बोलो, वोही है जो तुम पर और उस के फिरिश्ते तुम पर दुरूद भेजता है कि तुम्हे अन्धेरियों से निकाल कर नूर की तरफ ले जाए और वोह मुसलमानों पर महेरबान है उन के मिलने के वक्त की दुआ है सलाम और उन के लिये इज्जत का सवाब तय्यार कर रखा है।

आयत नम्बर 44 से 47 : नबी हाजिरो नाजिर है।

तर्जमा : ऐ नबी ! बेशक! हम ने तुम्हें हाजिरो नाजिर (शाहिद, गवाह, देखने वाला) बना कर भेजा और खुश खबरी सुनाता और डर सुनाता और अल्लाह के हुक्म से अल्लाह की तरफ बुलाता और चमका देने वाला सूरज बना कर भेजा।

और ऐ नबी ! ईमान वालों को खुश खबरी दे दो कि उन के लिये अल्लाह का बडा फज्ल हैं।

आयत नम्बर 56 : नबी पर दुरूदो सलाम भेजते रहो।

तर्जमा : बेशक ! अल्लाह और उस के सारे फिरिश्ते दुरूद भेजते रहते है उस गैबदां नबी पर ऐ ईमान वालो ! तुम उन पर दुरूद और सलाम भेजो।

आयत नम्बर 59 : पर्दे का हुक्म।

तर्जमा : ऐ नबी ! अपनी बीबियों और साहिब जादियों और मुसलमानों की औरतों से फरमा दो कि अपनी चादरों का एक हिस्सा अपने मुंह पर डाले रहे, येह इस से नज्दीक तर है कि उन की पहचान हो तो सताई जाए और अल्लाह बख्शने वाला महेरबान है।

आयत नम्बर 63 : कियामत की हौलनाकियां, (काफिरों का अफ्सोस)

तर्जमा : लोग तुम से कियामत के बारे में सवाल करते हैं, तुम उन से फरमाओ कि उस का इल्म तो अल्लाह ही को है और तुम्हें क्या मा'लूम कि शायद कियामत नज्दीक हो।

बेशक ! अल्लाह ने काफिरों पर ला'नत फरमाई और उन के लिये भडकती आग तय्यार कर रखी है, उस में हमेशा रहेंगे और वहां उस में न उन का कोई हिमायती न मददगार।

जिस दिन उन के मुंह उलट उलट कर आग में तले जाएंगे वोह कहते होंगे, हाए अफ्सोस ! हम ने किसी तरह अल्लाह का हुक्म माना होता और रसूल का हुक्म माना होता।

और कहेंगे ऐ हमारे रब ! हम अपने सरदारों (कहेवाते पूज्य, सांधू संत महंत, प्रमुख स्वामी, भगवंतो) और बडों के कहने पर चले तो उन्हों ने हमें राह से बहका दिया तू उन्हें आग का डबल अजाब कर और उन पर बडी ला'नत भेज।

आयत नम्बर 70–71 : अल्लाह से डरो और सीधी, सच्ची बात कहो।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो, अल्लाह तुम्हारे आ'माल तुम्हारे लिये संवार देगा और तुम्हारे गुनाह बख्श देगा और जो अल्लाह और उस के रसूल की फरमां बरदारी करे (हुक्म माने) उस ने बडी कामयाबी पाई।

पारह नम्बर 22 : सूरए सबा

आयत नम्बर 36 से 39 : अल्लाह रिज्क वसीअ करता है और तंग भी करता है

तर्जमा : तुम फरमाओ, बेशक ! मेरा रब जिस के लिये चाहे अपना रिज्क वसीअ फरमाए और जिस के लिये चाहे तंगी करे लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।

और तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद इस काबिल नहीं कि तुम्हें हमारे कुर्ब तक पहुंचाए, सिवाए वोह जो ईमान लाए और नेकियां की, उन के लिये डबल सवाब है, उन के आ'माल का बदला और वोह जन्नत के जरूखों में अमान से है।

और वोह जो हमारी आयतों में हराने की कोशिश करते हैं उन पर बहुत बडा अजाब होने वाला है।

तुम फरमाओ, बेशक ! मेरा रब रिज़्क में वुस्अत देता है अपने बन्दों में से जिसे चाहे और तंगी फरमाता है जिस के लिये चाहे और जो चीज तुम अल्लाह की राह में दोगे, वोह उस के बदले और ज्यादा देगा और वोह सब से बेहतर रिज़्क देने वाला है।

पारह नम्बर 22 : सूरए फातिर

आयत नम्बर 2 : अल्लाह जिसे चाहे अता करे, जिस से चाहे रोके।

तर्जमा : बेशक अल्लाह जो रहमत लोगों के लिये खोले तो उस को रोक सकने वाला कोई नहीं और अगर वोह कुछ रोक ले, तो उस के बा'द छोडने वाला कोई नहीं। और वोही इज्जत वाला, हिक्मत वाला है।

आयत नम्बर 5-6 : शैतान तुम्हारा दुश्मन है उस से दूरी ही रखो।

तर्जमा : ऐ लोगो ! बेशक ! अल्लाह का वा'दा सच्चा है, तो हरगिज तुम्हें दुन्या की जिन्दगी धोखे में न डाले और हरगिज तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर वोह बडा फरेबी शैतान फरेब न दे।

बेशक ! शैतान तो तुम्हारा दुश्मन ही है, तो तुम भी उसे दुश्मन समझो, वोह तो अपने गिरौह को इसी लिये बुलाता है कि वोह दोजखी बन जाए।

आयत नम्बर 10 : इज्जत तो बस अल्लाह ही के हाथ है।

तर्जमा : जिसे इज्जत की चाह (ख्वाहिश, तलब) हो तो इज्जत तो सब बस अल्लाह ही के हाथ है, उसी की तरफ चढता है पाकीजा कलाम और जो नेक काम है वोह उसे बुलन्द करता है

और जो लोग बुरे दांव करते है, उन के लिये सख्त अजाब है और उन्हीं का मक्र बरबाद होगा।

आयत नम्बर 11 : हम्ल का ठहरना और जिन्दगी और मौत सब उसी के चाहने से है।

तर्जमा : अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से बनाया और फिर पानी की बूंद से, फिर तुम्हारे जोडे (मियां, बीवी) बनाए और किसी भी मादा

(लेडी) को हमल नहीं रहता और न वोह जनती है सिवाए उस के इल्म से।

और जिस बडी उम्र वाले को उम्र दी जाए या जिस किसी की उम्र कम रखी जाए, येह सब एक किताब में है और अल्लाह को येह आसान है।

आयत नम्बर 12–13 : अल्लाह ने दो समुन्दरों के बीच में आड रखी।

तर्जमा : और दोनों समुन्दर एक जैसे नहीं है, एक मीठा है बहुत मीठा, खुश जाइका और येह खारा है एक दम तल्ख और हर एक में से तुम खाते हो ताजा गोश्त और निकालते हो पहनने का गहना और तू किश्तियां देखे कि पानी को चीर के चलती है ताकि तुम उस का फज्ल तलाश करो और उस का एहसान मानो।

आयत नम्बर 30 : शाने मामिन

तर्जमा : वोह जो अल्लाह की किताब पढते है और नमाज कमा हक्कुहू अदा करते है और हमारे दिये में से कुछ अल्लाह की राह में खर्च करते है छुपा कर और जाहिर में वोह ऐसी तिजारत के उम्मीदवार है, जिस में घाटा नहीं और उन का सवाब उन को भरपूर दिया जाएगा और अपने फज्ल से उन्हें ज्यादा अता करेगा, बेशक ! वोह बख्शने वाला कद्रदान है।

आयत नम्बर 43 : दगा किसी का सगा नही।

तर्जमा : अपने आप को जमीन में ऊंचा खींचना और बुरा दांव, बुरा दांव अपने चलाने वाले पर ही पडता है, तो वोह लोग किस चीज का इन्तिजार करते है सिवाए उस के कि जो अगलों का दस्तूर रहा, तो तुम हरगिज अल्लाह के दस्तूर को बदल न पाओगे और हरगिज अल्लाह के कानून को पलटता न पाओगे।

पारह नम्बर 22 : सूरए यासीन

आयत नम्बर 11 : अल्लाह से डरने वालों के लिये बख्शिश।

तर्जमा : जो नसीहत पर चले और बे देखे रहमान से डर जाए (और डरता रहे) तो ऐ महबूब ! तुम उस को बख्शिश और इज्जत के सवाब की बशारत सुना दो ।

पारह नम्बर 23 : सूरए यासीन

आयत नम्बर 48 से 54 : अहवाले कियामत ।

तर्जमा : और लोग जल्दी मचाते है और पूछते है कब आएगा येह वा'दा ? अगर तुम सच्चे हो ।

राह नहीं देखते मगर एक चीख की, कि उन के पास आएगी जब वोह दुन्या के झगडे में फंसे होंगे, तो न वसिय्यत कर सकेंगे और न अपने अपने घर पलट कर जा सकेंगे और सूर फूंका जाएगा तो जब भी वोह कब्रों से निकल कर अपने रब की तरफ दौडे चलेंगे ।

कहेंगे, हाए हमारी खराबी ! किस ने हमें सोते से जगा दिया ? येह है वोह (कियामत) जिस का रहमान ने वा'दा किया था । और रसूलों ने सच फरमाया था । वोह तो न होगी सिवाए एक चिंघाड, जब ही वोह सब के सब हमारे हुजूर हाजिर हो जाएंगे ।

तो आज किसी जान पर कुछ जुल्म न होगा और तुम्हें वोही बदला मिलेगा जो तुम करते रहते थे ।

आयत नम्बर 59 से 65 : कियामत के दिन क्या होगा ?

तर्जमा : रब का फरमान होगा "आज अलग हो जाओ ऐ मुजरिमो ! ऐ औलादे आदम ! क्या मैं ने तुम से अहद न लिया था ? कि शैतान को मत पूजना, बेशक ! वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है और मेरी ही बन्दगी करना, येह सीधी राह है ।"

बेशक ! उस ने तुम में से बहुत खल्कत को गुमराह कर दिया तो क्या तुम में अक्ल न थी ? येह है वोह जहन्नम जिस का तुम को वा'दा किया गया था, आज उसी में जाओ, तुम्हारे कुफ्र का बदला आज

हम ने उन के मुंहो पर मुहर लगा देंगे और उन के हाथ हम से बात करेंगे और उन के पाऊं उन के किये की गवाही देंगे।

आयत नम्बर 77 से 79 : इन्सान बडा नाशुक्रा बडा झगडालू है।

तर्जमा : हम ने उसे पानी की बूंद से पैदा किया जब भी वोह खुला झगडालू है और हमारे लिये कहावत कहता है। और अपनी पैदाइश भुल गया, बोला "ऐसा कौन है जो हड्डियों को जिन्दा करे ?" जब वोह बिल्कुल गल सड गई। तुम फरमाओ उसे वोह जिन्दा करेगा जिस ने पहली बार उन्हें बनाया। और उसे हर पैदाइश का इल्म है।

पारह नम्बर 23 : सूरए साफ्फात

आयत नम्बर 180 से 182 : सलाम हो पैगम्बरों पर।

तर्जमा : पाकी है तुम्हारे परवर दिगार इज्जत वाले रब को उन की बातों से और सलाम हो पैगम्बरों पर और सब खूबियां अल्लाह को, जो सारे जहान का रब है।

पारह नम्बर 23 : सूरए صٓ

आयत नम्बर 29 : कुरआन में गौरो फिक्र करो।

तर्जमा : येह कुआन एक किताब है, जो हम ने तुम्हारी तरफ उतारी, बडी बरकत वाली है, ताकि लोग उस की आयतों में सोचे (गौरो फिक्र और मनन मंथन करे) और अक्लमन्द नसीहत माने।

पारह नम्बर 23 : सूरए जुमर

आयत नम्बर 10 : अल्लाह से डर ने वालों के लिये बे हिसाब अज्र है

तर्जमा : तुम फरमाओ ऐ मेरे बन्दो ! जो तुम ईमान ले आए हो अपने रब से डरो जिन्हों ने भलाई की, उन के लिये इस दुन्या में भलाई है और अल्लाह की जमीन वसीअ है, साबिरों को उन का सवाब बे हिसाब भरपूर दिया जाएगा।

खुलासा : मौलाए काइनात मौला अली मुर्तजा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फरमाते है कि हर नेकी करने वाले की नेकियों का वज्न किया जाएगा,

सिवाए सब्र करने वालों के, सब्र करने वाले को उन का अज्र बे अन्दाज और बे हिसाब दिया जाएगा, रोजे कियामत उन पर ने'मतों की बारिश होगी।

यहां तक कि दुन्या में सुख चैन खैरो आफियत के साथ जिन्दगी बसर करने वाले उन्हें देख कर येह आरजू करेंगे कि, काश! वोह भी दुन्या में मुसीबत उठाते और उन के जिस्म कैंचियों से कांटे जाते। तो आज हम भी येह अज्र और येह मकाम पाते।

आयत नम्बर 22 : अल्लाह ने जिस का सीना इस्लाम के लिये खोल दिया

तर्जमा : तो क्या वोह जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिये खोल दिया। तो वोह अपने रब की तरफ से नूर पर है, वोह उस जैसा हो जाएगा जो संगदिल है, तो खराबी है, उस के लिये जिन के दिल खुदा की तरफ से सख्त हो गए है, वोह खुली गुमराही में है

खुलासा : रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब येह आयत सहाबए किराम की मज्लिस में तिलावत फरमाई तो सहाबा ने अर्ज किया। या रसूलल्लाह! सीना किस तरफ खुलता है? और इस की अलामत क्या है? सरकार ने फरमाया जब नूर कल्ब में दाखिल होता है तो उस में वुस्अत होती है और उस की अलामत येह है कि "दारुल खुल्द" (आखिरत का घर) की तरफ मुतवज्जेह होता है और "दारुल गुरूर " या'नी दुन्या से दूर रहना मुयस्सर आता है और मौत से पहले मौत की तरफ मुतवज्जेह होना नसीब होता है। سُبْحَانَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ

आयत नम्बर 23 : कुरआन की तिलावत से दिल नर्म बनता है।

तर्जमा : अल्लाह ने उतारी सब से अच्छी किताब के अव्वल से आखिर तक एक जैसी है, दोहरे बयान वाली, उस की तिलावत से बाल खडे होते है, उन के बदन पर जो अपने रब से डरते हैं फिर उन की खाले और दिल नर्म बनते है यादे खुदा की रग्बत में येह अल्लाह की

हिदायत है। वोह जिसे चाहे राह दिखाए। और जिसे चाहे अल्लाह गुमराह करे कोई राह दिखाने वाला नहीं।

पारह नम्बर 24 : सूरए जुमर

आयत नम्बर 53 : गुनहगारो ! अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो।

तर्जमा : ऐ महबूब ! तुम फरमा दो कि ऐ मेरे बन्दो ! जिन्हों ने (गुनाह कर के) अपने नफ्सों पर जियादती की है, अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, बेशक ! अल्लाह सब गुनाह बख्श देता है, बेशक ! वोही बख्शने वाला महेरबान है।

आयत नम्बर 65 से 71 : रोजे कियामत के अहवाल और वईद।

तर्जमा : ऐ सुनने वाले ! अगर तूने किसी को अल्लाह का शरीक ठहराया, तो तेरा सब किया धरा बेकार हो जाएगा और जरूर तू हार में रहेगा, बल्कि सिर्फ अल्लाह ही की बन्दगी कर और शुक्र करने वाले से रह और लोगों ने अल्लाह की कद्र न की जैसा कि करने का हक था।

और वोह कियामत के दिन सब जमीनों को समेट लेगा और उस की कुदरत से सारे आस्मान समेट लिये जाएंगे और अल्लाह उन के शिर्क और कुफ्र से बरतर है।

और जब सूर फूंका जाएगा तो बेहोश हो जाएंगे जितने आस्मानों में है और जितने जमीन में हैं सिवाए जिसे अल्लाह चाहे।

फिर जब दोबारा सूर फूंका जाएगा जभी वोह देखते हुए खडे हो जाएंगे और जमीन अपने रब के नूर से जगमगा जाएगी और रखी जाएगी किताब और अम्बिया लाए जाएंगे और येह नबी और उस की उम्मत पर गवाह होंगे और लोगों से सच्चा फैसला फरमाया जाएगा।

और उन पर जुल्म न होगा और हर एक जान को उस का किया हुवा भरपूर दिया जाएगा और उसे खूब मा'लूम है जो वोह करते है और काफिर जहन्नम की तरफ हांके जाएंगे गिरौह दर गिरौह, यहां तक कि जब

वहां पहुंचेगे तो जहन्नम के दरवाजे खोले जाएगे और उस का दरोगा उन्हीं से कहेगा, क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से वोह रसूल नहीं आए थे ? जो तुम पर तुम्हारे रब की आयतें पढते थे और तुम्हें इस दिन की हाजरी से डराते थे ? कहेंगे क्यूं नहीं ? मगर अजाब का कौल काफिरों पर सहीह उतरा। फरमाया जाएगा कि जाव जहन्नम में हमेशा रहने के लिये तो क्या ही बुरा ठिकाना मुतकब्बिरों का।

पारह नम्बर 24 : मुअमिन

आयत नम्बर 7 से 9 : तौबा करने वालों के लिये फिरिश्ते दुआ करते है। (निस्बतों की बरकत)

तर्जमा : वोह फिरिश्ते जो अर्श उठाते है और फिरिश्ते जो उस के इर्द गिर्द है अपने रब की पाकी बयान करते हैं तारीफ के साथ और उस पर ईमान लाते है और मुसलमानों की मग्फिरत चाहते है।

कहते है ऐ हमारे रब ! तेरी रहमत हर चीज में समाई हैं तू उन्हें बख्श दे। जिन्हों ने तौबा की और तेरी राह पर चले और तू उन्हें दोजख के अजाब से बचा ले।

ऐ हमारे रब ! उन्हें बसने के बागों में दाखिल कर जिस का तूने उन को वा'दा फरमाया हैं और उन को भी (दाखिल कर) जो नेक हो। उन के बाप दादा और उन की बीबियां और उन की औलाद से बेशक तूही इज्जत वाला हिक्मत वाला है।

और उन्हें गुनाहों की शामत से बचा ले। और जिसे तू उस दिन गुनाहों की शामत से बचा ले तो बेशक ! तूने उस पर रहम फरमाया।

आयत नम्बर 19 : छुप छुपा कर गुनाह करने वाले

तर्जमा : अल्लाह जानता है चोरी छुपी की निगाह और जानता है जो कुछ सीनों में छुपा है।

आयत नम्बर 55 : ऐ महबूब ! सब्र करो।

तर्जमा : ऐ महबूब ! सब्र करो बेशक अल्लाह का वा'दा

सच्चा हैं और अपनों के गुनाहों की मुआफी मांगो और अपने रब की ता'रीफ करते हुए सुब्हो शाम उस की पाकी बयान करो।

पारह नम्बर 24 : हामीम

आयत नम्बर 30 से 32 : फिरिश्ते मुसलमानों के दोस्त है और मददगार

तर्जमा : और वोह जिन्हों ने कहा "हमारा रब अल्लाह है" और फिर उस पर इस्तिकामत की (साबित कदम रहे) उन पर फिरिश्ते उतरते हैं कि न डरो और न गम करो और खुश हो जाओ उस जन्नत पर जिस का तुम को वा'दा किया गया था, हम तुम्हारे दोस्त है, दुन्यावी जिन्दगी में और आखिरत में और तुम्हारे लिये हैं, इस में जो तुम्हारा जी चाहे और तुम्हारे लिये हैं इस में जो तुम मांगों महेरबानी बख्शने वाले महेरबान रब की तरफ से।

आयत नम्बर 33-34 : जो लोगों को अल्लाह की तरफ बुलाए।

तर्जमा : और उस से ज्यादा किस की बात अच्छी ? जो लोगों को अल्लाह की तरफ बुलाए और खुद नेकी करे और कहे कि मैं मुसलमान हूं।

और नेकी और बदी बराबर न हो जाएगी, ऐ सुनने वाले! बुराई के बदले में भलाई कर जरूर तभी तो वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी थी वोह ऐसा हो जाएगा जैसा गहरा दोस्त।

और येह दौलत सिर्फ साबिरों को ही मिलती हैं और इसे सिर्फ बडे नसीब वाले ही पाते हैं।

आयत नम्बर 36 : शैतान के फरेब से अल्लाह की पनाह मांगो।

तर्जमा : अगर तुझे कोई शैतान का वस्वसा या फरेब पहुंचे तो अल्लाह की पनाह मांग, बेशक! वोही सुनता जानता है।

पारह नम्बर 25 : हामीम

आयत नम्बर 53 : जिस ने अपने नफ्स को पहचाना उस ने अपने रब को पहचाना

तर्जमा : अन्करीब हम उन्हें दिखाएंगे अपनी निशानियां दुन्या भर में और खुद उन की जात में यहां तक कि उन पर जाहिर हो जाए कि वोही हक है।

क्या तुम्हारे रब का हर चीज पर गवाह होना काफी नहीं ?

खुलासा : बेशक ! जमीन का जर्रा जर्रा बारिश का कतरा कतरा नदियां समुन्दर दरख्तों के पत्ते और किस्म किस्म के जानवर और परिन्दे चिडियां येह हशरातुल अर्ज कीडे मकोडे दरिन्दे चरिन्दे सब के सब अल्लाह तआला की मा'रीफत के दफ्तर है और अल्लाह तआला की वहदानियत पर और कमाले कुदरत पर दलील हैं।

इसी तरह एक नापाक पानी के कतरे या'नी मनी के जरीए एक अजीम जिन्दा शाहकार वुजूद में लाना और उसे हाथ पैर आंखें कान वगैरा आ'जा पैदा कर देना फिर उस का खाना उस का सोना उस के जिस्म की हड्डियां खून गोश्त पैदा करना येह सब अल्लाह वहदहू ला शरीक हमेशा जिन्दा के कमाले कुदरत की दलीले हैं।

जरूरत तो बस इतनी हैं कि, इन्सान अपने में और अपने इर्द गिर्द नजर करे, गौरो फिक्र करे और अपने रब को पहचाने।

हमारे सरकार रहमतुल्लिल आलमीन ने क्या खूब फरमाया।

मन अरफ नफ्सहू

फकद अरफ रब्बहू

पारह नम्बर 25 : सूरए शुअरा

आयत नम्बर 20 : वोह जो दुन्या की खेती चाहे।

तर्जमा : जो आखिरत की खेती चाहे, हम उस के लिये खेती बढाए और जो दुन्या की खेती चाहे, हम उसे उस में से कुछ देंगे और आखिरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं।

आयत नम्बर 30 : गुनाहों के सबब मुसीबत आती है।

तर्जमा : और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वोह उस के सबब से हैं जो तुम्हारे हाथों ने कमाया और बहुत कुछ तो मुआफ फरमा देता है।

आयत नम्बर 36 से 40 : शाने मामिन

तर्जमा : तुम्हें जो कुछ मिला है, वोह इस जीती दुन्या का बरतना है और जो अल्लाह के पास हैं वोह बेहतर हैं और ज्यादा बाकी रहने वाला है, उन के लिये जो ईमान लाए हैं और अपने रब पर ही भरोसा करते है।

और वोह जो बडे बडे गुनाहों और बे हयाइयों से बचते हैं और जब उन को गुस्सा आए तो लोगों को मुआफ कर देते हैं और वोह जिन्हों ने अपने रब का हुक्म माना और नमाज काइम रखी और उन का काम आपस में मश्वरे से हैं। और वोह कि जब उन्हें बगावत पहुंचे तो बदला लेते हैं और बुराई का बदला उसी की बुराई के बराबर हैं।

तो जिस ने मुआफ किया और काम संवारा तो उस का अज्र अल्लाह पर हैं और बेशक! वोह जालिमों को दोस्त नहीं रखता।

आयत नम्बर 49-50 : अल्लाह जिसे चाहे बेटियां दे जिसे चाहे बेटे।

तर्जमा : अल्लाह ही के लिये हैं, आस्मानों जमीन की सल्तनत पैदा करता हैं जो चाहे, वोह जिसे चाहे बेटियां अता फरमाए और जिसे चाहे बेटे दे। या बेटे और बेटियां दोनों मिला दे और जिसे चाहे बांज (बे औलाद) कर दे, बेशक! वोह इल्मो कुदरत वाला है।

खुलासा : बेशक! वोह मालिक है, वोह अपनी ने'मत जिसे चाहे जैसे चाहे तक्सीम करे, अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में भी येही सब सूरतें नजर आती हैं जैसे कि हजरते लूत और हजरते शुऐब عَلَيۡهِمَا السَّلَام को औलाद में सिर्फ बेटियां ही थी कोई बेटा न था और हजरते इब्राहीम عَلَيۡهِ السَّلَام और हजरते जकरिय्या عَلَيۡهِ السَّلَام को औलाद में सिर्फ बेटे इनायत फरमाए थे। कोई बेटी न थी। और सय्यिदुल अम्बिया हबीबे खुदा हमारे आका व मौला صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्लाह तबारक व तआला ने चार बेटे और चार बेटियां इनायत फरमाईं, जब कि हजरते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام और हजरते यहया عَلَيۡهِ السَّلَام को कोई औलाद अता न हुई।

पारह नम्बर 25 : सूरए जुख्रुफ

आयत नम्बर 32 से 35 : अल्लाह काफिरों को दुन्या खूब देता है।

तर्जमा : क्या तुम्हारे रब की रहमत वोह बांटते है ? हम ने ही उन में उन की सजावट (ऐशो इशरत) का सामान दुन्या की जिन्दगी में बांटा। और उन में एक को दूसरे पर बहुत बुलन्दी दी, इस लिये कि एक दूसरे कि मजाक उडाए और तुम्हारे रब की रहमत उन के जम्अ जथ्थे से बेहतर है।

अगर येह न होता कि सब लोग एक दीन पर हो जाए, तो हम जरूर रहमान के मुन्किर काफिरों को चांदी की छते और सीढियां बना देते जिन पर वोह चढते और उन के घरों के लिये चांदी के दरवाजे और चांदी के तख्त जिन पर तकियां लगाते और तरह तरह की आराइश और येह जो कुछ भी है, वोह जीती दुन्या की सजावट के सामान है और आखिरत तुम्हारे रब के पास तक्वा परहेजगार वालों के लिये हैं।

खुलासा : दुन्या और सामाने दुन्या की तुम्हारे रब के नज्दीक कुछ कद्र नहीं है, अल्लाह तआला के नज्दीक अगर दुन्या एक मरे हुए मच्छर की टांग के बराबर भी होती, तो अल्लाह उस में से किसी काफिर को एक गलास पानी तक नहीं देता।

दुन्या मोमिनों के लिये कैद खाना और काफिरों के लिये जन्नत है।

पारह नम्बर 25 : सूरए दुखान

आयत नम्बर 10 से 12 : कियामत की हौलनाकियां।

तर्जमा : तुम लोग उस दिन के इन्तिजार में हो कि जब आस्मान से एक धूंवां जाहिर होगा कि लोगों को ढांप लेगा, येह है दर्दनाक अजाब, उस दिन काफिर कहेगा ऐ हमारे रब ! हम पर से अजाब फेर दे, हम ईमान ले आए, लेकिन अब कहां से नसीहत मानना ?

आयत नम्बर 40 से 50 : कियामत की हौलनाकियां।

तर्जमा : बेशक! फैसले का दिन उन सब की आखिरी मुद्दत है जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा और न उन की मदद होगी सिवाए वोह जिस पर अल्लाह रहम करे बेशक! वोही इज्जत वाला महेरबान है।

बेशक! थुहर का पेड गुनहगारों की खूराक है, गले हुए तांबे की तरह पेट में जोश मारता है, जैसे खोलता पानी जोश मारे।

फरमाया जाएगा उसे पकडों ठिक भडकती हुई आग की तरफ घसीट कर ले जाओ और उस के ऊपर गरम गरम खोलते पानी का अजाब डालो, हां हां तू हीं बडा इज्जत वाला करम वाला है, बेशक! येह हैं वोह (कियामत) जिस में तुम शक किया करते थे।

पारह नम्बर 25 : सूरए जासियह

आयत नम्बर 3 से 5 : अल्लाह की निशानियां।

तर्जमा : बेशक! आस्मानों और जमीन में निशानियां है ईमान वालों के लिये।

तुम्हारी पैदाइश में और जो जानवर वोह फैलाता है उस में निशानियां है यकीन वालों के लिये।

और रात और दिन की तब्दीलियों में और उस में कि अल्लाह ने आस्मान से रोजी का सबब बारिश का मींह उतारा और उस मींह से (वीरान, बन्जर) मरी हुई जमीन को जिन्दा कर दिया और हवाओ की गर्दिश में निशानियां है अक्ल वालों के लिये।

पारह नम्बर 26 : सूरए अहकाफ

आयत नम्बर 15 : दुआए हजरते सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ

तर्जमा : अर्ज की ऐ मेरे रब ! मेरे दिल में डाल कि मैं तेरी ने'मत का शुक्र करूं, जो तूने मुझ पर और मेरे मां बाप पर की है और मैं वोह नेक काम करू, जो तुझे पसन्द आए और मेरी औलाद में सलाह रख, कि मैं तेरी तरफ रुजूअ लाया।

पारह नम्बर 26 : सूरए मुहम्मद

आयत नम्बर 7 : अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अगर तुम दीने खुदा की मदद करोंगे तो अल्लाह तुम्हारी मदद करेंगा और तुम्हारें कदम जमा देगा।

पारह नम्बर 26 : सूरए फत्ह

आयत नम्बर 8 : हुजूर हाजिरो नाजिर है।

तर्जमा : ऐ महबूब बेशक ! हम ने तुम्हें भेजा हाजिर व नाजिर और खुशी और डर सुनाता, ताकि ऐ लोगों ! तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ता'जीम व तौकीर करो और सुब्ह शाम अल्लाह की पाकी बोलो।

और वोह जो तुम्हारी बैअत करते है, वोह तो अल्लाह ही से बैअत करते है, अल्लाह ही का हाथ हैं उन के हाथों पर।

आयत नम्बर 28 : अल्लाह ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा।

तर्जमा : वोही अल्लाह है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि सब दीनों पर गालिब करे और अल्लाह काफी है गवाह।

मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और उन के साथ वाले काफिरों पर सख्त हैं और आपस में नर्म दिल है, तू उन्हें देखेगा रुकूअ करते और सजदे करते, अल्लाह का फज्ल और उस की रिजा चाहते, उन की अलामत उन के चहरों में सजदों के निशान है येह उन की सिफत तौरैत में है और इन्जील में हैं।

पारह नम्बर 26 : सूरए हुजुरात

आयत नम्बर 6 : किसी फासिक की बात न मानो।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अगर कोई फासिक तुम्हारे पास कोई खबर लाए तो पहले खूब तहकीक कर लो कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी कौम को बेजा इजा दे दो और फिर अपने किये पर पछताते रह जाओ।

खुलासा : फासिक की बात बिला तहकीक न मानी जाए पहले वेरीफाय करो कि वोह झूट तो नहीं कहता और बा'द में यकीन किया जाए ।

आयत नम्बर 9-10 : मुसलमानों में झगडे के वक्त सुलह कराओ ।

तर्जमा : अगर मुसलमानों के दो गिरौह आपस में लडे तो सुलह कराओ, फिर अगर कोई एक दूसरे पर जियादती करे तो उस जियादती करने वालों से लडो, यहां तक कि वोह अल्लाह के हुक्म की तरफ पलट आए और फिर अगर वोह पलट आए तो दोनों में इस्लाह कर दो और अद्ल (न्याय) करो के अद्ल वाले अल्लाह के महबूब हैं ।

मुसलमान मुसलमान भाई हैं, तो अपने दो भाइयों में सुलह करा दो और अल्लाह से डरो कि तुम पर रहमत हो ।

आयत नम्बर 11 : किसी का मजाक न उडाओ ।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! न मर्द मर्दों से हंसे अजब नहीं कि वोह उन हंसने वालों से बेहतर हो और न औरतें औरतों से हंसे येह भी कोई दूर नहीं कि वोह जिस पर हंसा जाता है, वोह हंसने वालियों से बेहतर हो ।

और आपस में ताना कशी न करो और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो, कितनी बुरी बात है मुसलमान होते हुए तुम्हें कोई फासिक कहे और जो ऐसे कामों से तौबा न करे वोही गुनहगार हैं ।

आयत नम्बर 12 : बहुत ज्यादा गुमान न करो, गीबत न करो ।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! ज्यादा गुमान करने से बचो बेशक ! कोई गुमान गुनाह बन जाता है और ऐब न ढूंढो और एक दूसरे की गीबत न करो, क्या तुम में से कोई येह बात पसन्द करेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए, तो येह तुम को गवारा न होगा और अल्लाह से डरो बेशक ! अल्लाह बहुत तौबा कुबूल करने वाला महेरबान है ।

आयत नम्बर 13 : जो तक्वे वाला है वोही इज्जत वाला है।

तर्जमा : ऐ लोगो ! हम ने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हें शाखों और कबिलों में बांट दिया इस लिये कि आपस में पहचान हो।

बेशक ! अल्लाह के यहां तुम में ज्यादा इज्जत वाला वोह हैं जो तुम में ज्यादा परहेजगार हो, बेशक ! अल्लाह जानने वाला खबरदार है।

पारह नम्बर 26 : सूरए काफ

आयत नम्बर 16 : अल्लाह आदमी से रगे जान से भी ज्यादा करीब है

तर्जमा : बेशक ! हम ने आदमी को पैदा किया और हम जानते है जो वस्वसा उस का नफ्स डालता है और हम उस से उस की दिल की रग से भी ज्यादा करीब है।

आयत नम्बर 17-18 : आदमी के अमल और कौल लिखे जाते है।

तर्जमा : जब उन से लेते है, दो लेने वाले फिरिश्ते, एक दाहिने बैठा और एक बांए, वोह कोई बात जबान से नहीं निकालता है, कि उस के पास एक मुहाफिज (लिखने वाला) तय्यार न बैठा हो।

पारह नम्बर 26 : सूरए जारियात

आयत नम्बर 17 से 19 : नेकूकार कौन ?

तर्जमा : नेकूकार वोह थे। जो रात में कम सोया करते थे और रात की आखिरी घडियों में इस्तिगफार करते रहते थे और उस के मालों में हक था मंगने वालों का और बे नसीबों का।

पारह नम्बर 27 : सूरए जारियात

आयत नम्बर 55 से 58 : इन्सान को अल्लाह ने सिर्फ इबादत ही के लिये पैदा फरमाया।

तर्जमा : और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फाएदा देता है और हम ने जिन्नात और इन्सान को मेरे ही लिये बनाए कि वोह मेरी इबादत करे।

मैं उन से कुछ रिज्क नहीं मांगता और न मैं येह चाहता हूं कि वोह मुझे खाना खिलाए बेशक ! अल्लाह ही बडा रिज्क देने वाला कुव्वत वाला, कुदरत वाला है।

पारह नम्बर 27 : सूरए तूर

आयत नम्बर 1 से 11 : कियामत के दिन झुटलाने वालों की खराबी है।

तर्जमा : तूर की कसम और उस रजिस्टर की जो खुले दफ्तर में लिखा है और बैतुल मामूर और बुलन्द छत (आस्मान) की और सुलगाए हुए समुन्दर की बेशक तेरे रब का अजाब जरूर होना है जिसे कोई टालने वाला नहीं।

जिस दिन आस्मान हिलना सा हिलेगा और पहाड चलना सा चलेंगे तो उस दिन झुटलाने वालों की खराबी है।

पारह नम्बर 27 : सूरए नज्म

आयत नम्बर 2 से 4 : रसूल की हर बात वहिये इलाही है।

तर्जमा : तुम्हारे साहिब न (कभी) बहके न बेराह चले वोह कोई बात भी अपनी ख्वाहिशे नफ्सानी से नहीं कहते बल्कि वोह जो भी कहते है वोह सिर्फ वहिये इलाही है।

आयत नम्बर 24-25 : आदमी को हर वोह चीज नहीं मिलती जो वोह मांगे।

तर्जमा : क्या आदमी को वोह मिल जाएंगा जो वोह तमन्ना करे तो (याद रहे) आखिरत और दुन्या सब का मालिक अल्लाह ही है।

आयत नम्बर 32 : तौबा करो और खुद पसन्दी से दूर रहो।

तर्जमा : वोह जो गुनाहे कबीरा और बे हयाइयों से बचते है और अगर कोई गुनाह हो जाएं तो फौरन रुक जाते हैं बेशक ! तुम्हारे रब की मग्फिरत बडी वसीअ है।

और वोह तुम्हें अच्छी तरह जानता है उस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया और जानता है जब तुम मांओ के पेट में हमल थे तो खुद अपने आप को पाकीजा न बताओ वोह खूब जानता है जो तुम में परहेजगार है।

पारह नम्बर 27 : सूरए रहमान

आयत नम्बर 8 से 10 : वज्न में चोरी न करो।

तर्जमा : और अल्लाह ने तराजू रखी के तराजू में बे ए'तिदाली (ना इन्साफी) न करो और इन्साफ के साथ तोल काइम करो और वज्न में न घटाओ।

आयत नम्बर 46 : जो अपने रब से डरे।

तर्जमा : और जो अपने रब के हुजूर खडे होने से डरे उस के लिये दो जन्नत है।

पारह नम्बर 27 : सूरए अल वाक़िआ

आयत नम्बर 77 से 80 : कुरआन को छूने से पहले वुजू जरूरी है।

तर्जमा : बेशक! येह इज्जत वाला कुरआन है, महफूज नविश्ते में, तो कोई उसे न हाथ लगाए सिवाए बा वुजू येह सारे जहानों के रब का उतारा हुवा है।

आयत नम्बर 85 : अल्लाह करीब है।

तर्जमा : और हम तुम से ज्यादा पास है, मगर तुम्हें निगाह नहीं।

पारह नम्बर 27 : सूरए हदीद

आयत नम्बर 1 से 6 : अल्लाह तुम्हारे साथ है और वोह सब कुछ जानता है

तर्जमा : अल्लाह की पाकी बयान करता है, जो कुछ आस्मान में है और जो कुछ जमीन में है, वोही इज्जत वाला व हिक्मत वाला है उसी के लिये हैं आस्मानों और जमीन की सल्तनत वोही जिलाता है और वोही मारता है और वोह सब कुछ कर सकता है।

वोही अव्वल, वोही आखिर वोही जाहिर वोही बातिन और वोही सब कुछ जानता है, वोह वोही है जिस ने आस्मानो जमीन छे दिन में पैदा फरमाया, फिर उस ने अर्श पर इस्तवा फरमाया जैसा कि उस की शान के लाइक है।

वोह जानता है, जो जमीन के अन्दर जाता है और जो उस से बाहर निकलता है और जानता है जो आस्मान से उतरता है और जो ऊपर चढता है।

वोह अल्लाह तुम्हारे साथ है तुम जहां भी रहो

और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है, उसी की है आस्मान व जमीन की सल्तनत और अल्लाह ही की तरफ सारे कामों की रुजूअ है, वोह रात को दिन के हिस्से में लाता है और दिन को रात के हिस्से में लाता है और वोह दिलों की बात जानता है।

आयत नम्बर 11 : अल्लाह की राह में खर्च करो।

तर्जमा : कौन है जो अल्लाह को कर्जे हस्ना दे तो वोह उसे डबल कर दे और उस को इज्जत का सवाब दे।

आयत नम्बर 18 : बेशक! सदका देने वाले मर्द और सदका देने वाली औरतें और वोह जिन्हों ने अल्लाह को कर्जे हस्ना दिया, उन के लिये डबल है और उन के लिये इज्जत का सवाब है।

आयत नम्बर 20-21 : दुन्या की जिन्दगी।

तर्जमा : जान लो कि येह दुन्या की जिन्दगी तो सिवाए खेल कूद के और कुछ नहीं है और शो सजावट और तुम्हारा आपस में एक दूसरे पर बडाई मारना और माल और औलाद में एक दूसरे पर जियादती चाहना।

येह उस बारिश की तरह, जिस ने उगाया सब्जा (हरयाली), येह किसानों को अच्छा लगा, फिर सूख गया और ऐसा हो गया जैसे खेती पीली पड गई और भूसी बन गई और आखिरत में सख्त अजाब है।

और अल्लाह की तरफ से बख्शिश और उस की रिजा बेहतर और दुन्या की जिन्दगी तो कुछ नहीं सिवाए धोखा, फरेब तो ऐ लोगो! दौडो अपने रब की बख्शिश और ऐसी जन्नत की तरफ, जिस की चौडाई

जैसे आस्मान और जमीन का फैलाओ। तय्यार की गई है उन के लिये जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाए।

येह सब अल्लाह का फज्ल है, वोह जिसे चाहे अता करे और अल्लाह बडा ही फज्ल वाला है।

आयत नम्बर 22 : मुसीबत, अल्लाह की तरफ से है।

तर्जमा : कोई भी मुसीबत न आस्मान में न जमीन में न तुम्हारी जानों में, मगर वोह एक किताब में लिखी हुई है। अल्लाह ही उसे पैदा करे और येह अल्लाह को आसान है।

खुलासा : तमाम आजमाइश, बला, कसोटी चाहे जिस्मानी हो चाहे माली, नुक्सान बीमारी, या जो भी तक्लीफ आए, उस को पैदा करने वाला अल्लाह ही है इन्सान तो बस मजाज है।

और मुसीबत दूर करने वाला सिर्फ वोही एक मालिके हकीकी है, वोही हकीकी फाइल है, बाकी सब मजाज है।

आयत नम्बर 23-24 : न आने की खुशी न जाने का गम।

तर्जमा : न गम खाओ उस पर जो तुम्हारे हाथ से निकल जाए और न खुशी मनाओ उस पर जो तुम्हें दिया जाए और अल्लाह कोई बडाई मारने वाले इतराने वाले को पसन्द नहीं करता।

और जो कन्जूसी करे और दूसरों को कन्जूसी करने का कहे और जो मुंह फेरे, तो बेशक! अल्लाह बे परवाह है, सब खूबियां सराहा।

खुलासा : आदमी को चाहिये कि ने'मत पर शुक्र करे फख्रो तकब्बुर नहीं और न इतराए और बलाओ, मुसीबत पर सब्र करे नाशुक्री या मायूसी नहीं।

पारह नम्बर 28 : सूरए मुजादलह

आयत नम्बर 7 : तुम्हारी कोई बात अल्लाह से पोशीदा नहीं।

तर्जमा : क्या तुम ने न देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आस्मानों में हैं और जो कुछ जमीन में है और जहां कहीं भी तीन शख्स

की सरगोशी हो, वहां वोह चौथा मौजूद है। और अगर पांच की हो तो वहां वोह छट्टा है और न उस से कम, न उस से ज्यादा की, लेकिन येह कि वोह उस के साथ है, जहां कहीं भी रहे, फिर कियामत के दिन बता देगा, जो कुछ उन्हों ने किया, बेशक! अल्लाह सब कुछ जानता है।

आयत नम्बर 9 : अच्छे मश्वरे करो।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो! जब तुम आपस में सलाह मश्वरे करो, तो गुनाह और हद से बढने और रसूल की नाफरमानी के मश्वरे न करो और नेकी और परहेजगारी के मश्वरे करो और अल्लाह से डरते रहो, जिस की तरफ उठाए जाओगे।

आयत नम्बर 22 : अल्लाह व रसूल के दुश्मनों से दोस्ती न करो।

तर्जमा : येह कभी भी न होगा कि जो लोग अल्लाह और आखिरत के दिन पर यकीन रखते है, वोह उन से दोस्ती करे जो अल्लाह व रसूल के मुखालिफ है, चाहे वोह उन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हो।

येह ऐसे लोग है जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान नक्श कर दिया है और अपनी तरफ की रूह से उन की मदद की है और उन को बागों में ले जाएगा, जिन के नीचे नहरे बहती है, वोह उस में हमेशा रहने वाले है।

येह वोह हैं कि अल्लाह उन से राजी और वोह अल्लाह से राजी, येह अल्लाह ही की जमाअत हैं और सुन लो सिर्फ अल्लाह की जमाअत ही कामयाब है।

पारह नम्बर 28 : सूरए हश्र

आयत नम्बर 16-17 : शैतान की चाल।

तर्जमा : शैतान के काम की मिसाल, जब उस ने आदमी को कहा कि कुफ्र कर, फिर जब उस ने कुफ्र कर लिया, तो बोला मैं तुम से अलग हूं, मैं अल्लाह से डरता हूं, जो सारे जहां का रब है।

तो अब उन दोनों का अन्जाम येह हुवा कि वोह दोनों आग में है, हमेशा उस में रहे, जालिमों की येही सजा है।

आयत नम्बर 20 : अल्लाह से डरो।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! हर जान येह देखें कि उस ने कल के लिये क्या आगे भेजा ? और अल्लाह से डरो कि बेशक ! उसे तुम्हारे कामों की खबर है।

और उन के जैसे न बनो, जिन्हों ने अल्लाह को भुला दिया, तो अल्लाह ने उसे बला में डाला और उन को अपनी जाने भी याद न रही और वोही फासिक है।

जन्नत वाले और दोजख वाले बराबर नहीं जन्नत वाले ही मुराद को पहुंचे।

आयत नम्बर 21 : कुरआन की अजमत और खौफे खुदा।

तर्जमा : और अगर हम इस कुरआन को किसी पहाड पर उतारते। तो जरूर तू देखता कि वोह अल्लाह के खौफ से डरा हुवा, झूका हुवा है, वोह खौफ के सबब टुकडे टुकडे हो जाता है और येह मिसाले हम इस लिये बयान फरमाते है कि लोग सोचे, तफक्कुर करे।

आयत नम्बर 22 से 24 : अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं।

तर्जमा : वोही अल्लाह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं हर छुपे और जाहिर का जानने वाला। वोही है बडा महेरबान रहमत वाला। वोही है, जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। निहायत पाक, सलामती देने वाला, ईमान बख्शने वाला, तकब्बुर वाला, बडाई वाला, अल्लाह शिर्क से पाक है वोही अल्लाह है, बनाने वाला, पैदा करने वाला। हर एक को सूरत देने वाला, उसी के है सब अच्छे अच्छे नाम, जो कुछ आस्मानों में है और जमीन में है सब उस की पाकी बोलते है और वोही इज्जत वाला, हिक्मत वाला है।

पारह नम्बर 28 : सूरए मुम्तहिनह

आयत नम्बर 1 : काफिरों को दोस्त न बनाओ।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ।

आयत नम्बर 13 : ऐ ईमान वालो ! उन लोगों से दोस्ती न करो जिन पर अल्लाह का गजब हुवा और वोह आखिरत से उम्मीद तोड बैठे, जैसे काफिर कब्र वालों से आस तोड बैठे है।

पारह नम्बर 28 : सूरए सफ

आयत नम्बर 2 : क्यूं ऐसी बात करते हो जो नहीं करते।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! क्यूं करते हो ऐसी बात ? जो नहीं करते अल्लाह को कैसी सख्त नापसन्द हैं, वोह बात जो कहते हो और करते नहीं।

पारह नम्बर 28 : सूरए जुमुआ

आयत नम्बर 8 से 10 : अल्लाह के जिक्र की तरफ दौडो और कारोबार छोड दो

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! जुमुआ के दिन जब अजान हो जाए तो अल्लाह के जिक्र की तरफ जल्दी चलो और खरीद, बेचान (कारोबार, बिज्नेस) छोड दो, येह तुम्हारे लिये ज्यादा बेहतर है अगर तुम जानो।

फिर जब नमाज मुकम्मल हो चुके तो जमीन में फेल जाओ और अल्लाह का फज्ल तलाश करो और अल्लाह को बहुत याद करो, इस उम्मीद पर कि फलाह पाओ।

पारह नम्बर 28 : सूरए मुनाफिकून

आयत नम्बर 9 : तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह के जिक्र से न रोके।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! तुम्हारा माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज तुम्हें अल्लाह के जिक्र से गाफिल न करे और जो ऐसा करे तो वोही लोग नुक्सान में हैं।

आयत नम्बर 10–11: राहे मौला में माल खर्च करो और कन्जूसी न करो

तर्जमा : और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में खर्च करो कब्ल इस के कि तुम में से किसी को मौत आए और फिर यूं कहने लगे कि मेरे रब ! तूने मुझे थोडी मुद्दत तक मोहलत क्यूं न दी कि मैं सदका देता और नेक बन जाता।

और अल्लाह हरगिज किसी को बिल्कुल मोहलत न देगा,जब उस का वा'दा आ जाए और अल्लाह को तुम्हारे कामों की खबर है।

पारह नम्बर 28 : सूरए तगाबुन

आयत नम्बर 11 : अल्लाह के हुक्म बिगैर मुसीबत आ ही नहीं सकती

तर्जमा : कोई मुसीबत तुम तक नहीं पहुंचती सिवाए अल्लाह के हुक्म के और जो अल्लाह पर ईमान वाले है, अल्लाह उन के दिल को हिदायत फरमा देगा।

खुलासा : और इस हिदायत के नतीजे में आदमी बला पर साबिर रहता है और उस की जबान शिक्वा शिकायत नहीं करती और वोह सवाब का हकदार बनता है।

आयत नम्बर 14 से 18 : तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद आजमाइश है

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! तुम्हारी कुछ बीबियां और तुम्हारे बच्चे तुम्हारे दुश्मन है, तो उन से सावचेत रहो।

और अगर मुआफ करो और बख्श दो, तो बेशक ! अल्लाह बख्श ने वाला महेरबान है।

तुम्हारा माल और तुम्हारे बच्चे जांच (कसोटी) ही हैं और अल्लाह के पास बडा सवाब है, तो अल्लाह से डरो जहां तक हो सके और फरमान सुनो और हुक्म मानो।

और अल्लाह की राह में अपने भले के लिये खर्च करो, जो अपनी जान के लालच से बचाया गया, तो वोही कामयाब होगा।

अगर तुम अल्लाह को अच्छा कर्ज दोगे तो वोह तुम्हारे लिये उस का डबल कर देगा और तुम्हें बख्श देगा और अल्लाह कद्र करने वाला हिल्म वाला है और हर निहां और अयां (छुपा और जाहिर) का जानने वाला इज्जत वाला हिक्मत वाला है।

पारह नम्बर 28 : सूरए तलाक

आयत नम्बर 2-3 : जो अल्लाह से डरे।

तर्जमा : येह नसीहत उसे फरमाई जाती है, जो अल्लाह और यौमे कियामत पर ईमान रखता हो और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोजी देगा जहां से उस को गुमान भी न हो और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वोह उसे काफी है।

आयत नम्बर 4 : जो अल्लाह से डरे।

तर्जमा : और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के काम में आसानी फरमा देता है।

आयत नम्बर 5 : जो अल्लाह से डरे।

तर्जमा : येह अल्लाह का हुक्म है कि उस ने तुम्हारी तरफ उतारा और वोह येह कि और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस की बुराइयां उतार देगा और उसे बडा सवाब देगा।

पारह नम्बर 28 : सूरए तेहरीम

आयत नम्बर 6 : अपने आप को और अपनी अयाल को जहन्नम की आग से बचाओ।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अपने आप को और अपनी अयाल को उस आग से बचाओ, जिस का इन्धन आदमी और पथ्थर है और उस पर सख्त कर्रे फिरिश्तें मुकर्रर है, जो अल्लाह का हुक्म नहीं टालते और जो हुक्म हो वोही करते है।

आयत नम्बर 8 : सच्ची तौबा करो।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की तरफ ऐसी तौबा करो जो आगे को नसीहत बन जाए, हो सकता है कि तुम्हारा रब तुम्हारी बुराइयां दूर कर दे और तुम्हें बागों में ले जाए जिन के नीचे नहरे बहती है।

पारह नम्बर 29 : सूरए मुल्क

आयत नम्बर 12 : जो अल्लाह से डरे।

तर्जमा : बेशक ! वोह लोग जो अल्लाह से बे देखे डरते है, उन के लिये बख्शिश और बहुत बडा सवाब है।

पारह नम्बर 29 : सूरए अल कलम

आयत नम्बर 42 से 45 : कियामत की हौलनाकियां।

तर्जमा : जिस दिन एक साक खोली जाएगी (जिस का मा'ना अल्लाह ही जानता है) और सजदे के लिये बुलाए जाएंगे। तो न कर सकेंगे, नीची निगाहें किये हुए, उन पर ख्वारी चढ रही होगी। बेशक ! जब दुन्या में सजदे के लिये बुलाए जाते थे। जब वोह तन्दुरुस्त थे तो न करते थे।

जो इस बात को झुटलाता है, उसे मुझ पर छोड दो करीब है कि मैं उन्हें आहिस्ता आहिस्ता जहन्नम की तरफ ले जाऊंगा, जहां से उन्हें खबर भी न होगी।

पारह नम्बर 29 : सूरए मआरिज

आयत नम्बर 1 से 18 : कियामत की हौलनाकियां।

तर्जमा : एक मांगने वाला वोह अजाब मांगता है, जो होने ही वाला है, उस का कोई टालने वाला नहीं, वोह अजाब होगा उस अल्लाह की तरफ से जो बुलन्दियों का मालिक है, मलाइका और जिब्रईल उस की बारगाह की तरफ रुजूअ करते है, वोह अजाब उस दिन होगा जिस की मिक्दार पचास हजार बरस है।

तो तुम अच्छी तरह सब्र करो, वोह लोग उसे दूर समझ रहे हैं और हम उसे नज्दीक देख रहे है, जिस दिन आस्मान होगा जैसे गली चांदी और पहाड ऐसे हल्के हो जाएगे जैसे ऊन और कोई दोस्त किसी दोस्त की बात न पूछेगा।

मुजरिम उस रोज आरजू करेगा, काश ! उस दिन के अजाब से छूट ने के बदले में दे दे अपने बेटे और बीवी और अपना भाई और अपना कुम्बा, अपनी जगह दे कर भी अपने को बचा ले। या जितने भी जमीन पर है सब बदले में देना चाहे पर हरगिज नहीं, वोह तो भडकती हुई आग है, खाल उतारने वाली बुला रही है, उसे जिस ने पीठ दी और मुंह फेरा और माल जोड कर रखा।

आयत नम्बर 19 से 35 : शाने मामिन।

तर्जमा : बेशक ! आदमी बडा बे सब्रा और लालची बनाया गया जब उसे बुराई पहुंचे तो बहुत गभराने वाला और जब भलाई पहुंचे तो रोक रखने वाला, सिवाए नमाजी। जो अपनी नमाज के पाबन्द है, उस के माल में हक है उस के लिये जो मांगे और उस के लिये भी जो न मांग सके तो महरूम रहे और वोह जो इन्साफ का दिन सच मानते है और जो अपने रब के अजाब से डर रहे हैं, बेशक ! उन के रब का अजाब बे खौफ होने की चीज नहीं।

और वोह जो अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करते हैं मगर अपनी बीबियों और शरई कनीजों पर, कि उन पर कुछ मलामत नहीं है और जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे, वोही हद से बढने वाले है।

और वोह जो अपनी अमानतों और अपने अहद (कौल, करार, वा'दे) की हिफाजत करते है और वोह जो अपनी गवाहियों पर काइम है और वोह जो अपनी नमाजों की हिफाजत करते है, येह वोह है जिन का बागों में ए'जाज होगा।

पारह नम्बर 29 : सूरए नूह

आयत नम्बर 3-4 : अल्लाह से डरो।

तर्जमा : फरमाया हजरते नूह ने अल्लाह की बन्दगी करो और उस से डरो और मेरा हुक्म मानो, वोह तुम्हारे कुछ गुनाह बख्श देगा और एक मुकर्रर मिआद तक तुम्हें मोहलत देगा।

आयत नम्बर 10 से 13 : अल्लाह से डरो, तौबा करो।

तर्जमा : अपने रब से मुआफी मांगो, वोह बडा मुआफ करने वाला है, तुम पर मुसलाधार बारिश भेजेगा और माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे लिये बाग बना देगा और तुम्हारे लिये नहरें बनाएगा, तुम्हें क्या हुवा कि अल्लाह से इज्जत हासिल करने की उम्मीद नहीं रखते ?

आयत नम्बर 28 : दुआए हजरते नूह عَلَيْهِ السَّلَام

तर्जमा : ऐ मेरे रब ! मुझे बख्श दे और मेरे मां बाप को बख्श दे और उसे भी जो ईमान के साथ मेरे घर में है और सब मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को और काफिरों पर तबाही बढा।

पारह नम्बर 29 : सूरए मुज्जम्मिल

आयत नम्बर 8 से 11 : पूरी दुन्या से कट कर सिर्फ उसी के हो जाओ

तर्जमा : अपने रब के नाम का जिक्र करो और सब से टूट कर सिर्फ उसी के बन कर रह जाओ, वोही हैं पूरब का रब और वोही पच्छिम का रब, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं तो तुम उसी को अपना कारसाज बनाओ और लोगों की बकवास पर सब्र करो, उसे अच्छी तरह छोड दो और उन झुटलाने वालों को मुझ पर छोडो और उन को थोडी मोहलत दो।

पारह नम्बर 29 : सूरए मुद्दस्सिर

आयत नम्बर 2 से 7 : डर सुनाओ।

तर्जमा : ऐ महबूब ! ऐ चादर औढने वाले ! खडे हो जाओ और लोगों को डर सुनाओ और अपने रब की बडाई बोलो और अपने कपडे पाक रखो और बुतों से दूर रहो और ज्यादा लेने की निय्यत से किसी पर एहसान मत करो और अपने रब के लिये सब्र करो ।

पारह नम्बर 29 : सूरए दहर

आयत नम्बर 1 से 4 : इन्सान को इस लिये पैदा फरमाया कि जांचे ।

तर्जमा : बेशक ! आदमी पर एक वक्त वोह भी गुजरा है कि उस का कहीं नाम भी न था । बेशक ! हम ने आदमी को मिली हुई मनी से पैदा किया, कि उसे जांचे, तो उसे सुनता देखता कर दिया । बेशक ! हम ने उसे राह दिखाई, तो अब वोह है या तो हक मानता, या नाशुक्री करता ।

पारह नम्बर 30 : सूरए नबा

आयत नम्बर 17 से 30 : कियामत की हौलनाकियां ।

तर्जमा : बेशक ! फैसले का दिन ठहरा हुवा वक्त है, जिस दिन सूर फूंका जाएगा । तो तुम चले आओगे, फौज दर फौज और आस्मान खोला जाएगा, कि दरवाजे हो जाएंगे और पहाड चलाए जाएंगे, जैसे चमकती रेत दूर से ऐसा लगे जैसे पानी, बेशक ! जहन्नम सरकशों का ठिकाना, ताक में है (इन्तिजार में है) उस में कर्नो रहेंगे और उस में किसी तरह की ठंडक न होगी और पीने का गरम खोलता पानी के सिवा कुछ नहीं और दोजखियों के टपकता जलता पीप जैसो को तैसा बदला । बेशक ! उन को हिसाब का डर न था और उन्हों ने हमारी आयतें लिमिट से ज्यादा झूटलाई । और हम ने हर चीज लिख कर शुमार कर रखी है अब चखो कि तुम्हारे लिये अजाब ही बढता रहेगा ।

पारह नम्बर 30 : सूरए नाजिआत

आयत नम्बर 34 से 39 : कियामत की हौलनाकियां ।

तर्जमा : फिर जब वोह आम मुसीबत सब से बडी मुसीबत आ जाएगी, उस दिन आदमी याद करेगा। जो कोशिश उस ने दुन्या में की थी।

और जहन्नम हर देखने वाले पर जाहिर की जाएगी तो वोह जिस ने दुन्या में बगावत, सरकशी की थी और दुन्या की जिन्दगी पसन्द कर बैठा था, वोह तो बेशक ! जहन्नम ही उस का ठिकाना है।

पारह नम्बर 30 : सूरए अबस

आयत नम्बर 33 से 41 : कियामत की हौलनाकियां।

तर्जमा : जब आ जाएगी, वोह कान फाडने वाली चिंघाड उस दिन आदमी अपने भाई और मां बाप और जोरू और बेटों से भागेगा, उन में से हर एक को उस दिन सिर्फ बस अपनी फिक्र बस है।

कितने मुंह उस दिन रौशन होंगे और हंसते और खुशियां मनाते होंगे और कितने मुंह पर उस दिन गर्दो गुबार पडी होगी, कि उन पर सियाही (तारीकी, कालक) चडी होगी।

पारह नम्बर 30 : सूरए तक्वीर

आयत नम्बर 1 से 14 : कियामत की हौलनाकियां।

तर्जमा : जब धुप लपेटी जाए और जब तारे जड पडे और जब पहाड चलाए जाए और जब थकी ऊंटनियां छुट्टी फिरे और जब वहशी जानवर जम्अ किये जाए और जब समुन्दर सुलगाया जाए और जब जानवरों के जोड बने और जब जिन्दा (कब्र) में दबाई हुई (लडकी) से पूछा जाए कि तुझे किस खता पर मारी गई ? और जब नामए आ'माल खोले जाए और जब आस्मान जगह से खींच लिया जाए और जब जहन्नम भडकाई जाए और जब जन्नत पास लाई जाए, हर जान को मा'लूम हो जाएगा, जो हाजिर लाई गई।

पारह नम्बर 30 : सूरए इन्फितार

आयत नम्बर 1 से 12 : कियामत की हौलनाकियां।

तर्जमा : जब आस्मान फट पडे और जब तारे जड पडे और जब समुन्दर बहा दिये जाए और जब कब्रे कुरेदी जाए, उस वक्त हर जान येह जान लेगी कि क्या आगे भेजा ? और क्या पीछे छोडा ? ऐ इन्सान ! तुझे किस चीज ने अपने करम वाले रब से गफ्लत में रखा ? जिस ने तुझे पैदा किया और ठीक बनाया, फिर हमवार किया उस ने जिस सूरत में चाहा, तुझे तरकीब किया कोई नहीं, बल्कि तुम ही इन्साफ होने को झूटलाते थे और बेशक ! तुम पर कुछ निगहबान (फिरिश्ते) है लिखने वाले और जानते है, जो कुछ तुम करते हो।

पारह नम्बर 30 : सूरए मुतफ्फिफीन

आयत नम्बर 1 से 6 : कम तोलने वाले की खराबी है।

तर्जमा : कम तोलने वाले के लिये खराबी है वोह येह कि जब दूसरों से ले तो पूरा ले और जब उन्हें दूसरों को माप तोल कर दे तो कम दे क्या उन्हीं को गुमान नहीं कि उन्हें एक अजमत वाले दिन के लिये उठना है जिस दिन सब लोग रब्बुल आलमीन के हुजूर खडे किये जाएंगे।

पारह नम्बर 30 : सूरए इन्शिक़ाक़

आयत नम्बर 1 से 15 : कियामत की हौलनाकियां।

तर्जमा : जब आस्मान शक हो और अपने रब का हुक्म सुने और उस को येही सजावार है।

और जब जमीन दराज की जाए और जो कुछ भी उस में है उसे निकाल दे और खाली हो जाए और अपने रब का हुक्म सुने और उसे येही सजावार है।

ऐ इन्सान ! बेशक ! तुझे अपने रब की तरफ कियामत के दिन जरूर दौडना है, फिर उसे मिलना है।

तो वोह जिस को उस का आ'माल नामा दाहिने हाथ में दिया गया उस से अन्कीरब आसान हिसाब होगा और वोह अपने घर वालों की तरफ खुश खुश पलटेगा।

और वोह जिस का नामए आ'माल पीठ के पीछे दिया गया वोह अन्करीब मौत मांगेगा और भडकती आग में जाएगा बेशक! वोह अपने घर में खुश था, वोह येह समझ बैठा था कि उस को (कियामत में हिसाब किताब के लिये) फिरना नहीं है बेशक! उस का रब उसे देख रहा है।

पारह नम्बर 30 : सूरए बुरूज

आयत नम्बर 10 : मुसलमानों को सताने वाले।

तर्जमा : बेशक! जिन्हों ने ईजा दी, मुसलमान मर्दों और औरतों को फिर तौबा न की, उन के लिये जहन्नम का अजाब है और उन के लिये आग का अजाब है।

पारह नम्बर 30 : सूरए तारिक

आयत नम्बर 5 से 10 : आदमी अपनी पैदाइश में गौर करे!

तर्जमा : चाहिये कि आदमी गौर करे कि उस को किस चीज से बनाया गया है, जोश मारते हुए पानी से जो मर्दों की पीठ और औरतों के सीनों के बीच से निकलता है।

बेशक! अल्लाह उसे वापस ले जाने पर कादिर है जिस दिन छुपी बात की जांच पडताल होगी, उस रोज आदमी के पास न कुछ जोर होगा और न कोई मददगार।

पारह नम्बर 30 : सूरए आ'ला

आयत नम्बर 14 से 17 : कामयाब कौन ?

तर्जमा : बेशक! कामयाब हुवा वोह जो पाक हुवा और अपने रब का जिक्र किया और नमाज पढी बल्कि तुम तो इस दुन्या की जिन्दगी को पसन्द कर बैठे हो जब कि आखिरत बेहतर है।

पारह नम्बर 30 : सूरए गाशियह

आयत नम्बर 1 से 7 : कियामत की हौलनाकियां।

तर्जमा : बेशक! तुम्हारे पास उस मुसीबत की खबर आई जो

छा जाएगी, कितने मुंह उस रोज जलील होंगे कि काम करे और मुसीबत उठाए और भडकती हुई आग में जाए।

उन्हें निहायत जलते हुए गरम चश्मे का पानी पिलाया जाएगा और उन को खाना सिर्फ आग के कांटे न उस से बदन बढे और न भूक मिटे।

पारह नम्बर 30 : सूरए अल फज्र

आयत नम्बर 16 से 20 : मुसीबत क्यूं आती है ? रिज्क क्यूं घटता है ?

तर्जमा : आदमी तो जब उस का रब उसे आजमाए और उस को इज्जत शोहरत और ने'मत दे तो कहता है मेरे रब ने मुझे इज्जत दी और जब कि आजमाए और उस का रिज्क तंग कर दे तो कहता है कि मेरे रब ने मुझे ख्वार किया।

बल्कि (येह इस लिये कि) तुम यतीम की इज्जत नहीं करते हो और आपस में एक दूसरे को मोहताजो का खाना खिलाने की रग्बत नहीं करते हो और मिरास का माल खा जाते हो और माल की बहुत ज्यादा महब्बत रखते हो।

आयत नम्बर 21 से 26 : कियामत की हौलनाकियां।

तर्जमा : हां हां, जब जमीन टकरा कर टुकडे टुकडे कर दी जाए और तुम्हारे रब का हुक्म आए और फिरिश्ते कतार दर कतार आए और उस दिन जब जहन्नम करीब लाई जाए।

उस दिन आदमी सोचेगा, लेकिन अब सोचने का वक्त कहां ? वोह कहेगा "हाए अफ्सोस ! शायद मैं ने जीते जी आगे नेकी भेजी होती तो उस दिन उन का सा अजाब कोई नहीं करता और उन का सा बान्ध कोई नहीं बान्धता।"

आयत नम्बर 27 से 30 : परहेजगारों को अल्लाह का खिताब।

तर्जमा : ऐ इत्मिनान वाली जान ! अपने रब की तरफ लौट यूं कि तू उस से राजी और वोह तूझ से राजी, फिर मेरे खास बन्दों में शामिल हो और मेरी जन्नत की तरफ आ जा।

पारह नम्बर 30 : सूरतुल लैल

आयत नम्बर 5 से 16 : अहवाले कियामत, सखावत करने वाले और कन्जूस का हाल।

तर्जमा : तो वोह जिस ने माल खर्च किया और परहेजगारी की और सब से अच्छी को सच माना तो बहुत जल्द हम उसे आसानी मुहय्या कर देंगे।

और वोह जिस ने बुख्ल किया और बे परवाह बना रहा और सब से अच्छी को झुटलाया तो हम बहुत जल्द उस के लिये दुश्वारी मुहय्या कर देंगे और उस का जम्अ किया हुवा माल उस के काम न आएगा, जब वोह हलाकत में पडेगा।

बेशक ! हिदायत फरमाना हमारे जिम्मे है और दुन्या और आखिरत दोनों के हम ही मालिक है, तो मैं तुम्हें डराता हूं उस आग से जो भडक रही है, उस में वोही जाएगा जो बडा बद बख्त झूटलाने वाला और मुंह फेरने वाला।

पारह नम्बर 30 : सूरए जिल्जाल

आयत नम्बर 1 से 8 : कियामत की हौलनाकियां।

तर्जमा : जब जमीन थर थरा दी जाए और उस का थर थराना ठहरा है और जमीन अपना बोझ (मुर्दे, दफीने) बाहर फेंक दे और आदमी कहे कि क्या हुवा ?

उस दिन वोह अपनी खबरें बताएगी, इस लिये कि तेरे रब ने उसे हुक्म भेजा, उस दिन लोग अपने रब की तरफ फिरेंगे कई राह हो कर, ताकि वोह अपना किया देख ले।

तो जो एक जर्रा बराबर भलाई करे वोह उसे देखेगा और जो एक जर्रा बराबर बुराई करे वोह उसे देखेगा।

पारह नम्बर 30 : सूरए अल कारिअह

आयत नम्बर 1 से 11 : कियामत की हौलनाकियां।

तर्जमा : दिल दहला देने वाली, वोह क्या दिल दहला देने वाली ? और तूने क्या जाना क्या हैं दिल दहला देने वाली ?

जिस दिन आदमी होंगे, जैसे पतंगे और पहाड होंगे जैसे धुन की ऊन, (रूई) तो उस दिन जिन की तोले भारी हुई वोह तो मन मानते ऐश में है।

और जिन की तोले हल्की पडी, वोह नीचा दिखाने वाली (जहन्नम) की गोद में है और तूने क्या जाना क्या है नीचा दिखाने वाली ? एक आग है शो'ला मारती।

पारह नम्बर 30 : सूरए तकासुर

आयत नम्बर 1 से 8 : माल की महब्बत।

तर्जमा : तुम्हें गाफिल रखा माल की ज्यादा तलबी ने यहां तक कि तुम ने कब्रों का मुंह देखा, हां हां तुम जल्द जान लोगे, फिर हां हां जल्द जान जाओगे।

हां अगर तुम यकीन का जानना जानते तो माल की महब्बत न रखते, बेशक! जरूर तुम जहन्नम को देखोगे फिर जरूर उसे यकीन के साथ देखोगे और उस दिन जरूर तुम से ने'मतों के बारे में सवाल होगा।

पारह नम्बर 30 : सूरए अल हुमजह

आयत नम्बर 1 से 9 : कियामत की हौलनाकियां।

तर्जमा : खराबी है उन के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐब करे और पीठ पीछे बुराई करे, जिस ने माल जम्अ किया और गिन गिन कर रखा, क्या वोह येह समझता हैं कि उस का माल उसे दुन्या में हमेशा रखेगा ?

हरगिज नहीं जरूर वोह रोंदने वाली जहन्नम में फेंका जाएगा और तूने क्या जाना रोंदने वाली क्या है ? येह अल्लाह की आग जो भडक रही है, जो दिलो पर चड जाएगी, बेशक! वोह उन पर बंद कर दी जाएगी, लम्बे लम्बे सुतूनों में।

बशाइरुल खैरात

पढने से पहले येह दुआ पढिये

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्मा–इन्नी–नवयतु–बि–सलाती–अलन्नबिय्यि–सल्लल्लाहु–अलैहि–वसल्लम–इम्तिषालल–लि–अम्रिका–व–ता'जीमन–लि–नबिय्यिका–सय्यिदिना–मुहम्मदिन–सल्लल्लाहु–अलैहि–वसल्लम–फ–तकब्बल्हा–मिन्नी–बि–फद्लिका–व–इहसानिका–व–अजिल–हिजाबल–गफ्लति–अन–कल्बी–वजअल्नी–मिन–इबादिकस–सालिहीन ०

तर्जमा : "ऐ अल्लाह ! मैं ने रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजने की निय्यत तेरे हुक्म पर अमल करने के लिये और हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'जीम के लिये की है, ऐ अल्लाह अपने फज्लो करम व एहसान से इसे कुबूल फरमा और मेरे दिल पर से गफ्लत के पर्दे दूर फरमा और मुझे अपने नेक बन्दों में शामिल कर। (आमीन या रब्बल–आलमीन)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल–हम्दु– लिलाहि– रब्बिल– आलमीन

अल्लाहुम्मा–सल्लि–वसल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–मुअमिनीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु–व–बश्शिरिल–मुअमिनीना ० व–अन्नल्लाह–ला–युदीऊ–अजरल–मुअमिनीना ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो मोमिनों के लिये खुश खबरी देने और पहुंचाने वाले हैं। जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि। और ईमान वालों को खुश खबरी दो। और बेशक! अल्लाह नेकों का बदला जाएअ नहीं करता।"

अल्लाहुम्मा–सल्लि–व–सल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिज–जाकिरीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु–फज–कुरूनी–अज–कुर–कुम ० उजकुरुल्लाहा–जिक्रन–कसीरंव ० व–सब्बिहूहु–बुकरतंव–व–असीला ० हुवल्लजी–युसल्ली–अलयकुम–व–मलाइकतुहु–लि–युख्रि–जकुम–मिनज–जुलुमाति–इलन–नूरि–व–काना–बिल–मुअमिनीना–रहीमा ० तहिय्यतुहुम–यौमा–यल्कवनहू–सलामुन–व–अअद्दा–लहुम–अजरन–करीमा ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो जिक्र करने वालों को खुश खबरी सुनाने वाले और खुश खबरी पहुंचाने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है : "तो मेरी याद करो, मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा। अल्लाह को बहुत याद करो और सुब्हो शाम उस की पाकी बोलो। वोही है कि दुरूद भेजता है तुम पर वोह और उस के फिरिश्ते कि तुम्हें अन्धेरियों से उजाले की तरफ निकालें और वोह मुसलमानों पर महेरबान है। उन के लिये मिलते वक्त की दुआ सलाम है और उन के लिये इज्जत का सवाब तय्यार रखा है।"

۞۞۞

अल्लाहुम्मा–सल्लि–वसल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–आमिलीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु–अन्नी–ला–उदीऊ–अमला–आमिलिन–मिन्कुम–मिन–जकरिन–अव–उन्षा–व–बिमा–काला–व–मन–अमिला–सालिहम–मिन–जकरिन–अव–उन्षा–व–हुवा–मुअमिनुन–फ–ऊलाइका–यद–खुलुनल–जन्नता–युरजकूना–फीहा–बिगैरि–हिसाबिन ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो अमल करने वालों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि

"मैं तुम में काम वाले की महेनत अकारत नहीं करता मर्द हो, या औरत। और जो अच्छा काम करे मर्द ख्वाह औरत और हो मुसलमान तो वोह जन्नत में दाखिल किये जाएंगे, वहां बे गिनती रिज्क पाएंगे।"

۞۞۞

अल्लाहुम्मा–सल्लि–व–सल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–अव्वाबीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु–फ–इन्नहू–काना–लिल–अव्वाबीना–गफूरन ० लहुम–मा–यशाऊना–इन्दा–रब्बिहिम–जालिका–जजाउल–मुहसिनीना ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो तौबा करने वालों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि "तो बेशक! वोह तौबा करने वालों का बख्शने वाला है। उन के लिये है जो वोह चाहें, अपने रब के पास नेकों का येही सिला (बदला) है।"

۞۞۞

अल्लाहुम्मा–सल्लि–व–सल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लित–तव्वाबीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : इन्नल्लाहा–युहिब्बुत–तव्वाबीना–व–युहिब्बुल–मुततहि्हरीना ० व–हुवल–लजी–यक्बलुत–तौबता–अन–इबादिही–व–यअफू–अंस–सय्यिआति ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो बहुत तौबा करने वालों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि "बेशक ! अल्लाह पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को। और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा कुबूल फरमाता है और गुनाहों से दरगुजर फरमाता है।"

अल्लाहुम्मा–सल्लि–व–सल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–मुख्लिसीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : फ–मन–काना–यरजू–लिकाआ–रब्बिही–फल–

या'मल–अमलन–सालिहंव–वला–युश्रिक–बि–इबादति–रब्बिही–अहदन ० मुख्लिसीना–लहुद–दीन ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो मुख्लिसों के लिये खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि। "तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो, उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे। निरे उस के बन्दे हो कर।"

✡✡✡

अल्लाहुम्मा–सल्लि–व–सल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–मुसल्लीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : व–अकिमिस्सलाता ० इन्नस्सलाता–तन्हा–अनिल–फहशाइ–वल–मुन्करि–अकिमिस्सलाता–वअ–मुर–बिल–मअरूफि–वन्हा–अनिल–मुन्करि–वस–बिर–अला–मा–असाबका–इन्न–जालिका–मिन–अजमिल–उमूरि ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो नमाज पढने वालों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि "और नमाज काइम रख। बेशक ! नमाज मन्अ करती है बेहयाई और बुरी बात से। नमाज काइम रख और अच्छी बात का हुक्म दे और बुरी बात से मन्अ कर और जो उफ्ताद (मुसीबत) तुझ पर पडे उस पर सब्र कर, बेशक येह हिम्मत के काम है।"

✡✡✡

अल्लाहुम्मा–सल्लि–व–सल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–खाशिइना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : वस्तईनु–बिस्सब्रि–वस्सलाति–व–इन्नहा–ल–कबीरतुन–इल्ला–अलल–खाशिईन ० अल्लजीना–यजुन्नूना–अन्नहुम–

मुलाकू-रब्बिहिम-व-अन्नहुम-इलैहि-राजिऊना ० अल्लजीना-यजकुरूनल्लाहा-कियामंव-व-कुऊदंव-व-अला-जुनूबिहिम-व-यतफक-करूना-फी-खल्किस-समावाति-वल-अर्दि-रब्बना-मा-खलक्ता-हाजा-बातिलन-सुब्हानका-फकिना-अजाबन्नारि ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो आजिजी करने वालों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "और सब्र और नमाज से मदद चाहो और बेशक ! नमाज जरूर भारी है मगर उन पर भारी नहीं जो रब के हुजूर गिडगिडाते है। जिन्हें यकीन है कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उसी की तरफ फिरना है। जो अल्लाह की याद करते हैं खडे और बैठे और करवट पर लैटे और आस्मानों और जमीन की पैदाइश में गौरो फिक्र करते हैं, ऐ रब हमारे ! तूने येह बेकार न बनाया। पाकी है तुझे, तू हमें दोजख के अजाब से बचा ले।"

❁❁❁

अल्लाहुम्मा-सल्लि-वसल्लिम-अला-सय्यिदिना-मुहम्मदिनिल-बशीरिल-मुबश्शिरि-लिस-साबिरीना-बि-मा-कालल्लाहुल-अजीमु : इन्नमा-युवफ्फस-साबिरूना-अजरहुम-बिगैरि-हिसाबिन ० उलाइकल-लजीना-हदाहुमुल्लाहु-व-ऊलाइका-हुम-ऊलूल-अलबाबि।

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो सब्र करने वालों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "साबिरों ही को उन का सवाब भरपूर दिया जाएगा, बे गिनती। येह है जिन को अल्लाह ने हिदायत फरमाई और येह है जिन को अक्ल है।"

❁❁❁

अल्लाहुम्मा-सल्लि-वसल्लिम-अला-सय्यिदिना-मुहम्मदिनिल-बशीरिल-मुबश्शिरि-लिल-खाइफीना-बि-मा-कालल्लाहुल-अजीमु : व-लि-मन-खाफा-मकामा-रब्बिही-

जन्नतानि ० व–अम्मा–मन–खाफा–मकामा–रब्बिही–व–नहन–नफ्सा–अनिल–हवा–फ–इन्नल–जन्नता–हियल–माअवा ।

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो डरने वालों को खुश खबरी देने वाले है, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "और जो अपने रब के हुजूर खडे होने से डरे, उस के लिये दो जन्नतें हैं। और वोह जो अपने रब के हुजूर खडे होने से डरा और नफ्स को ख्वाहिश से रोका, तो बेशक ! जन्नत ही ठिकाना है।"

❀❀❀

अल्लाहुम्मा–सल्लि–वसल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–मुत्तकीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : व–रहमती–वसिअत–कुल्ला–शयइन–फ–स–अक्तुबुहा–लिल्लजीना–यत्तकूना–व–युअतूनज–जकात–वल–लजीना–हुम–बि–आयातिना–युअमिनूना ० अल्लजीना–यत्तबिऊनर–रसूलन–नबिय्यल–उम्मिया ० फ–उलाइका–लहुम–जजाउद–दिअफि–बिमा–अमिलू–व–हुम–फिल–गुरुफाति–आमिनूना ।

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो परहेजगार लोगों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "और मेरी रहमत हर चीज को घेरे है, तो अन्करीब मैं ने'मतों को उन के लिये लिख दूंगा, जो डरते और जकात देते हैं और हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं। वोह जो गुलामी करेंगे उस रसूल बे पढे, गैब की खबरें देने वाले की। उन के अमल का बदला और वोह बाला खानों में अम्नो–अमान से है।"

अल्लाहुम्मा–सल्लि–वसल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–मुख्तिबीना–बिमा–कालल्लाहुल–अजीमु : व–बश्शिरिल–मुख्बितीनल–लजीना–इजा–

जुकिरल्लाहु–वजिलत–कुलूबुहुम वल्लजीना–युअतूना–मा–आतवं–व–कुलूबुहुम–वजिलतुन–अन्नहुम–इला–रब्बिहिम–राजिऊना ० उलाइका–युसारिऊना–फील–खयराति–व–हुम–लहा–साबिकूना ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो आजिजी करने वालों को खुश खबरी देने वाले है, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "और ऐ महबूब ! खुशी सुना दो, उन तवाजोअ वालों को कि जब अल्लाह का जिक्र होता है, उन के दिल डरने लगते है। और वोह जो देते हैं, जो कुछ दें और उन के दिल डर रहे हैं, यूंकि उन को अपने रब की तरफ फिरना है। येह लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और येही सब से पहले उन्हें पहुंचे।"

अल्लाहुम्मा–सल्लि–वसल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिस–साबिरीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : व–बश्शिरिस–साबिरीनल–लजीना–इजा–असाबत्हुम–मुसीबतुन–कालू–इन्ना–लिल्लाहि–व–इन्ना–इलैहि–राजिऊना–उलाइका–अलैहिम–सलवातुम–मिर–रब्बिहीम–व–रहमतुंव–व–ऊलाइका–हुमुल–मुहतदूना–इन्नी–जजयतु–हुम–यौमा–बिमा–सबरू–अन्नहुम–हुमुल–फाइजूना ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो सब्र करने वालों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "खुश खबरी सुना उन सब्र वालों को, कि जब उन पर कोई मुसीबत पडे, तो कहें हम अल्लाह के माल हैं और हम को उसी की तरफ फिरना। येह लोग है जिन पर उन के रब की दुरूदें हैं और रहमत और येही लोग राह पर हैं। बेशक आज मैं ने उन के सब्र का उन्हें येह बदला दिया कि वोही कामयाब है।"

अल्लाहुम्मा–सल्लि–वसल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–काजिमीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : अल्लजीना–युनफिकूना–फिस्सर्राइ–वद–दर्राइ–वल–काजिमीनल–गयजा–वल–आफीना–अनिन्नासि–वल्लाहु–युहिब्बुल–मुहसिनीना ० फ–मन–अफा–व–अस्लहा–फ–अजरुहु–अलल्लाहि–इन्नहु–ला–युहिब्बुज–जालिमीना ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो गुस्से को पी जाने वालों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "वोह जो अल्लाह की राह मे खर्च करते हैं, खुशी में और रन्ज में और गुस्सा पीने वाले और लोगों से दरगुजर करने वाले और नेक लोग अल्लाह के महबूब है। तो जिस ने मुआफ किया और काम संवारा, उस का अज्र अल्लाह पर है। बेशक! वोह दोस्त नहीं रखता जालिमों को।"

अल्लाहुम्मा–सल्लि–वसल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–मुहसिनीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : व–अहसिनू–इन्नल्लाहा–युहिब्बुल–मुहसिनीना ० मन–जाआ–बिल–हसनति–फ–लहु–अश्रु–अमसालिहा–व–मन–जाआ–बिस्सय्यिअति–फला–युजजा–इल्ला–मिस्लहा–व–हुम–ला–युजलमूना ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो भलाई करने वालों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "और भलाई वाले हो जाओ, बेशक! भलाई वाले अल्लाह के महबूब हैं। जो एक नेकी लाएं, तो उस के लिये, उस जैसी दस हैं और जो बुराई लाए, तो उसे बदला न मिलेगा, मगर उस के बराबर और उन पर जुल्म न होगा।"

अल्लाहुम्मा–सल्लि–वसल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–मुतसद्दिकीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : व–अन–तसद्दकू–खयरुल–लकुम–इन–कुन्तुम–तअलमूना ० इन्नल्लाह–यजजिल–मुतसद्दिकीना ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो सदका देने वालों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "और येह कि सदका देना तुम्हारे लिये बेहतर है, अगर तुम जानो। बेशक अल्लाह खैरात वालों को सिला देता है।"

۞۞۞

अल्लाहुम्मा–सल्लि–वसल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–मुन्फिकीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : व–मिम्मा–रजकनाहुम–युन्फिकुना ० वमा–अन्फकतुम–मिन–शयइन–फहुवा–युख्लिफुहु–व–हुवा–खैरुर्राजिकीन ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो अल्लाह की राह में खर्च करने वालों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "और हमारी दी हुई रोजी में से हमारी राह में खर्च करते हैं। और जो चीज तुम अल्लाह की राह में खर्च करो, वोह उस के बदले और देगा और वोह सब से बेहतर रिज्क देने वाला है।"

۞۞۞

अल्लाहुम्मा–सल्लि–वसल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिश्शाकिरीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : वश्कुरू–ने'मतल्लाहि–इन–कुन्तुम–इय्याहु–तअबुदूना ० ल–इन–शकरतुम–ल–अजीदन्नकुम–व–लइन–कफरतुम–इन्ना–अजाबी–ल–शदीद।

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो शुक्र करने वालो को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "और अल्लाह की ने'मत का शुक्र करो अगर तुम उस की इबादत करते हो। अगर शुक्र करोंगे, तो मैं तुम्हें और दूंगा और अगर नाशुक्री करोंगे तो मेरा अजाब सख्त है।"

۞۞۞

अल्लाहुम्मा-सल्लि-वसल्लिम-अला-सय्यिदिना-मुहम्मदिनिल-बशीरिल-मुबश्शिरि-लिस-साइलीना-बि-मा-कालल्लाहुल-अजीमु : फ-इन्नी-करीबुन-उजीबु-दा'वतद-दाइ-इजा-दआनि। व-काला-रब्बुकुमुद-ऊनी-अस्तजिब-लकुम ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो अल्लाह से मांगने वालों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "तो मैं नजदीक हूं, दुआ कुबूल करता हूं पुकारने वाले की, जब मुझे पुकारे। और तुम्हारे रब ने फरमाया : मुझ से दुआ करो मैं कुबूल करूंगा।"

۞۞۞

अल्लाहुम्मा-सल्लि-वसल्लिम-अला-सय्यिदिना-मुहम्मदिनिल-बशीरिल-मुबश्शिरि-लिस-सालिहीना-बि-मा-कालल्लाहुल-अजीमु : अन्नल-अर्दा-यरिषुहा-इबादियस-सालिहुना ० ऊलाइका-हुमुल-वारिषुना। अल्लजीना-यरिषूनल-फिरदौसा-हुम-फीहा-खालिदूना।

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो नेक लोगों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "बेशक ! इस जमीन के वारिस मेरे नेक बन्दे है। येही लोग वारिस है कि फिरदौस की मीरास पाएंगे। वोह उस में हमेशा रहेंगे।"

अल्लाहुम्मा–सल्लि–वसल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–मुहसिनीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : इन्नल्लाहा–व–मलाइकतहु–युसल्लूना–अलन–नबिय्यि–या–अय्युहल–लजीना–आमनू–सल्लू–अलैहि–व–सल्लिमू–तस्लीमा ० युअतिकुम–किफ्लैनि–मिर–रहमतिही–व–यजअल–लकुम–नूरन–तम्शूना–बिही–व–यगफिर–लकुम–वल्लाहु–गफूरुर्रहीमु ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो नेकी करने वालों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "बेशक! अल्लाह और उस के फिरिश्ते दुरूद भेजते हैं, उस गैब बताने वाले (नबी) पर, ऐ ईमान वालो ! उन पर दुरूद और खूब सलाम भेजो। वोह अपनी रहमत के दो हिस्से तुम्हें अता फरमाएगा और तुम्हारे लिये नूर कर देगा, जिस में चलो और तुम्हें बख्श देगा और अल्लाह बख्शने वाला महेरबान है।"

अल्लाहुम्मा–सल्लि–वसल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–मुबश्शिरीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : व–बश्शिरिल–लजीना–आमनू–व–अमिलुस्सालिहाति। लहुमुल–बुशरा–फिल–हयातिद–दुन्या–व–फिल–आखिरति–ला–तब्दीला–लि–कलिमातिल्लाहि–जालिका–हुवल–फवजुल–अजीमु ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो खुश खबर देने वालों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "और खुश खबरी दो उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये। उन्हें खुश खबरी है दुन्या की जिन्दगी में और आखिरत में, अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं, येही बडी कामयाबी है।"

अल्लाहुम्मा–सल्लि–वसल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–फाइजीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : व–मंय–युतिइल्लाहा–व–रसूलुहु–फ–कद–फाजा–फवज्न–अजीमा ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो मुराद पाने वालों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "और जो अल्लाह और उस के रसूल की फरमां बरदारी करे, उस ने बडी कामयाबी पाई ।"

✡✡✡

अल्लाहुम्मा–सल्लि–वसल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिज–जाहिदीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : अल–मालु–वल–बनूना–जीनतुल–हयातिद–दुन्या–वल–बाकियातुस–सालिहातु–खैरुन–इन्दा–रब्बिका–सवाबंव–व–खैरुन–अमला ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो परहेजगारों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "माल और बेटे येह जीती (जिन्दा) दुन्या का सिंगार हैं और बाकी रहने वाली अच्छी बातें, उन का सवाब तुम्हारे रब के यहां बेहतर और वोह उम्मीद में सब से भली ।"

✡✡✡

अल्लाहुम्मा–सल्लि–वसल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–उम्मिय्यीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : कुन्तुम–खैरा–उम्मतिन–उख्रिजत–लिन्नासि–तअमुरूना–बिल–मा'रूफि–व–तन्हवना–अनिल–मुन्करि ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो बे पढे लिखे लोगों को खुश खबरी देने वाले हैं जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "तुम बेहतर हो, उन सब उम्मतों में, जो लोगों में जाहिर हुईं, भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ करते हो।"

۞۞۞

अल्लाहुम्मा-सल्लि-वसल्लिम-अला-सय्यिदिना-मुहम्मदिनिल-बशीरिल-मुबश्शिरि-लिल-मुस्तफीना-बि-मा-कालल्लाहुल-अजीमु : षुम्मा-अवरष-नल-किताबल-लजीनस-तफयना-मिन-इबादिना-फ-मिन्हुम-जालिमुल-लि-नफ्सिहि-वमिन्हुम-मुक्तसिदुन-व-मिन्हुम-साबिकुम-बिल-खैराति-बि-इज्निल्लाहि-जालिका-हुवल-फदलुल-कबीरु ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो बरगुजीदा लोगों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "फिर हम ने किताब का वारिस किया, अपने चूने हुए बन्दों को, तो उन में कोई अपनी जान पर जुल्म करता है और उन में कोई मियाना चाल पर है और उन में कोई वोह है जो अल्लाह के हुक्म से भलाइयों में सब्कत ले गया, येही बडा फज्ल है।"

۞۞۞

अल्लाहुम्मा-सल्लि-वसल्लिम-अला-सय्यिदिना-मुहम्मदिनिल-बशीरिल-मुबश्शिरि-लिल-मुज्निबीना-बि-मा-कालल्लाहुल-अजीमु : कुल-या-इबादियल-लजीना-अस्रफू-अला-अन्फुसिहिम-ला-तक्नतु-मिर-रहमतिल्लाहि-इन्नल्लाह-यगफिरुज-जुनूबा-जमीअन-इन्नहु-हुवल-गफूर्रहिमु ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो गुनहगारों को खुश खबरी देने

वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "तुम फरमाओ ऐ मेरे वोह बन्दों जिन्हों ने अपनी जानों पर जियादती की, अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद न हो, बेशक ! अल्लाह सब गुनाह बख्श देता है, बेशक ! वोही बख्शने वाला महेरबान है ।"

❁❁❁

अल्लाहुम्मा–सल्लि–वसल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–मुस्तगफिरीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : व–मंय–यअमल–सूअन–अव–यजलिम–नफ्सहू–षुम्मा–यस्तगफिरिल्लाहा–यजिदिल्लाहा–गफूर–रहीमा ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो बख्शिश मांगने वालों (इस्तगफार करने वालों) को खुश खबरी देने वाले हैं जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "और जो कोई बुराई करे या अपनी जान पर जुल्म करे, फिर अल्लाह से बख्शिश चाहे, तो अल्लाह को बख्शने वाला महेरबान पाएगा ।"

❁❁❁

अल्लाहुम्मा–सल्लि–वसल्लिम–अला–सय्यिदिना–मुहम्मदिनिल–बशीरिल–मुबश्शिरि–लिल–मुकर्रबीना–बि–मा–कालल्लाहुल–अजीमु : इन्नल्लजीना–सबकत–लहुम–मिन्नल–हुस्ना–उलाइका–अन्हा–मुब्अदूना । ला–यस्मऊना–हसीसहा–व–हुम–फी–मश्तहत–अन्फुसुहुम–खालिदूना । ला–यहजुनुहुमुल–फजउल–अक्बरु–व–ततलक्काहुमुल–मलाइकु–हाजा–यौमुकुमुल–लजीकुन्तुम–तूअदूना ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो अल्लाह का कुर्ब हासिल करने वालों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि अजमत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "बेशक वोह जिन के लिये हमारा वा'दा भलाई का हो चुका, वोह जहन्नम से दूर रखे गए हैं । "वोह उस की भनक न सुनेंगे

और वोह अपनी मनमानती ख्वाहिशों में हमेशा रहेंगे। उन्हें गम में न डालेगी वोह सब से बडी घबरहाट और फिरिश्ते उन की पेशवाई को आएंगे कि येह है तुम्हारा वोह दिन, जिस का तुम से वा'दा था।"

✪✪✪

अल्लाहुम्मा-सल्लि-वसल्लिम-अला-सय्यिदिना-मुहम्मदिनिल-बशीरिल-मुबश्शिरि-लिल-मुअमिनीना-बि-मा-कालल्लाहुल-अजीमु : "इन्नल-मुस्लिमीना-वल-मुस्लिमाति-वल-मुअमिनीना-वल-मुअमिनाति-वल-कानितीना-वल-कानिताति-वस्सादिकीना-वस्सादिकाति-वस्साबिरीना-वस्साबिराति-वल-खाशिइना-वल-खाशिआति-वल-मुतसद्दिकीना-वल-मुतसद्दिकाति-वस्साइमीना-वस्साइमाति-वल-हाफिजीना-फुरूजहुम-वल-हाफिजाति-वज्जाकिरीनल्लाहा-कषीरंन-वज्जाकिराति-अअद्दल्लाहु-लहुम-मगफिरतंन-व-अजरन-अजीमन ० व-अल्लयसा-लिल-इन्सानि-इल्ला-मा-सआ-व-अन्ना-सअयहु-सवफा-युरा ० षुम्मा-युजजाहुल-जजाअल-अवफा-व-अन्ना-इला-रब्बिकल-मुन्तहा ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, जो मोमिनों को खुश खबरी देने वाले हैं, जैसा कि इज्जत वाले अल्लाह का इर्शाद है कि : "बेशक! मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और ईमान वाले और ईमान वालियां और फरमां बरदार और फरमां बरदारियां और सच्चे और सच्चियां और सब्र वाले और सब्र वालियां और आजिजी करने वाले और आजिजी करने वालियां और खैरात करने वाले और खैरात करने वालियां और रोजे वाले और रोजे वालियां और अपनी पारसाई (शर्मगाह) की हिफाजत करने वाले और हिफाजत करने वालियां और अल्लाह को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां, उन सब के लिये अल्लाह ने बख्शिश और बडा सवाब तय्यार रखा है। और येह कि आदमी न पाएगा, मगर अपनी कोशिश और येह कि उस की कोशिश अन्करीब

देखी जाएगी, फिर उस का भरपूर बदला दिया जाएगा और येह कि बेशक ! तुम्हारे रब ही की तरफ इन्तिहा है।"

❁❁❁

अल्लाहुम्मा-सल्लि-अलैहि-सलातन-तुशरिहु-बिहस-सुदूरु-व-तहूनु-बिहल-उमूरु-व-तन्कशिफु-बिहस-सुतूरु-व-सल्लिम-तस्लीमन-कषीरन-दाइमन-इला-यवमिद-दीनि ० दअवाहुम-फीहा-सुब्हानकल्लाहुम्मा-व-तहय्यतुहुम-फीहा-सलामुन-व-आखिरु-दअवाहुम-अनिल-हम्दु-लिल्लाहि-रब्बिल आलमीना ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! तेरे महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ऐसा दुरूद भेज, जिस से सीने कुशादा हो जाएं और जिस से काम आसान हो जाए और जिस से पोशीदा बातें खुल जाएं और कियामत तक हमेशा कसरत से खूब सलाम भेज। "उन की दुआ उस में येह होगी कि अल्लाह तुझे पाकी है और उन के मिलते वक्त खुशी का पहला बोल सलाम है और उन की दुआ का खातिमा येह है कि सब खूबियां अल्लाह के लिये हैं, जो रब है सारे जहान का।"

नमाज के दरमियान पढी जाने वाली मख्सूस दुआएं

षना : सुब्हा-न-कल्लाहुम-म वबि-हम्दि-क-व-तबा-र-कस्मु-क-व तआला जद-दु-क-वला इला-ह गैरुक।

तअव्वुज : अऊजु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम।

तस्मिया : बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

रुकूअ की तस्बीह : सुब्हान रब्बियल अजीम

कौमा की तस्बीह : समिअल्लाहु लिमन हमिदह
रब्बना लकल हम्द

सजदे की तस्बीह : सुब्हान रब्बियल आ'ला

तशह्हुद : अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्स-लवातु वत्तय्यिबातु अस्लामु अलै-क अय्युहन नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व ब-र-कातुहू अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस सालिहीन अश्हदु अल लाइलाह-इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न-मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह।

दुरूदे इब्राहीम : अल्लाहुम-म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा सल्लय-त अला सय्यिदिना इब्राहीम व अला आलि सय्यिदिना इब्राहीम इन्न-क हमीदुम मजीद अल्लाहुम-म बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा बारक-त अला सय्यिदिना इब्राहीम व अला आलि सय्यिदिना इब्राहीम इन्न-क हमीदुम मजीद।

दुआए मासूरह : अल्लाहुम-मग्फिर ली व-लिवालिदय्य वलिमन तवा-ल-द वलिजमीइल मुअमिनी-न वल -मुअमिनाति वल-मुस्लिमीन-वल मुस्लिमाति-अल अहयाई मिन्हुम वल अम्वाति इन्न-क मुजीबुद्दा'वाति बिरहमति-क या अर्हमर्राहिमीन।

दुआए कुनूत : अल्लाहुम्म इन्ना नस्तइनु-क व नस्तगफिरु-क-व-नुअमिनु बि-क व न तवक्कलु अलै-क व-नुस्नी अलैकल खैर व नश्कुरू-क वला नक्फूरु-क व-नख्लऊ व नतरुकू मंयफजुरूक अल्लाहुम्म इय्या-क नअबुदु व ल-क-नुसल्ली व-नस्जुदू व-इलै-क नस्आ व नहफिदु व-नरजु रहमत-क व-नख्शा अजाब-क इन्न अजाब-क बिल कुफ्फारि-मुल्हिक।

बडी रातों की मख्सूस दुआएं

मुहर्रम की पहली रात की दुआ :- अल्लाहुम्मा अन्तल अबदियुल कदीमु व हाजिही सनतुन जदीदतुन। अस्अलुक फीहा इस्मत मिन शैयतानि व औलियाइही वल औन अला हाजिहीन्नफ्सिल अम्मारति बिस्सई वल इस्तिगाल बिमा युकर्रिबनी इलयका या करीमु।

फजाइल :- जो मुसलमान येह दुआ मुहर्रम की पहली रात को एक बार पढेगा वोह पूरा साल शैतान से महफूज रहेगा। और दो फिरिश्तें पूरा साल उस की हिफाजत करें।

शबे बराअत की खास दुआ :- अऊजु बिअफविका मिन इकाबिका व अऊजु बिरिजाक मिन सख्तिका व अऊजू बिका मिन्क जल्ल वजहुका ला उहसी षनाअन अलैका अन्त कमा अषनैयत अला नफ्सिका अगफिर वज्ही फित्तशबि लि सय्यिदी व हक्क लहू अंय युसजद।

फजीलत :- इस दुआ को हुजूर रहमते आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शबे बराअत में सरे अन्वर को सजदे में रख कर पढते थे।

दूसरी दुआ :- इस दुआ को शबे बराअत में ज्यादा से ज्यादा पढा जाए बेशुमार सवाब पाओगे।

दुआ :- अल्लाहुम्मर्रजुकनी कल्बन तकिय्यन मिन शर्रि नकिय्यन ला जाफियन वल शकिय्यन।

शबे कद्र में पढी जाने वाली खास दुआ

अल्लाहुम्म इन्नक अफुव्वुन तुहिब्बुल अफ्व फ अफु अन्नी।

कुरबानी का तरीका और दुआ

जानवर को किब्ला रुख बाईं जानिब लिटा कर उस के शाने पर अपना दाहिना पैर रख कर येह दुआ पढे।

इन्नी वज्हतु वजहिय लिल्लजी फतरस्समावाति वल अर्द हनीफंव वमा अना मिनल मुश्रिकीन, इन्न सलाती व नुसुकी व महयाय व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आलमीन ला शरीक लहू वबिजालिक उमिरतु व अना मिनल मुस्लिमीन अल्लाहुम्म लक वमिन्क बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर।

येह दुआ पढ कर तेज छुरी से जल्द जब्ह करें।

अगर अपनी कुरबानी का जानवर खुद जब्ह करें तो जब्ह के बा'द येह दुआ पढे।

अल्लाहुम्म तकब्बल मिन्नी कमा तकब्बलत मिन खलीलिक इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام व हबीबिक मुहम्मदिन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

अगर कुरबानी दूसरे के नाम की हो तो मिन्नी की जगह मिन......... फुलां.......कुरबानी वालों के नाम लें।

अकीके की दुआ

अल्लाहुम्म हाजिही अकीकतु फुलां.....इब्ने फुला....(यहां नाम ले जिस का अकीका हो उन का) दमुहा बिदमिही व लहमुहा बिलह-मिही व शह-मुहा बि-शह-मिही व-अ-जमुहा बि अजमिही वजिल्दुहा बिजल्दिही व शअरुहा बिशअरिही अल्लाहुम्म जअलहा फिदाअन लि....फुलां इब्ने फुलां.....मिन्नारि व तकब्बल मिन्हू कमा तकब्बल तहा मिन नबिय्यिकल मुस्तफा व हबीबिकल मुज्तबा अलैहित्तहयतु वष्नना इन्न सलाती व नुसुकी व महयाय व ममाति लिल्लाहि रब्बिल आलमीन ला शरीक लहू व-बिजालिक उमिरतु व अना मिनल मुस्लिमीन अल्लाहुम्म लक व मिन्क बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर

✿✿✿

नमाजे जनाजा की दुआएं

षना : सुब्हान-क अल्लाहुम्म व-बिहम्दिक व-तबारकस्मु-क व तआला जद्दु का वजल्ल षनाउक वलाइलाह गैरुक।

दुआए मगफिरत :- अल्लाहुम्मगफिर लि हय्यिन व मय्यितिना व शाहिदिना व गाइबिना व सगीरिना व कबीरिना व-ज-क-रिना व उन्षाना अल्लाहुम्मा मन अहय्ययतहु मिन्ना फ अहयिही अलल इस्लाम वमन तवफ्फयतहु मिन्ना फतवफ्फहू अलल ईमान।

नाबालिग लडके की दुआ :- अल्लाहुम्मज अलहू लना फरतंव वज अलहू लना अजरंव व जुख्रव वज अलहू लना शाफिअतंव व मुशफ्फआ।

नाबालिग लडकी की दुआ :- अल्लाहुम्मज अल्हा लना फरतंव वज अल्हा लना अजरंव व जुख्रंव वजअल्हा लना शाफिअतंव व मुशफ्फअतन।

कब्र में मिट्टी डालते वक्त की दुआ :-

पहली बार :- मिन्हा ख-लकना कुम।

दूसरी बार :- व-फीहा नुईदु कुम।

तीसरी बार : व-मिन्हा नुखरिजुकुम तारतन उखरा।

✿✿✿

મિશન કા મકસદ કૌમ કી ખિદમત

અમ્નો મહબ્બત કી છાંવ મેં, ખિદમત સુબ્હો શામ કરેં,
આઓ ! હમ સબ મિલઝુલ કર , પૈગામે નબી કો આમ કરેં.

Mohsin-e-Azam Mission

-: મિલને કા પતા :-

મક્તબએ શૈખુલ ઈસ્લામ, અલિફ કિરાના કે સામને,
રસૂલાબાદ, શાહે આલમ અહમદાબાદ-380028
ઔર મોહસિને આઝમ મિશન કી તમામ બ્રાન્ચેં
કોન્ટેકટ : 96 24 22 12 12